भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 14-15 | **जून-दिसम्बर** 2013, **जनवरी-फरवरी** 2014 | **अंक** 6-12, 1-2

शनिवार, 15 फरवरी से
रविवार, 23 फरवरी 2014
(प्रतिदिन प्रातः 11 से रात्रि 8 बजे तक)

22 वाँ, नई दिल्ली

विश्व पुस्तक मेला

प्रगति मैदान, नई दिल्ली

में

विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी

विविध विषयान्तर्गत अपने नवीनतम एवं विशिष्ट प्रकाशनों के साथ उपस्थित हो रहा है।

पुस्तकों के इस महाकुम्भ में हमारे स्टॉल पर आप सादर आमंत्रित हैं।

जहाँ सामान्य पाठकों, छात्रों, अध्येताओं, शोधार्थियों, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं, स्कूल-कॉलेज, विश्वविद्यालय, सार्वजनिक पुस्तकालयों एवं सरकारी/गैर सरकारी संस्थाओं आदि के सम्पूर्ण पुस्तकीय समाधान हेतु महत्वपूर्ण पुस्तकों के साथ *हम आपकी सेवा में प्रस्तुत हैं।*

इस ज्ञान यज्ञरूपी मेले में आपका स्वागत है। अपनी आवश्यकता, अपने सुझावों से अवगत कराईये ताकि हम आपकी आशाओं के अनुरूप साहित्य प्रस्तुत कर सकें।

फूल लाया हूँ कमल के...

नये साल की नई सुबह कवि-शब्दों का काव्यार्थ तलाशते कमल-पोखर के किनारे नया सूरज निकलता है और उस ज्योतिष्मान को मन-ही-मन अर्घ्य प्रदान करते हुए प्रणति-मुद्रा में नत-शिर हो जाते हैं चिर-संचित संस्कार।

दूसरी ओर झुण्ड-के-झुण्ड आकाश में उड़ते पंछियों का सामगान गूँजता है, दुही जाती गायों के रँभाने का वत्सल-स्वर और खेतों की ओर बढ़ते बैलों के गले की घंटियों की रुन-झुन में परुष-हुंकार की ध्वनियाँ स्वस्ति-वाचन करती हैं और घर-घर के आँगन में अल्पना रचती है प्रकृति।

ग्रामीण-नागर जीवन के ये सहज संवेदनपरक बिम्ब टूटने लगे हैं या जबरन तोड़े जा रहे हैं, कारखानों की चिमनियों से धुँआ उठ रहा है, संस्कारों में विकार आ गये हैं। अपनी आज़ादी के संघर्ष के बीच हमने जिस 'रोटी और कमल' के प्रतीक की साधना की थी, देश का दारिद्र्य दूर करने और विकास एवं समृद्धि के नये मानक गढ़ने का जो संकल्प लिया था लगता है उसे हम भूल गये हैं और भटक गये हैं पूँजीवादी साम्राज्य-तंत्र की भूल-भुलैया में।

चूँकि आज तक हमारी चुनी हुई सरकारें और संसद कई मामलों में नीति-निर्धारण नहीं कर सकी हैं इसीलिये न तो संसाधनों का सम्यक् विनियोजन हो पाता है न ही विकास-परक लाभ सभी वर्गों तक पहुँच पाता है। यद्यपि पिछले दशक में कुछेक राज्य-सरकारों ने इस दिशा में ठोस-पहल की है और वंचित-वर्ग भी लाभान्वित हो रहे हैं। जरूरत है कि हम मूलभूत ढाँचों में शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा के मानकों को मजबूत कर सकें। हर स्तर पर यूरोप की नकल करने के बजाय उनके आविष्कारों का विवेकपूर्ण प्रयोग करें और अपनी जरूरतों के अनुसार खुद भी नवीन आविष्कार करें। पिछले दशक में हमारे देश के विभिन्न क्षेत्रों में अध्ययनरत होनहार छात्रों ने अपनी सीमा में विभिन्न उत्पादों के आविष्कार किये किन्तु निवेश-गत प्रोत्साहन के बगैर केवल पुरस्कार-सम्मान-पदक देकर उन्हें भुला दिया गया। दूसरी ओर हमारे आयुध-कारखाने भी सक्षम हैं जो अपनी आवश्यकता के अनुरूप अस्त्रों का निर्माण, विकास करते हैं। रक्षा-मंत्रालय के अन्तर्गत चलने वाला यह कारखाना भी नौकरशाही के शिकंजे में है परिणामतः हम बड़े परिमाण पर अस्त्रों का आयात करते हैं। बार-बार मौद्रिक-संकट से निजात दिलाने वाले कृषि-क्षेत्र को लेकर भी हमारी नीतियाँ साफ नहीं हैं। इसीलिए आढ़तिये-बिचौलिये चाँदी काटते हैं और हमेशा से संकट-ग्रस्त सामान्य किसान आत्महत्या करते हैं। पूरे देश में शिक्षकों के 8 लाख पद रिक्त हैं। इसके लिए समग्र योग्यता-धारक शिक्षित समूह भी हैं किन्तु नियुक्ति को लेकर लालफीताशाही की पेशबंदी ज्यों की त्यों है। अपने भण्डार होने के बावजूद 'गैस-तेल' जैसे आवश्यक उत्पादों के लिये हमारे प्लाण्ट विकसित न हो

शेष पृष्ठ 2 पर

सके और हम आयात पर निर्भर हैं। यह फेहरिस्त लम्बी होती चली जायेगी जब तक कि हमारी संसद सुचिन्तित तरीके से हर क्षेत्र में सृजन, निर्माण और विनियोजन हेतु राष्ट्रीय नीतियों का निर्धारण नहीं करती। नीतियाँ बनने के बाद उन्हें वैधानिक-प्रतिष्ठा भी देनी होगी अन्यथा हर पाँच साल में बदलने वाली सरकारें अपनी सुविधा से स्थापित नीतियों में बदलाव करती रहेंगी।

इस समय हमारे सामने शिक्षित बेरोजगार नौजवानों का विशाल समूह है जो सम्यक् दिशा-निर्देश के बिना हताश-मानसिकता-जन्य अराजकता का शिकार हो रहा है। इस समूचे वर्ग में उद्दीप्त-ऊर्जा को विभिन्न क्षेत्रों में विनियोजित किये जाने की जरूरत है तभी विकास और समृद्धि का संकल्प सिद्ध होगा अन्यथा आम आदमी का संघर्षमय जीवन दुरूह, दूभर होता जायेगा।

हमने आरम्भ में अपने स्वातंत्र्य-संघर्ष और उसके प्रतीक का ज़िक्र किया था जिसकी साधना करते हुए हमारी सामूहिक-चेतना का ऊर्ध्वगमन देवत्व की ओर अग्रसर हो चला था जिसका साक्ष्य है सभी भारतीय-भाषाओं में लिखा गया तत्कालीन साहित्य। आज स्थितियाँ विपरीत हैं, युग-चेतना ही अर्थ-तंत्र द्वारा अनुशासित की जा रही है। अर्थ-लुब्ध चेतना के लक्ष्य छोटे होते हैं, स्वार्थ ही उसकी सीमा होती है और इस लघु-आयामी चेतना का अधोगमन हिंस्र-पाशविकता की ओर ले जाता है। जैसे भी बने सभी सामाजिक-संस्थानों को मिलजुल कर इस प्रवृत्ति को रोकना होगा और ऐसे आधार प्रतिमान प्रस्तुत करने होंगे जो मनुष्य की चेतना को उसका प्राकृत-स्वरूप प्रदान कर सकें।

कमल-पोखर के किनारे खड़ा कवि वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों को अपनी सांस्कृतिक-विरासत सौंपने को आतुर है—

फूल लाया हूँ कमल के
क्या करूँ इनका?
पसारें आप आँचल
छोड़ दूँ/हो जाय जी हलका!

पुनश्चः : *कमल के फूल अर्पित करते हुए 'वाङ्मय' अपनी आठ-महीनों की अनुपस्थिति भी दर्ज़ करना चाहता है। समय-गर्भ के एक निश्चित अन्तराल से निकलकर वह पुनः आपको पुकार लेगा इसी विश्वास के साथ....!*

और इसके साथ ही 'वाङ्मय' के बहाने आपको पुकार रहा है शब्दार्थ का नया संसार **'विश्व-पुस्तक-मेला'**। **15 फरवरी से 23 फरवरी 2014** तक **नई दिल्ली** के **प्रगति मैदान** में एकत्र होंगे दुनिया-भर के प्रकाशक, वितरक और लेखक। इस बार मेले की थीम है 'बाल-साहित्य'। तकनीक के प्रति शिशु-किशोर वर्ग की अभिरुचि को देखते हुए 'ई-बुक्स' एवं 'ई-ज़ोन' को मेले में विशेष तौर पर आकर्षण का केन्द्र बनाया गया है। बाल-साहित्य का लेखन विश्व की सभी भाषाओं में हो रहा है जिनमें से अधिकांश के लेखक भी मेले में भागीदारी करेंगे। इसी क्रम में इस बार अतिथि-देश के रूप में आमंत्रित देश है पोलैण्ड! आइए, चलें दिल्ली, हम भी विचरण करें अपने बचपन के साथ....!

सर्वेक्षण

● **लिखत सुधाकर लिखि गा राहू! :** देश के कर्णधार जनता को सत्ता की धमक के अन्तर्गत एक दशक से रंग-बिरंगे सपने दिखाने में मशगूल रहे हैं। जिस तरह प्रथम पंचवर्षीय योजना में उन्मुक्त उदारीकरण किया गया, जी-डी-पी और सेंसेक्स उछाल भरते नज़र आये, समानांतर महँगाई बढ़ती रही, मूलभूत सुविधाओं के अभाव में जीवन कठिन होता रहा फिर भी हमारे महान देश की महान जनता ने उन्हें दुबारा चुन लिया, पाँच साल और दिये क्योंकि लोक-लुभावन सपनों की चमक कायम थी। दूसरी बार सत्ता प्राप्त करने के कुछ दिनों बाद केन्द्र के शीर्ष-पुरुष ने जनता से वादा किया कि 'महँगाई सौ-दिनों में दूर हो जायेगी।' लेकिन अर्थशास्त्री का अर्थशास्त्र सिर्फ कोरा सिद्धान्त साबित हुआ, महँगाई सचमुच डायन बन गयी। एक-एक करके सपने टूटने लगे। टू-जी-स्पेक्ट्रम के बाद खेल, रेल, कोयला आदि के घोटाले और भ्रष्टाचार के प्रकरण देश और दुनिया की सुर्खियां बनते रहे और विश्व-बाज़ार में भारतीय-मुद्रा की साख गिरती रही।

दूसरी ओर पड़ोसी पाकिस्तान में पहली बार लोकतांत्रिक सत्ता परिवर्तन हुआ। परस्पर-सम्बन्ध सुधारने की वज़ीरे आजम की सदिच्छा के बावजूद फौजी-उन्माद से ग्रस्त सेना द्वारा हमारे सैनिकों के सिर कलम किये गये, आतंकवादियों को प्रवेश कराने हेतु लगातार हमले किये जाते रहे किन्तु हमारी प्रतिक्रिया ठण्डी रही। हमारी इसी कमज़ोरी का लाभ लेते हुए पड़ोसी चीन भी बार-बार सीमा का उल्लंघन करता है और अब तो तथाकथित खैर-ख़्वाह अमेरिका भी हमारी स्वायत्तता को चुनौती दे रहा है।

हमारे ही चुने हुए क्लीव-शासनतंत्र के दुराचारों से क्रुद्ध हो उठी है प्रकृति। बादल फट रहे हैं, भू-स्खलन हो रहे हैं, मलबे के ढेर में तब्दील हो रहे हैं हज़ारों-लाखों लोग, देवतात्मा का कोप बरस रहा है हम पर लेकिन हमारी आँखें यथार्थ नहीं देख रहीं। एक सपना टूटने पर हम दूसरा सपना गढ़ने लगते हैं। इस मनोवृत्ति से निजात पाना होगा और सम्यक् परीक्षण द्वारा समस्याओं का समाधान करना होगा। वरना—

न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दोस्ताँ वालों,
तुम्हारी दास्तान भी न होगी दास्तानों में!

—परागकुमार मोदी

[प्रथम बार भोजपुरी भाषा में प्रस्तुत]

भोजपुरी साहित्य के इतिहास

डॉ० अर्जुन तिवारी

आकार डिमाई | *पृष्ठ* 524

सजिल्द : 978-93-5146-033-6 • रु.1000.00
अजिल्द : 978-93-5146-034-3 • रु. 500.00

भोजपुरी का इतिहास हिन्दी से पुराना है। हिन्दी का आदिकाल 993 ईसवी है जबकि भोजपुरी का उद्‌भव 700 ईसवी में हुआ। प्रख्यात लेखक डॉ० अर्जुन तिवारी की नई कृति 'भोजपुरी साहित्य के इतिहास' में इस तथ्य को तर्कों से सिद्ध किया गया है। पुस्तक में भोजपुरी के प्रवर्तन में सिद्ध सन्त, नाथ पंथियों और तत्कालीन काव्य सामग्रियों के योगदान का उल्लेख किया गया है। इसके साथ ही भोजपुरी के माध्यम से ललकार, गोहार और जागरण की शुरुआत का भी जिक्र किया गया है। प्रथम स्वाधीनता संग्राम के दौरान भी भोजपुरी साहित्य और पूर्वांचल के लोगों के योगदान की चर्चा इस पुस्तक में की गई है।

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

प्रवर्तन (सिद्ध आ नाथ) काल

(700 ई० – 1100 ई०)

हिन्दी साहित्य के आदिकाल 993 ई० से शुरू होला बाकिर भोजपुरी के शुरुआत 700 ई० से हो जाला। लोक के कंठ में विराजल भोजपुरी श्रुति-स्मृति अइसन एहू से पहिले रहे। लिखत पढ़त रूप में अपना भाषा के सातवीं शताब्दी से मानल उत्तम होई। सिद्ध सन्त प्राकृत भाषा छोड़के देशी भाषा के अपनवले आ एही से भोजपुरी के आपन रूप गढ़ाए लागल। प्राचीन साहित्यिक भाषा के पीछे ना पड़के सिद्ध लोग देशी भाषा के गले लगवले काहे कि ओह लोग के जनता तक आपन विचार फइलावे के रहे। एही से अपने आप भोजपुरी सुगबुगाए लागल।

भोजपुरी के रूप निर्धारण में सिद्ध लोग आ उनकर साहित्य के बड़ा हाथ बा। जड़ता, जवन पाखण्ड के उद्‌वेग आम जनता में रहे जेकर खुलासा सिद्ध साहित्य में भइल बा।

हिन्दी के रहस्यवाद के मूल में सिद्ध साहित्य बा। 'चर्या गीत' तऽ भोजपुरी के सुन्दर स्वरूप के उदाहरण बा। हर धार्मिक उत्सव पर सिद्ध सन्त समाज के लोग के जगावे आ सुधारे खातिर लोक बोली में गीत-गवनी सुनवले जेसे जन-जन के बोली भोजपुरी आ ओकर साहित्य के रूप निश्चित भइल। एही से एह काल खण्ड के 'प्रवर्तन काल' कहल सार्थक होई काहे कि भोजपुरी के आरम्भ आ ओकर रूप-निर्धारण में सिद्ध सन्त नाथ पंथ के प्रभावकारी भूमिका बा।

राजनीतिक स्थिति

सम्राट हर्षवर्धन के समय में सिन्ध प्रान्त पर अरब के हमला भइल जवना से आपन भारत के संगठित सत्ता में बिखराव आरम्भ हो गइल। राजपूत राजा मार-पीट युद्ध में झोंका गइले आ आगे चलके इस्लाम साम्राज्य के स्थापना हो गइल। ईसा के आठवीं शताब्दी से 15वीं शताब्दी के भारतीय इतिहास में हिन्दू सत्ता के क्षय भइल आ इस्लाम सत्ता के उदय हो गइल। संघर्ष आ लड़ाई से प्रभावित जन-जीवन में अशांति आ गइल। विदेशी आक्रान्ता देशी युद्धकामी राजा पृथ्वीराज चौहान, जयचन्द के आपसी लड़ाई के असर हिन्दी क्षेत्र पर पड़ल।

ईसा के छठवीं शताब्दी तक भारत के धार्मिक वातावरण शान्त रहे लेकिन सातवीं शताब्दी के साथ धरम-करम में बदलाव बिखराव आवे लागल। बौद्ध धरम के पतन शुरू हो गइल। शैव आ जैन मत आपस में टकरा गइल। इस्लाम के महत्त्व बढ़ गइल। बौद्ध सन्यासी यौगिक चमत्कार से जनता के लुभावे लगले। वैदिक, पौराणिक खण्डन-मण्डन के भूल-भूलैया में मस्त रहले।

धार्मिक स्थिति

ईस्वी सन् आठवीं शती में बंगाल आ बिहार पर पाल राजवंश के राज रहे। ई पालवंशी राजा लोग बौद्ध धर्म के संरक्षण दिहल आ इहे लोग बौद्ध विश्वविद्यालय नालन्दा आ विक्रमशिला के स्थापना कइल। दक्षिण में चलेवाला वज्रयान के एहिजा शरण मिलल आ ई वज्रयान आपन तन्त्र आ मन्त्रवाद के साथ आपन सिद्धान्त के प्रचारो करे लागल। पाल शासक धर्मपाल के समय में सिद्ध सन्त आ कवि सरहपा भइले।

ईसा के आठवीं शताब्दी में शंकराचार्य आ कुमारिलभट्ट के तर्क के आगे बौद्ध पण्डित हतप्रभ हो गइले। बौद्ध मठ अनाचार के केन्द्र बनि गइल। मन्त्रयान में षोड्ष कुमारी-साधना, वामाचार, चक्रपूजन, अलौकिक सिद्धि प्राप्त करेके कामना, सक्रिय कर्म के अभाव आदि के कारण जनता के आस्था बौद्ध धर्म से हटे लागल। ऊ तिब्बत, नेपाल शरणागत भइल। बौद्ध धर्म के लोक-कल्याणकारी रूप कहीं बिला गइल आ ई धर्म डाकिनी, शाकिनी, तन्त्र-मन्त्र आदि में अझुरा गइल।

भोजपुरी केतना पुरान ?

भाषा के जनम पहिले होला, साहित्य-रचना बाद में होला। भोजपुरी-साहित्य के इतिहासकार सिद्धन के भाषा आ गोरखनाथ के बानी में भोजपुरी के मूल रूप के दर्शन कइले बाड़े। कुछ विद्वान 'दोहाकोश' आ 'चर्यागीत' के भाषा के बंगला के पूर्व-रूप मनले बाकिर राहुल जी ओह भाषा के पुरानी हिन्दी अथवा मगही कहले बानी।....

'अथातो भोजपुरी भाषा', 'इतिहास का हऽ', 'काल-विभाजन', 'सिद्ध आ नाथ काल', 'लोकगाथा', 'संत समागम', 'नवजागरन', 'प्रसार', 'संविधान आ भोजपुरी' जइसन नौ अध्याय वाला 'भोजपुरी साहित्य के इतिहास' लिखके भाई अर्जुन अपना के बेजोड़ इतिहासकार सिद्ध कर देहलें। इनके 'भोजपुरी के रामचन्द्र शुक्ल' कहला, लिखला में हमरा सात्त्विक आनन्द मिलता। संविधान के आठवीं अनुसूची खातिर तरसत भोजपुरी भाषा के अभियान गलचर्चने भर ना रही, एह ग्रन्थ के प्रेरक पृष्ठन के चलते इ सशक्त जोरदार प्रभावी आन्दोलन बन जाई। **—अरुणेश नीरन**
अन्तर्राष्ट्रीय महासचिव, विश्व भोजपुरी सम्मेलन

अब ले छिट-पुट गुटकानुमा भोजपुरी साहित्य के इतिहास पर कई गो किताब मिलेला। जवना के सितुही में साहित्य सागर के अँटावे के चेष्टा कहल जाला एह में मनमाना ढंग से चारण, पँवारा, अध्ययन काल जइसन नामकरण मिलेला। पहिला बेर सुविचारित, सन्तुलित वैज्ञानिक ढंग पर लिखित आ नयनाभिराम मुद्रित 'भोजपुरी साहित्य के इतिहास' पर हम आनन्द विभोर बानीं आ लेखक-प्रकाशक के बधाई दे रहल बानीं। भोजपुरी माटी, मानुष के लोक-उद्‌गार, अपूर्व सृजन क्षमता, संत समागम के विशिष्ट रूप, राष्ट्र-भक्ति खातिर सर्वस्व बलिदान, कुँवर सिंह, फतेह बहादुर शाही, मंगल पाण्डेय, चित्तू पाण्डेय के कारनामा के प्रवर्तन, प्रबोधन, नवजागरन, प्रसार काल-खण्ड में बाँट के अनुपम दस्तावेज प्रस्तुत करे वाला डॉ० अर्जुन तिवारी के सूझ-बूझ आ निष्ठा अनुकरणीय बा। इनकर प्रतिभा आ सम्पुष्ट इतिहास लेखन के प्रतिबद्धता के चलते ई किताब बार-बार उद्‌धृत करे वाला 'सन्दर्भ-ग्रन्थ' बन गइल बा।
—केदारनाथ पाण्डेय, सदस्य बिहार विधान परिषद

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

अत्र-तत्र-सर्वत्र

आने वाला पढ़ाई का नया दौर टेलीविजन से

एक साथ 50 शैक्षिक चैनल! वह भी चौबीसों घंटे चलने वाले! उसमें भी एक-एक चैनल किसी खास तरह की पढ़ाई के लिए समर्पित। रिकॉर्डेड ही नहीं, बल्कि आइआइटी, आइआइएम व कई विश्वविद्यालयों में चल रही कक्षाओं का 150 स्टूडियो से 'लाइव टेलीकास्ट'! पहली मई से धुआंधार तरीके से एक साथ शैक्षिक 50 चैनलों की यह बड़ी शुरुआत देश में टेलीविजन पर पढ़ाई की नई इबारत लिख सकता है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने राष्ट्रीय शिक्षा सूचना संचार प्रौद्योगिकी मिशन के द्वारा इस पहल को वास्तविकता में बदलने की पूरी योजना तैयार कर ली है। मंत्रालय के अनुसार इन चैनलों पर प्रतिदिन आठ घंटे विभिन्न उच्च शिक्षण संस्थानों की कक्षाओं का सीधा प्रसारण होगा। उसके बाद के घंटों में रिकार्डेड टेलीकास्ट होता रहेगा। टेलीविजन पर पढ़ाई के दौरान छात्रों को एस०एम०एस०, फोन-इन या ई-मेल के द्वारा प्रश्न पूछने की सुविधा भी होगी। पढ़ाई के शेड्यूल पहले से तय होंगे, ऐसे में छात्र पहले भी अपना प्रश्न पूछ सकेंगे। एक ऐसा सॉफ्टवेयर होगा जो एक तरह के प्रश्नों को एक साथ कर देगा। फिर उनके उत्तर एक साथ जारी कर दिए जाएँगे। खास बात यह है कि ऐसे सारे लेक्चर, सवाल व उनके जवाब आर्काइव (रिकार्ड) में मौजूद रहेंगे।

इस तरह की पढ़ाई को प्रभावी बनाने के लिए मंत्रालय देशभर में इच्छुक उच्च शिक्षण संस्थानों से मिलकर 150 अपने स्टूडियो खोलेगा। जिसका मुख्य केन्द्र (हब) मानव संसाधन विकास मंत्रालय में होगा।

पुस्तक प्रकाशन और कॅरियर

एक ओर जहां प्रकाशकों को पुस्तक विक्रय करने में पिछले काफी दिनों से दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है, वहीं दूसरी ओर सरकार पुस्तक प्रकाशन को और प्रोत्साहन देने की बात कर रही है। इसी कड़ी में दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री ने पिछले दिनों पुस्तक प्रकाशन में पी जी डिप्लोमा की शुरुआत की है। डॉ० अंबेडकर यूनिवर्सिटी दिल्ली ने राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के सहयोग से यह कार्यक्रम शुरू किया है, जिसका उद्घाटन शीला दीक्षित ने पिछले दिनों किया था।

उधर, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय ने पुस्तक प्रकाशन में एक वर्षीय पी जी डिप्लोमा प्रारम्भ किया है जो विद्यार्थियों को विशेष संपादन, कॉपी संपादन और ऑनलाइन प्रूफ पठन, वितरण एवं प्रकाशन के विभिन्न क्षेत्रों में विपणन दक्षता प्रदान करेगा। यह कार्यक्रम इच्छुक व्यक्तियों के लिए प्रकाशन व्यवसाय में स्वरोजगार अपनाने के अवसर प्रदान करेगा। प्रकाशन क्षेत्र से जुड़े व्यवसायियों के लिए भी प्रकाशन के विभिन्न पहलुओं में दक्षता उन्नयन एवं दक्षता अधिग्रहण करने में इसकी उपयोगिता सिद्ध होगी। इग्नू की क्षेत्रीय निदेशक डॉ० मनोरमा सिंह ने बताया कि पुस्तक प्रकाशन के क्षेत्र में अनेक परिवर्तन आए हैं और वर्तमान में कोई भी इस प्रकार का पाठ्यक्रम उपलब्ध नहीं है, जो विद्यार्थियों एवं व्यवसायियों को इस क्षेत्र में प्रशिक्षण प्रदान करे।

लेखकों की धरती

आइसलैंड की आबादी तीन लाख से थोड़ी ज्यादा है लेकिन यहाँ दुनिया में सबसे ज्यादा लेखक हैं, सबसे ज्यादा किताबें छपती हैं और किताब पढ़ने की प्रति व्यक्ति दर भी सबसे ज्यादा है, राजधानी में आपको हर तरफ लेखक मिलेंगे। आइसलैंडिक भाषा में एक कहावत है जिसका मतलब है कि हर किसी के पेट में एक किताब होती है या फिर हर कोई एक किताब को जन्म देता है।

यहाँ लेखकों की कद्र होती है, ये अच्छा जीवन बिताते हैं, कुछ को तो तनख्वाह भी मिलती है, लेखक आधुनिक गाथाएँ, कविताएँ, बच्चों की किताबें, साहित्यिक और उत्तेजक किताबें सब कुछ लिखते हैं। लेकिन सबसे ज्यादा तेजी अपराध से जुड़ी किताबों में हुई है। यहाँ किताबों और लेखकों की इस असाधारण संख्या की वजह क्या है? इसकी वजह है बढ़िया लेखक जो अनोखे किरदारों वाली दिलचस्प कहानियाँ सुनाते हैं, साथ ही आइसलैंड की प्राकृतिक सुन्दरता, उसके ज्वालामुखी, परी कथाओं जैसी झीलें, ये सब कहानियों के लिए सटीक पृष्ठभूमि हैं, इसलिए शायद हैरानी की बात नहीं है कि संयुक्त राष्ट्र के सांस्कृतिक संगठन यूनेस्को ने रेक्याविक को साहित्य का शहर घोषित किया है।

एक कूजे में उर्दू अदब का समंदर

उर्दू हमारी अपनी जुबान है। कहा जाता रहा है कि आधुनिकता ने उर्दू से हमें दूर कर दिया लेकिन इसी आधुनिकता और तकनीक से उर्दू का साहित्य जन-जन तक पहुँच रहा है 'रेख्ता डॉट ओआरजी' के जरिये।

विगत 11 जनवरी को नोएडा में पॉलीप्लेक्स कारोबारी संजीव सराफ द्वारा शुरू की गई दुनिया की सबसे बड़ी उर्दू अदब व शायरी की वेबसाइट 'रेख्ता डॉट ओआरजी' (rekhta.org) की पहली वर्षगांठ के उत्सव का आयोजन किया गया। इस आयोजन में उर्दू अदब से जुड़ी तमाम शख्सीयतों ने शिरकत की। रेख्ता के संस्थापक संजीव सराफ ने कहा, ''इस वेबसाइट पर 651 उर्दू शायरों की 7000 गजलें और नज्में उपलब्ध हैं, जिन्हें 151 देशों में देखा-पढ़ा जा रहा है। उर्दू शायरी को देवनागरी और रोमन लिपि में भी पेश किया गया है और नई बात यह है कि किसी भी शब्द का अर्थ जानने के लिए सिर्फ उस पर क्लिक करना होगा। जो उर्दू नहीं जानते, वे भी उर्दू अदब का लुत्फ उठा सकते हैं। नई बात यह है कि शायरी और गजल की करीब 1,000 किताबें अपलोड की गई हैं, जिन्हें आसानी से पढ़ा जा सकता है। बड़े शायरों के दीवान, अफसाने, रिसाले आदि तो हैं ही, उर्दू साहित्यकार सआदत हसन मंटो के लिए एक 'मंटो गोशा' भी बनाया गया है। यह वेबसाइट उर्दू शायरी का महासागर है। मीर, गालिब, जौक, मौमिन, आतिश और दाग जैसे क्लासिकल शायरों से लेकर फैज अहमद फैज, साहिर लुधियानवी, अहमद फराज, शहरयार, कैफी आजमी और निदा फाजली जैसे तमाम समकालीन शायरों तक को यहाँ पढ़ा, देखा, सुना जा सकता है।'' संजीव सराफ ने बताया कि हमने इस वेबसाइट को ऐसा बनाया है कि कोई भी शख्स चलते-फिरते भी अपने मोबाइल पर भी एक्सेस कर सके।

स्नोडेन पर आएँगी तीन किताबें

अमेरिकी गोपनीय निगरानी कार्यक्रम 'प्रिज्म' का रहस्योद्घाटन करके दुनियाभर में सनसनी मचाने वाले राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसी (एन०एस०ए०) के पूर्व कांट्रैक्टर एडवर्ड स्नोडेन पर तीन लेखक किताब लिख रहे हैं।

प्रो० पाडिया बीकानेर विवि की कुलपति

वाराणसी। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में समाज विज्ञान संकाय की अध्यक्ष प्रो० चंद्रकला पाडिया को बीकानेर, राजस्थान स्थित महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय का कुलपति बनाया गया है।

कुलपति बने प्रो० मुशाहिद हुसैन

नई दिल्ली। जामिया मिलिया इस्लामिया में भौतिकी विभाग के प्रोफेसर मुशाहिद हुसैन को ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली का कुलपति नियुक्त किया गया है। प्रो० हुसैन वर्तमान में सेंटर फॉर नैनो साइंस एंड नैनो टेक्नोलॉजी के निदेशक पद पर भी कार्यरत हैं।

डॉ० पीयूष रंजन बने पूर्वांचल वि०वि० के नए कुलपति

इलाहाबाद में जन्मे और पले बढ़े डॉ० पीयूष रंजन अग्रवाल को वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर का कुलपति बनाया गया है।

प्रो० राजेन्द्र गोरखपुर विश्वविद्यालय के अंतरिम कुलपति

उत्तर प्रदेश के विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति एवं राज्यपाल बी०एल० जोशी ने प्रो० राजेन्द्र प्रसाद को दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय का अंतरिम कुलपति नियुक्त किया है। प्रो० राजेन्द्र प्रसाद इसी विश्वविद्यालय के वरिष्ठतम् प्रोफेसर हैं।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास और दिल्ली मेट्रो की अनूठी पहल

हर हाल में किताब, हर हाथ में किताब—जी हाँ, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (एनबीटी) ने पुस्तकोन्नयन एवं पुस्तक-पठन आदत को बढ़ावा देने के अपने संकल्प और उद्देश्य के दृष्टिगत अब दिल्ली मेट्रो से भी हाथ मिलाया है। अब अगर मेट्रो रेल में यात्रियों को आप हाथ में किताब लिये पढ़ने में तल्लीन देखें तो यह कोई अचरज भरा दृश्य नहीं होगा।

दरअसल, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास ने पिछले दिनों दिल्ली मेट्रो के साथ इस आशय का समझौता ज्ञापन किया है कि कुछ चुनिंदा महत्त्वपूर्ण मेट्रो स्टेशनों पर चल और सचल पुस्तक विक्रय केन्द्र खुलेंगे।

मार्गो नगर पुस्तकालय के 100 वर्ष

मार्गो नगर पुस्तकालय (मार्गो, गोवा) जिसकी स्थापना सन् 1914 में हुई थी, सन् 2014 में अपने 100 वर्ष पूरे कर लेगा।

इस अवसर पर एमएमसी (मार्गो म्यूनिसिपल काउंसिल) ने इस पुस्तकालय के आधुनिकीकरण की योजना बनाई है। प्रतियोगी परीक्षाओं की पुस्तकों के लिए एक अलग अनुभाग तथा पाठकों के लिए वेबसाईट बनाने की भी योजना है।

यह पुस्तकालय ज्ञान तथा सूचनाओं का एक अमूल्य भण्डार होने के साथ ही गोवा की संस्कृति व इतिहास पर भी अनेक पुस्तकें उपलब्ध कराता है।

विक्टोरिया मेमोरियल पर साहित्य सम्मेलन के आयोजन से पर्यावरणविद चिंतित

आगामी तृतीय कोलकाता साहित्य सम्मेलन 2014 में बुकर पुरस्कार के लिए नामांकित लेखिका झुम्पा लाहिड़ी, उपन्यासकार रस्किन बॉण्ड तथा पूर्व बी०बी०सी० पत्रकार मार्क टुली के भाग लेने की सम्भावना है। परन्तु पर्यावरणविद इससे चिंतित हैं क्योंकि इस बार इस साहित्य सम्मेलन का आयोजन पारम्परिक मिलन मेला ग्राउण्ड में न होकर विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में किया जाएगा। यह साहित्य सम्मेलन जनवरी में होना है।

पर्यावरणविदों के अनुसार इस समारोह में आने वाली विशाल भीड़ से इस स्मारक (विक्टोरिया मेमोरियल हॉल) को नुकसान पहुँच सकता है जो कि चिंता का विषय है।

गालिब की हवेली में रीडिंग रूम चाहते लोग

नई दिल्ली। 27 दिसम्बर, 1797 को आगरा में पैदा हुए मशहूर शायर मिर्जा असदुल्लाह खाँ 'गालिब' की हवेली के एक हिस्से में पुरानी दिल्ली के लोग रीडिंग रूम बनाने की माँग कर रहे हैं। बाजार सीताराम की गली कासिम जान स्थित इस हवेली में गालिब ने जिन्दगी का लम्बा अर्सा गुजारा। हवेली को अब संग्रहालय का रूप दे दिया गया है, जिसमें गालिब व उनकी पत्नी के कपड़े, बर्तन से लेकर अनेक चीजें रखी गई हैं। गालिब का कलाम भी यहाँ देखने को मिलता है। उर्दू-फारसी अदब के अजीम शायर मिर्जा गालिब को प्यार से लोग मिर्जा नौशा के नाम से भी पुकारते थे। उन्होंने दिल्ली में 1857 की क्रान्ति देखी, मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर का पतन देखा, अंग्रेजों का उत्थान और देश की जनता पर उनके जुल्म भी अपनी आँखों से देखे।

दिल्ली में बनेगी बाल अकादमी

एक प्रकाशित समाचार के अनुसार, दिल्ली मंत्रिमंडल ने राजधानी में मौजूदा भाषा अकादमियों की तर्ज पर दिल्ली बाल अकादमी के गठन की मंजूरी दे दी है।

वर्तमान में दिल्ली सरकार ने छह भाषा अकादमियाँ स्थापित की हैं। ये हैं—हिन्दी, उर्दू, पंजाबी, संस्कृत, मैथिली-भोजपुरी और सिंधी अकादमी। इसके अलावा साहित्य कला परिषद् राजधानी में कला और संस्कृति को प्रोत्साहन देने का काम करती है।

झारखंड साहित्य महोत्सव रांची में

एक समाचार के अनुसार, जयपुर, बनारस और आगरा की तरह रांची में बड़े पैमाने पर झारखंड साहित्य महोत्सव का आयोजन मई 2014 में किया जाएगा, जिसमें कला, साहित्य और सिनेमा की हस्तियां भाग लेंगी। इस महोत्सव के जरिए आदिवासी कला और साहित्य को भी बढ़ावा देने का प्रयास किया जाएगा।

भावी प्रबंधक पढेंगे गीता रामायण और उपनिषद

भारतीय संस्कारों व मूल्यों की रक्षा के लिए अभिनव पहल। यह महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी उठाई है काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रबंध शास्त्र संकाय ने। अब प्रबंधन के छात्र गीता, रामायण, वेद, पुराण व उपनिषद का अध्ययन करेंगे, भारतीय जीवन-दर्शन के अनुसार मूल्यों को ग्रहण व आत्मसात करेंगे। दो घंटे की कक्षा अनिवार्य होगी और उपस्थिति परीक्षा में जोड़ी जाएगी।

अमेरिका में साढ़े छह लाख बोलते हैं हिन्दी

अमेरिका में भी हिन्दी बोलने वालों की तादाद लाखों में है। भाषा को लेकर जारी एक रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका में करीब 6.5 लाख लोग हिन्दी बोलते हैं, जबकि आठ लाख से ज्यादा लोग भारत की दूसरी क्षेत्रीय भाषाएँ बोलते हैं। हालांकि, अमेरिका में बोली जाने वाली शीर्ष दस भाषाओं में कोई भी भारतीय भाषा शामिल नहीं है।

इस रिपोर्ट में बताया गया है कि दक्षिण एशियाई भाषाओं में जबरदस्त वृद्धि दर्ज की गई है। मलयालम, तेलुगु और तमिल बोलने वालों में 115 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, वहीं हिन्दी बोलने वालों की संख्या 105 प्रतिशत बढ़ी है। दूसरी भारतीय भाषाओं जैसे पंजाबी, बंगाली और मराठी में 86 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। सबसे धीमी वृद्धि वाली दक्षिण एशियाई भाषाओं में गुजराती 52 प्रतिशत और उर्दू 42 प्रतिशत है।

लुप्त होती भाषाएँ

हम लोग भले ही अपनी भाषाई विविधता पर गर्व करते हों लेकिन इस विविधता को अक्षुण्ण रखने का कोई प्रयास नहीं करते हैं। पीपुल्स लिंग्युस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया के अध्ययन के अनुसार पिछले 50 वर्षों के दौरान 780 विभिन्न बोलियों वाले देशों की 250 भाषाएँ लुप्त हो चुकी हैं। आयरिश भाषाई विद्वान जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन के बाद पहली बार यह भाषाई सर्वे किया गया है। ग्रियर्सन ने 1898-1928 के बीच भाषाई सर्वे किया था।

मानव होना भाग्य है, कवि होना सौभाग्य

पद्मभूषण डॉ० गोपाल दास नीरज शीघ्र ही अपनी वसीयत तैयार कराने जा रहे हैं। उनकी हार्दिक इच्छा है कि 54 साल पहले अलीगढ़ में बनाये गये उनके आवास 'सावित्री सदन' को उनकी मृत्यु के बाद भी कोई न बेचे। उनके स्मारक के रूप में इसे विकसित किया जाय।

इस स्मारक पर उनकी इन बेहद चर्चित लाइनों का भी उल्लेख किया जाए 'आत्मा के सौन्दर्य का शब्द रूप है काव्य, मानव होना भाग्य है कवि होना सौभाग्य।'

भारती भवन पुस्तकालय का 125वाँ वर्ष

700 ईसवी से लेकर मौजूदा साल तक का पंचांग देखना हो या लीडर अखबार और माया, धर्मयुग जैसी पत्रिकाओं की प्रतियों का अवलोकन करना हो तो भारती भवन पुस्तकालय में जाएँ। 125 साल पुरानी इमारत में यह सब उपलब्ध है। नक्काशीदार आलमारी में रखी तमाम ऐतिहासिक किताबों के जर्द पन्ने पुस्तकालय के संग्रह को समृद्ध कर रहे हैं। यह प्रयाग का इकलौता पुस्तकालय है जहाँ इलाहाबाद में मौजूद रहने तक इंदिरा गाँधी नियमित जाया करती थीं। तमाम न्यायाधीश और नौकरशाह इस पुस्तकालय के नियमित सदस्य रहे हैं। पुस्तकालय का भवन रायबहादुर लाला रामचरण दास ने अपने संरक्षण में तैयार करवाया तथा लाला मनमोहन दास ने पुस्तकालय की प्रगति का जिम्मा लिया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान नैनी जेल में बन्द राजनैतिक कैदियों को पढ़ने के लिए यहाँ से किताबें भेजी जाती थीं। भारती भवन पुस्तकालय, प्रयाग के 125वें वर्ष के शुभारम्भ के अवसर पर वर्ष भर कार्यक्रम आयोजित किए जाएँगे। पिछले दिनों 125 दीप जलाकर वर्ष-महोत्सव का शुभारम्भ किया गया।

सरकार से हिन्दी के भले की उम्मीद नहीं : नरेन्द्र कोहली

धार्मिक व ऐतिहासिक ताने-बाने पर मौलिक लेखन के लिए हिन्दी के विख्यात साहित्यकार नरेन्द्र कोहली ने विगत दिनों अपने वाराणसी प्रवास के दौरान भाषा, साहित्य, सरकार और गुटबाजी पर अपने विचार प्रकट किये—''हिन्दी का पाठक वर्ग सिमट रहा है यह बात एकदम मिथ्या है। हिन्दी का विस्तार लेता बाजार व हिन्दी प्रकाशकों का बढ़ता दायरा इसका प्रमाण है। बड़ा संकट यह है कि उच्च वर्ग अपने बच्चों को जल्दी से जल्दी और ज्यादा से ज्यादा अंग्रेजी पढ़ा-सिखा देना चाहता है। हमें यह समझना होगा कि एक बच्चा कम से कम चार भाषाएँ सीख सकता है। विदेशी भाषा की यह चाहत हिन्दी के लिए अवरोध बनी हुई है। हिन्दी या भारतीय भाषाओं के विकास के दो ही रास्ते हैं। एक यह कि इन्हें उच्च शिक्षा का माध्यम बनाया जाय। दूसरे नौकरियों के लिए भारतीय भाषाओं का ज्ञान अनिवार्य कर दिया जाय जिसमें हिन्दी भी शामिल हो।'' भाषा को लेकर सरकारी रुख पर उन्होंने जमकर निशाना साधा। कहा—''सरकार कतई नहीं चाहती कि हिन्दी का भला हो।''

इंटरनेट हुआ 31 साल का

हम सबकी जिन्दगी में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने वाले इंटरनेट ने 30 साल पहले 1983 में 1 जनवरी के दिन अपना सफर शुरू किया था। संवाद और संचार का इससे सस्ता माध्यम और क्या हो सकता है, जिसके कारण पूरी दुनिया सिमट-सी गई है।

एक करोड़ में बिका बापू का चरखा

लंदन। बापू की एक और विरासत ब्रिटेन में नीलाम हो गई। करीब आठ दशक पुराना महात्मा गाँधी का चरखा ब्रिटेन में एक लाख 10 हजार पौंड (एक करोड़) में नीलाम हुआ। गाँधीजी ने भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान यरवदा जेल में इस चरखे का इस्तेमाल किया था।

संस्कृत के प्रचार के लिए आयोग

नई दिल्ली। भारतीय भाषाओं की जननी व परम्पराओं की वाहक संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार एवं उत्थान के लिए केन्द्र सरकार ने ख्यातिप्राप्त प्रोफेसर सत्यव्रत शास्त्री की अध्यक्षता में 13 सदस्यीय आयोग का गठन किया है।

यह आयोग राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान को राष्ट्रीय महत्व का शिक्षण संस्थान बनाने के लिए रोडमैप सुझाने और संस्कृत शिक्षा की वर्तमान दशा का आकलन करने और आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में इस भाषा को एकीकृत करने जैसे अनेक विषयों पर उपाय सुझाएगा। आयोग स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों और अन्य संस्थानों में संस्कृत शिक्षण की मौजूदा सुविधाओं का अध्ययन करेगा। शोध समेत सभी स्तरों पर संस्कृत अध्ययन को बढ़ावा देने के लिए सुझाव देना भी इसके दायरे में होगा। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अनुसार आयोग श्रेष्ठ उपाय सुझाने के लिए संस्कृत शिक्षण की पारंपरिक पद्धति का परीक्षण भी करेगा।

चीनी अकादमी में भारतवंशी नामित

वाशिंगटन। भारतीय मूल के जाने-माने अमेरिकी वैज्ञानिक और प्रतिष्ठित कारनेग मेलन यूनिवर्सिटी के प्रेसिडेंट सुब्रा सुरेश को चीनी विज्ञान अकादमी के सदस्य के तौर पर नामित किया गया है। चीन में विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में चीनी विज्ञान अकादमी की सदस्यता सर्वोच्च अकादमी सम्मान है।

रंगीन रामायण की पहली प्रति

वाराणसी। सफेद-स्याह परछाइयों में ठिठका सा खड़ा 20वीं सदी का शुरुआती दौर। जीवन के हर क्षेत्र को चटख रंगों की तलाश। फिल्मों में मगजमारी टेक्नीकलर को पर्दे पर उतारने की। साहित्य को प्रतीक्षा रंगीन चित्रों से पन्नों को संवारने की। प्रयास सफल हुए सन् 1901 में जब मुंबई के छापाखानों से रंगीन पुस्तकों की पहली खेप निकली। सबसे ज्यादा मांग रही रंगीन छापों वाली गोस्वामी तुलसीदास के रामचरित मानस की। अब दुर्लभ की श्रेणी में शामिल इस रामायण की पहली प्रति वाराणसी की सीमा से सटे करडुआ गांव (खमरिया) के एक कुटीर संग्रहालय में है।

मुंबई के निर्णय सागर प्रेस में प्रकाशित मानस की इस प्रति में बालकांड से उत्तरकांड तक की कथा तो है ही, आठवें कांड के रूप में लव-कुश कांड भी है। इसमें महारानी सीता के निर्वासन के बाद अरण्य में लव-कुश के जन्म व अयोध्या की सेना से लड़ाई (सचित्र) के बाद पिता श्रीराम से मिलन तक के प्रसंग हैं।

तुसाद के पुतलों को मात देगा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

वाराणसी। अजूबा बन चुके मैडम तुसाद संग्रहालय में रखे मोम के आदमकद पुतले पूरी दुनिया में मशहूर हैं। वजह भी है। मोम के पुतले हर जगह सुरक्षित नहीं रखे जा सकते, उनके पिघलने या टूटने का खतरा रहता है।

मगर अब ऐसा नहीं होगा। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के मालवीय उद्यमिता एवं संवर्धन विकास केन्द्र में मोम की ऐसी बेहतरीन एवं नायाब मूर्तियाँ बनाने की कवायद चल रही है कि न तो ये 70 डिग्री सेल्सियस के भीषण तापमान पर पिघलेंगी और न ही 70 डिग्री सेल्सियस के थरथरा देने वाले तापमान पर टूटेंगी।

पॉलिमर मोम—एम०सी०आइ०आइ०इ० के प्रत्यूष उपाध्याय पॉलिमर तत्त्वों की सहायता से मोम में हार्डनर मिलाकर मूर्ति बनाने में कामयाब हुए हैं। उन्होंने इन मूर्तियों का वैज्ञानिक परीक्षण भी करवाया है। इस मोम की खासियत यह है कि कितनी भी गर्मी पड़े, यह पिघलता नहीं। परीक्षण सफल होने के बाद अब केन्द्र में पं० मदन मोहन मालवीय की आदमकद प्रतिमा बनाने का काम चल रहा है।

किताबें खुद बोलकर बताएंगी अर्थ

इलाहाबाद। भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (ट्रिपलआइटी) ने अपने स्थापना दिवस के दिन विद्यार्थियों को एक बेहतरीन सौगात दी है। संस्थान के पुस्तकालय में विगत दिनों ई-मीडिया सेक्शन का उद्घाटन किया गया। इस सेक्शन में अब विद्यार्थी बिना लाइब्रेरी में गए कोई भी नई किताब खोज सकेंगे। अपने कॅरियर और कोर्स से सम्बन्धित नवीनतम पुस्तकों और जर्नल्स को ऑनलाइन न सिर्फ पढ़ सकेंगे बल्कि किताब के कंटेंट को सुन भी सकेंगे।

महिलाओं की सबसे बड़ी यूनिवर्सिटी सऊदी में

दुबई। सऊदी अरब में महिलाओं के लिए दुनिया के सबसे बड़े विश्वविद्यालय का निर्माण किया जाएगा। इसमें करीब 60 हजार छात्राएं पढ़ सकेंगी। करीब 30 लाख वर्गमीटर क्षेत्र में फैले प्रिंसेस नोरा बिंत अब्दुल रहमान यूनिवर्सिटी (पी०एन०यू०) के रियाद परिसर के बारे में यह दावा किया गया है कि विश्व में महिलाओं की सबसे बड़ी यूनिवर्सिटी यहाँ बनेगी।

हिन्दी में गुनगुनाएँ 28 जुबानों की कविताएँ

ख्यात गीतकार गुलजार 28 भाषाओं, बोलियों की कविताओं का अनूठा संग्रह तैयार कर रहे हैं। इसकी लिंक भाषा हिन्दी होगी, इसमें ही लोग इन कविताओं को पढ़ पाएंगे। विभिन्न प्रान्तों की अलग अलग जुबान में गढ़ी रचनाओं का मर्म समझ पाएंगे। इसमें 400 शायरों की नज्में पढ़ने को मिलेंगी। इनके अनुवाद पर काफी कार्य हो चुका है, संग्रह एक साल में किताब के रूप में लोगों के सामने होगा।

और सभी 25000 परीक्षार्थी फेल हो गए...

किसी प्रतिष्ठित कॉलेज में एडमिशन के लिए टेस्ट देते हुए विद्यार्थी परेशान होते हैं कि कहीं वे फेल न हो जाएं। ऐसा कभी नहीं होता कि कॉलेज परेशान हो कि टेस्ट के लिए आए सारे बच्चे फेल हो जाएं और उनका कॉलेज खाली न रह जाए। लेकिन अपवादों की कड़ी में दुनिया में ऐसा भी एक अपवाद आ ही गया जब अफ्रीका के सबसे प्रतिष्ठित लाइबीरिया विश्वविद्यालय में दाखिले के लिए आए सभी 25 हज़ार परीक्षार्थी फेल हो गए। जंगल में आग की तरह यह खबर भी राष्ट्रपति तक पहुँच गई और राष्ट्रपति को ड्रॉ के आधार पर कुछ बच्चों का एडमिशन लेने की अनुशंसा करनी पड़ी।

मिथिलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ

मिथिलेश्वर

आकार डिमाई *पृष्ठ* 148

सजिल्द : 978-81-7124-974-9 • रु० 250.00
अजिल्द : 978-81-7124-975-6 • रु० 120.00

मिथिलेश्वर अपनी कहानियों में मानवीय संवेदना एवं ग्रामीण यथार्थ को बदलते समय और समाज के सन्दर्भ में वस्तुगत ढंग से व्यक्त करते हैं। उनकी अधिकांश कहानियाँ ग्रामीण जीवन पर आधारित हैं। कुछ कहानियों में नगरीय जीवन-मूल्यों की झलक भी मिलती है। उनकी कहानियों में अनियन्त्रित, अमर्यादित नगरीय संस्कृति और उसके प्रभाव का चित्रण तो हुआ ही है, शहर की वर्गीय चेतना को प्रामाणिक ढंग से व्यक्त करने का सामर्थ्य भी दिखायी देता है।

(पुस्तक की एक कहानी का अंश)

मनबोध मउआर

महाराजगंज में डेरा जमाते ही आस-पड़ोस के लोगों ने मुझे यह हिदायत दी कि अगर इस मुहल्ले में रहना है तो मनबोध मउआर से बचकर ही रहना। उनके अनुसार वह बूढ़ा झगड़ा लगावन, कुचरा और अनभल ताकने वाला है। मुहल्ले का कोई ऐसा घर नहीं जो उसकी वक्रदृष्टि का शिकार न हो।

मेरे लिए यह बिल्कुल नई बात थी। स्थानान्तरण के चलते मुझे इस शहर में आना पड़ा था। और विभागीय सहयोगियों की सहायता से महाराजगंज मुहल्ले में ही घर उपलब्ध हो सका था। यह मेरा चौथा स्थानान्तरण था। इससे पूर्व तीन शहरों में मैं रह चुका था जहाँ अनेक नई-नई और अजीबोगरीब जानकारियाँ प्राप्त हुई थीं, लेकिन यह जानकारी उन सबसे पृथक् थी। मुहल्ले के एक बूढ़े से सब परेशान थे। उस अकेले बूढ़े ने सबकी नाकों में दम कर रखा था।

इस जानकारी के बाद उस बूढ़े को देखने की जिज्ञासा मेरे अन्दर पैदा हो गई। आखिर वह बूढ़ा किस धातु का बना है जो अकेले एक पूरे मुहल्ले पर भारी पड़ता है। इस सम्बन्ध में मुझे अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। शीघ्र ही एक दिन उससे मुलाकात हो गई। वह मुहल्ले के पश्चिमी हिस्से में रहता था। उस दिन उसी गली से मैं गुजर रहा था। मेरे साथ मकान-मालिक का लड़का पवन भी था। उसी ने मुझे संकेत से बताया कि सामने वाले मकान के बरामदे में चौकी पर जो आदमी बैठा है, वही मनबोध मउआर है। यह सुनते ही मेरे कदम ठिठक गए। देखा, गहरे साँवले रंग का लम्बा-तगड़ा वह वृद्ध व्यक्ति किसी गाँव का ठेठ किसान लगता था। मोटी गर्दन और खुरदरे हाथ-पाँव। गर्दन की नसें उभरी हुईं। चेहरा सपाट और शिला की तरह सख्त। जवानी में पहलवानी कर चुकने का आभास। बदन पर किसी मोटे कपड़े की गंजी और साधारण-सी धोती। गंजी के नीचे लटकता जनेऊ और उसमें बँधी कुंजी। आँखों में पुराने फ्रेम का चश्मा। माथे के बाल घुटे हुए। दाढ़ी-मूँछें सफेद। उसे देखते ही मेरे मुँह से निकल गया, ''यह तो गाँव का आदमी मालूम पड़ता है.... ?''

पास खड़े पवन ने मेरी बात की पुष्टि की, ''हाँ गाँव का ही है। पत्नी की मृत्यु के बाद अपने बेटे की नौकरी पर शहर आ गया है।''

मैंने अपने ठिठक गए पाँवों को तत्क्षण गतिशील बना दिया कि कहीं मनबोध मउआर को यह न लगे कि कोई तमाशबीन की तरह उन्हें घूर रहा है, लेकिन मेरी सतर्कता के बावजूद उसकी पैनी आँखों ने मेरी चोरी पकड़ ही ली। ''तो आपे हैं बैंक वाले धरमदेव बाबू। उपधेआ (उपाध्याय) के मकान में आपे नया किराएदार आए हैं। आपसे एगो काम है भाई। एक मिनट का वास्ते आइए।''

मैंने साथ चल रहे पवन की ओर देखा। उसने व्यंग्यात्मक लहजे में धीरे से कहा, ''मैं तो चला। मुझे ज़रूरी काम है। बूढ़े ने पकड़ लिया आपको। फँसा लिया अपने जाल में।''

पवन आगे बढ़ गया। मेरे कदम मनबोध मउआर के पास जा पहुँचे। उन्होंने पूरे स्नेह से मुझे अपने पास ही चौकी पर बैठाया। फिर अपनी पोती को चाय लाने का आदेश दिया, लेकिन मैंने मना कर दिया, ''अभी-अभी चाय पी है। मैं अधिक चाय नहीं पीता।''

अब उन्होंने आम ग्रामीण की भाँति मेरा पूरा हुलिया लेना प्रारम्भ कर दिया कि मैं क्या हूँ? कहाँ का हूँ? मेरे परिवार में और कौन-कौन हैं? मैं यहाँ कैसे चला आया? आदि। उनके ये प्रश्न मुझे नागवार लगे। फिर भी अनिच्छा से ही सही, मैं जवाब देता गया। किसी नए व्यक्ति के बारे में इतनी जानकारी प्राप्त करने का क्या तुक? अवश्य यह आदमी कारगुजारियों वाला है। मैं शंकित दृष्टि से उन्हें ताकने लगा। शायद उन्होंने मेरा अभिप्राय लक्ष्य कर लिया—''आपके बैंक में हमारा पोतवा एगो खाता खोलवाना चाहता है। एही वास्ते आपको कष्ट दिया.... ।''

जवाब में चट कहा मैंने, ''इसमें कोई परेशानी नहीं। जब इच्छा हो अपने पोते के साथ बैंक आ जाइएगा। जिसके नाम खाता खुलेगा उसकी दो तस्वीरें और पहचान-पत्र ज़रूरी है।''

यह कहकर मैं वहाँ से चलने को हुआ कि उन्होंने फिर पकड़ लिया, ''जाइए, आबाद रहिए...। आप तो हीरा आदमी लगते हैं। उपधेआ के घर में तो आप आइये गए। बाकी उ आदमी नहीं, कसाई है। अपने छोरों (बेटों) की तुलना में छोरियों (बेटियों) को फूटी आँखों नहीं देखता। दो छोरियाँ बीमार होकर मर गईं। इलाज तक नहीं करवाया। किन्तु छोरों के सर्दी-बुखार पर भी डॉक्टरों के यहाँ भाग-दौड़ लगाने लगता है। ओइसा आदमी का मुँह देखना भी पाप है। जो अपनी जाइयों का नहीं, वह और किसी का क्या होगा!''

अब उनकी यह बात मुझे फिजूल लगने लगी। मुहल्लेवासियों की टीका-टिप्पणियों का अर्थ भी खुलने लगा। अब मैं भी अपनी जल्दबाजी व्यक्त करते हुए उठ खड़ा हुआ। ''मैं एक आवश्यक कार्य में हूँ। किसी दूसरे के मामले से हमें क्या मतलब? अपनी समस्याएँ ही इतनी हैं कि दूसरों के बारे में जानने की कहाँ फुर्सत?''

मेरी इस बात पर मनबोध मउआर का चेहरा कुछ फक-सा हो गया। शायद यह तर्क उन्हें पसन्द नहीं आया। खैर...। उनकी पसन्द और नापसन्द का ख्याल किए बगैर मैं आगे बढ़ गया।

शाम पत्नी से इस बारे में बातचीत हुई तो उसने मनबोध मउआर की बात की ही पुष्टि की। अपनी व्यस्तताओं के चलते तथा दूसरों की ज़िन्दगी में न झाँकने के अपने शहरी दृष्टिकोण की वजह से मैंने ध्यान नहीं दिया था, लेकिन अब साफ-साफ महसूस कर रहा था, सचमुच मकान-मालिक उपाध्याय का अपनी पुत्रियों के प्रति अमानवीय व्यवहार था। उसके घर के एक पुराने किराएदार से इस सत्य की पुष्टि भी हुई कि उसकी घोर उपेक्षा से ही उसकी दो बेटियों का निधन अल्पायु में ही हुआ। उन दो बेटियों के निधन के बाद अभी उसे तीन बेटे और तीन बेटियाँ थीं। वह बेटियों से कसकर काम लेता। कहता, 'जिस घर में तीन-तीन बेटियाँ सयानी हो चली हों उस घर में दाई-नौकर की क्या ज़रूरत?'

उन्हें सख्त नियन्त्रण में रखता। कहता, 'सयानी लड़कियों का घूमना-फिरना और इधर-उधर आना-जाना अच्छा नहीं होता।'

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी
www.vvpbooks.com

सम्मान-पुरस्कार

मिस्त्री को मिला डी०एस०सी० पुरस्कार

जयपुर साहित्य महोत्सव में आयोजित कार्यक्रम में ग्लोरिया स्टीनेम द्वारा इस साल के प्रतिष्ठित डी०एस०सी० पुरस्कार से लेखक साइरस मिस्त्री को उनकी पुस्तक 'क्रॉनिकल्स ऑफ ए कॉर्पस बीयरर' के लिए 50 हजार डॉलर का पुरस्कार दिया गया। विदित हो कि दक्षिण एशिया पर आधारित सर्वश्रेष्ठ लेखन या किसी पुस्तक के अनुवाद के लिए यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है। पिछले साल जीत थयाली को यह पुरस्कार दिया गया था।

साहित्य अकादमी पुरस्कार घोषित

वर्ष 2013 के लिए 24 भाषाओं में दिए जाने वाले साहित्य अकादमी पुरस्कारों की घोषणा कर दी गई है। 11 मार्च को इन्हें एक समारोह में सम्मानित किया जाएगा। कविता विधा के लिए सर्वाधिक आठ भाषाओं में पुरस्कार दिए जाएंगे। इसके अलावा चार निबन्ध संग्रह, तीन उपन्यास, दो यात्रा-वृतान्त, दो कहानी संग्रह और आत्मकथा, संस्मरण और नाटक के लिए एक-एक पुरस्कार घोषित किए गए।

साहित्य अकादमी के सचिव डॉ० के० श्रीनिवास राव ने बताया कि हिन्दी में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रतिष्ठित लेखिका मृदुला गर्ग को उनकी कृति 'मिलजुल मन' (उपन्यास) के लिए दिया जाएगा। उर्दू में यह पुरस्कार प्रसिद्ध फिल्म गीतकार जावेद अख्तर को उनकी कृति 'लावा' (कविता संग्रह) के लिए जबकि अंग्रेजी भाषा में वरिष्ठ लेखक तेमसुला आओ को उनके कहानी संग्रह 'लबरनम फॉर माई हेड' के लिए दिया जाएगा। गुजराती कवि चीनू मोदी को उनके काव्य संग्रह 'खारा जारां' के लिए और असमिया कवि रवीन्द्र सरकार को उनके कविता संग्रह 'धुलियोरी भारिर साँस' के लिए 2013 के साहित्य अकादमी पुरस्कार के लिए चुना गया है। अन्य विजेताओं में बांग्ला कवि सुबोध सरकार और बोडो भाषा के कवि अनिल बोरो शामिल हैं। विजेताओं को स्मृतिचिह्न, शाल और एक लाख रुपये की नकद राशि देकर सम्मानित किया जाता है।

डॉ० मीरा को शीर्ष अमेरिकी पुरस्कार

वाशिंगटन। अमेरिकी विश्वविद्यालय में भौतिकी और खगोल विज्ञान की भारतीय मूल की प्रोफेसर को प्रतिष्ठित चेरी अवार्ड प्रदान किया जाएगा। उन्हें यह सम्मान उनके असाधारण शैक्षिक कॅरियर के लिए प्रदान किया जा रहा है। बेलर यूनिवर्सिटी ने 2014 के रॉबर्ट फोस्टर चेरी अवार्ड फॉर ग्रेट टीचिंग के लिए डॉ० मीरा चंद्रशेखर के नाम की घोषणा की। यह अमेरिका में शिक्षा के क्षेत्र में दिया जाने वाला सबसे अधिक धनराशि का अवार्ड है। इसके अन्तर्गत विजेता को 2.5 लाख डॉलर (करीब 1.53 करोड़ रुपये) प्रदान किये जाते हैं। अवार्ड जीतने के लिए यूनिवर्सिटी ऑफ मिसौरी के भौतिक विभाग के लिए डॉ० चंद्रशेखर को 25 हजार डॉलर (करीब 15 लाख रुपये) अतिरिक्त दिए जाएँगे, जहाँ वह भौतिकी की प्रोफेसर हैं।

बाल साहित्य पुरस्कार

साहित्य अकादमी ने पिछले दिनों प्रो० शशि पठानिया को डोगरी अनुवाद के लिए चेन्नई में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में सम्मानित किया। वहीं, धीरज केसर को उनके डोगरी गज़ल संग्रह 'रफ कॉपी' के लिए युवा लेखन और कृष्ण शर्मा को उनकी पुस्तक 'खडौने' के लिए बाल साहित्य पुरस्कार देने की घोषणा की गई है।

उ०प्र० संस्कृत संस्थान के पुरस्कार

पिछले पाँच साल से रुके उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान के वर्ष 2008 के पुरस्कार 21 दिसम्बर 2013 को मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने वितरित किये। बेंगलूर के संस्कृत विद्वान प्रो० एन०एस० रामानुज ताताचार्य को 2.51 लाख रुपये के विश्व भारती पुरस्कार से अलंकृत किया। वहीं सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रो० शिव जी उपाध्याय को एक लाख रुपये के महर्षि वाल्मीकि पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इसी क्रम में बाणभट्ट पुरस्कार—25 हजार रुपये—डॉ० गायत्री प्रसाद पाण्डेय (वाराणसी), शंकर पुरस्कार—25 हजार रुपये—प्रो० सुधाकर मिश्र (वाराणसी), सायण पुरस्कार—25 हजार रुपये—प्रो० कमलेश झा (वाराणसी), वेद पंडित पुरस्कार—25 हजार रुपये—गोविंद कुमार शर्मा, अनिल झवाली, चंदन कुमार मिश्र, चंद्रशेखर द्रविड़, आशीष मिश्र (सभी वाराणसी) पुरस्कृत किये गये। इसी क्रम में विशिष्ट पुरस्कार—51 हजार रुपये—डॉ० प्रेमा अवस्थी व डॉ० शिव बालक द्विवेदी (कानपुर), प्रो० महावीर अग्रवाल (हरिद्वार), प्रो० विजयदेव शंकर पंड्या (अहमदाबाद), पाणिनि पुरस्कार—25 हजार रुपये—प्रो० रूप किशोर शास्त्री (उज्जैन), वेद पंडित पुरस्कार—25 हजार रुपये—प्रेमनारायण त्रिपाठी व अश्विनी त्रिपाठी (गोरखपुर), त्रयंबक नाथ तिवारी (देवरिया) और नारायण दत्त मिश्र (इलाहाबाद) ने भी पुरस्कार प्राप्त किये।

सौहार्द सम्मान

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा पंजाबी भाषी हिन्दी लेखिका डॉ० कीर्ति केसर को 'सौहार्द सम्मान' से अलंकृत किया गया। एक जागरूक एवं आदर्श नागरिक होने के नाते लेखिका ने मिली धनराशि में से 10 हजार रुपये प्रधानमंत्री राहत कोष और 15 हजार रुपये 'आवा' (आर्मी वार विडोज एसोसिएशन) के फंड में योगदान के लिए दे दिये।

नोबेल पुरस्कार मुनरो को

अनूठी कथाकार और मानवीय संवेदनाओं की मर्मज्ञ कलमकार कनाडा की साहित्यकार एलीस मुनरो को इस वर्ष का नोबेल सम्मान दिया गया है। मुनरो कनाडा की पहली साहित्यकार हैं जिन्हें स्वीडिश अकादमी का यह सुप्रतिष्ठित सम्मान दिया जा रहा है।

मुनरो को यह पुरस्कार मानवीय कमजोरियों पर आधारित कथाओं के लिए प्राप्त हुआ। स्वीडिश अकादमी ने एलीस (82 वर्ष) को 'उत्कृष्ट समकालीन कथाकार' बताकर सम्मानित किया।

वर्ष 1901 में शुरू हुए नोबेल साहित्य पुरस्कार से सम्मानित होने वाली एलीस 13वीं महिला हैं। एलीस को 10 दिसम्बर, 2013 को स्टाकहोम में एक औपचारिक समारोह में 12.4 लाख डॉलर की राशि और पुरस्कार दिया गया।

सबसे कम उम्र की बुकर प्राइज विजेता

न्यूजीलैण्ड की 28 वर्ष की एक युवा लेखिका एलिनोर कैटन अपने उपन्यास द लुमिनरीज के लिए सबसे कम उम्र में मैन बुकर अवॉर्ड जीतने वाली लेखिका बन गयी हैं। भारतीय मूल की अमेरिकन लेखिका झुंपा लाहिड़ी भी अपने उपन्यास दि लोलैंड के लिए इस वर्ष बुकर अवार्ड की होड़ में थीं। बुकर अवार्ड्स के 45 वर्ष के इतिहास में कैटन का 832 पृष्ठों का द लुमिनरीज नामक उपन्यास यह अवार्ड जीतने वाली सबसे लम्बी कृति भी बन गया है। उन्होंने यह उपन्यास उन्नीसवीं सदी की सोने की खानों पर लिखा है। यह उपन्यास उन्होंने 25 वर्ष की उम्र में लिखना प्रारम्भ किया था। अवॉर्ड के साथ 50 हजार पाउंड की राशि भी दी जाती है।

यू०एस० नैशनल बुक अवार्ड के लिए झुम्पा लाहिड़ी नामांकित

अपने उपन्यास 'द लोलैण्ड' के लिए बुकर पुरस्कार हेतु नामांकित होने के कुछ ही दिनों बाद, पुलित्जर पुरस्कार विजेता, भारतीय-अमेरिकी लेखिका झुम्पा लाहिड़ी को यू०एस० नैशनल बुक अवार्ड के लिए भी नामांकित किया गया है।

झुम्पा लाहिड़ी के 'टेल ऑफ टू ब्रदर्स' के साथ अन्य नौ उपन्यास भी पुरस्कार तालिका में हैं जिनमें 'पैसिफिक' (टॉम डूरी), 'द एण्ड ऑफ द पाइंट' (एलिजाबेथ ग्रेवर) तथा 'द फ्लेमथ्रोअर्स' (रैचेल कुशनर) भी शामिल है।

साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए भारतीय एनजीओ सम्मानित

वाशिंगटन। फिल्मों के माध्यम से साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए मुंबई के एक गैर सरकारी संगठन को 2013 के लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस लिटरेसी अवार्ड से सम्मानित किया गया है। अंतर्राष्ट्रीय वर्ग में चुने गए प्लानेट रेड नाम के

भारतीय एनजीओ को पचास हजार डॉलर (करीब 31.3 लाख रुपये) की इनामी राशि प्रदान की गई। एनजीओ ने एसएलएस (सेम लेंगवेज सबटाइटलिंग) नाम से एक अभिनव साक्षरता कार्यक्रम की शुरुआत की है। यह एक टेलीविजन कार्यक्रम है।

काशी के तीन विद्वानों को राष्ट्रपति सम्मान

विगत दिनों संस्कृत विश्वविद्यालय से सम्बद्ध डॉ० भागीरथ प्रसाद त्रिपाठी 'वागीश शास्त्री' तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से सम्बद्ध डॉ० जयशंकरलाल त्रिपाठी व डॉ० उपेन्द्र त्रिपाठी को राष्ट्रपति भवन में महामहिम प्रणब मुखर्जी द्वारा राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसकी घोषणा 15 अगस्त 2013 को ही की गयी थी।

सुनील गंगोपाध्याय स्मृति पुरस्कार

विगत दिनों कोलकाता में राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने बांग्ला कवि नीरेंद्र नाथ चक्रवर्ती और शंख घोष को सुनील गंगोपाध्याय स्मृति पुरस्कार प्रदान किया।

साहित्य-भूषण सम्मान

लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्यकार विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' को दीर्घकालीन विशिष्ट साहित्य-रचना एवं हिन्दी-सेवा के लिए उत्तर प्रदेश शासन से शत-प्रतिशत अनुदानित संस्था उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा दो लाख रुपये के साहित्य-भूषण-सम्मान से समलंकृत किया गया।

एक महान् उपलब्धि का प्रशस्ति पत्र

दिल्ली स्थित ज्ञानकल्याण दातव्य न्यास द्वारा 2070 विक्रमसंवत् तथा 2013 ई० में पचास हजार रुपये के वर्ष 2012 के 'चन्द्रवती जोशी संस्कृत भाषा पुरस्कार' से **आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी** को पुरस्कृत किया गया।

चालीस से भी अधिक वर्षों तक अध्यापन में संलग्न रहे आचार्य त्रिपाठी समसामयिक साहित्य सर्जना में दक्ष हैं। 200 से अधिक शोधपत्रों, समीक्षात्मक लेखों तथा 150 से अधिक ग्रन्थों के रचयिता ने 'राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थान' नई दिल्ली के कुलपति पद को विभूषित करते हुए संस्कृत विद्या के क्षेत्र में नवीन अनुसंधान तथा प्रकाशनों को अभूतपूर्व गति प्रदान की।

सौ से अधिक राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, शोध संगोष्ठियों में अपने विद्वत्तापूर्ण शोधपत्रों तथा व्याख्यानों से विद्वानों की जिज्ञासाओं का समाधान करने वाले आचार्य त्रिपाठी को साहित्य अकादमी, के०के० बिरला फाउण्डेशन, कालिदास अकादमी, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग आदि संस्थाओं द्वारा संस्कृत के प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। इनमें महत्त्वपूर्ण हैं—साहित्य अकादमी पुरस्कार, कालिदास पुरस्कार, भोज पुरस्कार, व्यास पुरस्कार। एशियाटिक सोसाइटी, मुम्बई द्वारा आपको सुदीर्घ साहित्यसेवा के लिए पी०वी० काणे स्वर्णपदक से सम्मानित किया गया है।

नरेश मेहता वाङ्मय सम्मान

भोपाल। मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ने ज्ञान-विज्ञान के विषयों पर उत्कृष्ट साहित्येतर लेखन को सम्मानित करने के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से विभूषित महान साहित्य मनीषी नरेश मेहता की स्मृति में स्थापित 31 हजार रुपये का 'नरेश मेहता स्मृति वाङ्मय सम्मान' वर्ष 2013 के लिए प्रख्यात साहित्यकार, पुरातत्ववेत्ता एवं इतिहासकार डॉ० श्यामसुन्दर निगम (उज्जैन) तथा लोक और आदिवासी संस्कृति, कला और लोक साहित्य के अध्येता बसंत निरगुणे (भोपाल) को प्रदान करने का निर्णय लिया है।

शैलेश मटियानी कथा पुरस्कार

भोपाल। मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ने यू०के० की बहुभाषी हिन्दी सेवा संस्था गीतांजलि के सहयोग से शीर्षस्थ कथाकार शैलेष मटियानी की स्मृति में स्थापित 11000 रुपये का वर्ष 2013 का प्रतिष्ठित चित्राकुमार कथा पुरस्कार हिन्दी की प्रख्यात कथाकार डॉ० उर्मिला शिरीष को उनकी कथाकृति 'कुर्की और अन्य कहानियाँ' पर प्रदान करने का निर्णय लिया है।

विद्या वारिधी सम्मान

जाने-माने शास्त्रीय गायक पद्मभूषण पं० छन्नूलाल मिश्र को रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर की ओर से 'डॉक्टर ऑफ लेटर्स' (विद्या वारिधी) की उपाधि प्रदान की गयी। पं० छन्नूलाल को यह सम्मान मध्य प्रदेश के राज्यपाल रामनरेश यादव ने विश्वविद्यालय के 27वें दीक्षांत समारोह के अवसर पर 30 दिसम्बर को प्रदान किया।

साहित्यकार मालती जोशी का सम्मान

हिन्दी साहित्य को अपनी 40 से अधिक श्रेष्ठ पुस्तकों के माध्यम से समृद्ध बनाने वाली मूर्धन्य कथाकार श्रीमती मालती जोशी के सृजनशील यशस्वी जीवन के 80 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर भोपाल के हिन्दी भवन में पिछले दिनों मध्यप्रदेश की राजधानी की साहित्य सेवी संस्थाओं ने उनका आत्मीय सम्मान किया। मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के तत्वावधान में हुए इस गरिमापूर्ण सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० ब्रजकिशोर कुठियाला थे।

75 वर्ष पूर्ण होने पर डॉ० प्रभाकर श्रोत्रिय का सार्वजनिक अभिनन्दन

साहित्य-साधना के क्षेत्र में मध्यप्रदेश को देश में गौरवान्वित करने वाले मूर्धन्य आलोचक, नाटककार, सम्पादक और विचारक डॉ० प्रभाकर श्रोत्रिय की जीवन-यात्रा के यशस्वी 75 वर्ष पूर्ण होने पर हिन्दी भवन में भोपाल की साहित्यिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक संस्थाओं ने अमृत प्रसंग आयोजित कर डॉ० श्रोत्रिय का सार्वजनिक अभिनन्दन करते हुए उनके दीर्घायु जीवन की कामना की।

इस अवसर पर डॉ० श्रोत्रिय के बहुआयामी व्यक्तित्व और कृतित्व पर केन्द्रित एक स्मारिका का लोकार्पण भी समारोह के मुख्य अतिथि श्री गिरीराज किशोर द्वारा सम्पन्न हुआ।

सरकारी कार्यालयों को सम्मान

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दिल्ली ने विभिन्न सरकारी कार्यालयों को हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में उनके विशिष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया। इस अवसर पर आकाशवाणी के समाचार सेवा प्रभाग में उपनिदेशक राजेन्द्र उपाध्याय साहित ग्यारह लोगों को स्वरचित हिन्दी कविता के लिए पुरस्कृत किया गया।

समारोह के दौरान कार्यान्वयन समिति की हिन्दी पत्रिका मंदाकिनी का भी विमोचन किया गया। आकाशवाणी के महानिदेशक लीलाधर मंडलोई समारोह में मुख्य अतिथि थे।

विजय वर्मा कथा सम्मान एवं हेमंत स्मृति कविता सम्मान

विगत दिनों मुम्बई में श्री जे.जे.टी. विश्वविद्यालय के साहित्यिक एकांश हेमंत फाउण्डेशन के तत्वावधान में आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि डॉ० दामोदर खड़से के कर कमलों द्वारा विजय वर्मा कथा सम्मान 2013 हिन्दी की कथाकार शरद सिंह को उनके उपन्यास 'कस्बाई सिमोन' के लिए तथा समारोह के अध्यक्ष गुजराती के वरिष्ठ साहित्यकार श्री दिनकर जोशी द्वारा हेमंत स्मृति कविता सम्मान 2013 श्री हरेप्रकाश उपाध्याय को ग्रामीण परिवेश में रची-बसी उनकी कविताओं के लिए प्रदान किया गया। पुरस्कारस्वरूप ग्यारह हजार रुपए की धनराशि, स्मृतिचिह्न, शॉल एवं श्रीफल प्रदान किया गया।

अकादमी पुरस्कार

भाईंदर से नियमित प्रकाशित होने वाली त्रैमासिक पत्रिका संयोग साहित्य के सम्पादक डॉ० मुरलीधर पाण्डेय को मुंबई में 'महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी' की ओर से विष्णुदास भावे पुरस्कार से उनके नाटक 'कच्चे रास्ते' के लिए पुरस्कृत किया गया। साथ ही साथ डॉ० मुरलीधर पाण्डेय हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, इलाहाबाद की स्थायी समिति के सदस्य चुने गये। यह सदस्यता 2013 से 2018 तक बनी रहेगी।

दुष्यंत कुमार स्मृति सम्मान

राष्ट्रभाषा स्वाभिमान न्यास द्वारा आयोजित 21वाँ अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन व सम्मान समारोह 2013 का आयोजन दिनांक 27,

28 अक्टूबर, 2013 को गाजियाबाद में हुआ। कानपुर की नवोदित साहित्यकार डॉ० माहे तिलत सिद्दीकी को 'दुष्यंत कुमार स्मृति सम्मान' से अलंकृत किया गया।

जयनंदन को 2013 का कथाक्रम सम्मान

वर्ष 2013 का 'आनंद सागर स्मृति कथाक्रम सम्मान' वरिष्ठ और चर्चित कथाकार जयनंदन को दिए जाने का निर्णय लिया गया है।

आ० आनंदऋषि साहित्य निधि, हैदराबाद

'आचार्य आनंदऋषि साहित्य निधि, हैदराबाद' के तत्वावधान में 23वाँ आचार्य आनंदऋषि साहित्य पुरस्कार इस वर्ष दक्षिण भारत में हिन्दी के प्रमुख कथाकार एन०आर० श्याम को हैदराबाद में प्रदान किया गया। मुख्य अतिथि, गाँधी स्मारक निधि आ०प्र० के चेयरमैन सी०पी० चारी ने इस पुरस्कार के अन्तर्गत उन्हें 25 हजार रुपये का चेक, शाल, प्रशस्ति पत्र और आचार्य आनंद ऋषि रचित साहित्य भेंटकर सम्मानित किया।

दक्षिण भारत में हिन्दी में सृजनात्मक लेखन को सम्मानित व प्रोत्साहित करने और जन-मानस में साहित्य के प्रति अभिरुचि जागृत करने के उद्देश्य से प्रति वर्ष एक हिन्दीतर भाषी हिन्दी साहित्यकार को यह सम्मान दिया जाता है।

प्रो० ए० अरविन्दाक्षन को सम्मान

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन की जयन्ती एवं प्रख्यात पत्रकार पं० भीमसेन विद्यालंकार की स्मृति के अवसर पर हिन्दी भवन, नई दिल्ली द्वारा दिया जाने वाला वार्षिक 'हिन्दी रत्न सम्मान' बहुभाषी विद्वान् प्रो० अरविन्दाक्षन को दिल्ली में आयोजित एक समारोह में प्रदान किया गया। सम्मानस्वरूप उन्हें रजत श्रीफल, शॉल, सरस्वती प्रतिमा, प्रशस्ति पत्र एवं एक लाख रुपए की सम्मान राशि प्रदान की गई।

एस्टोनिया ने किया विष्णु खरे को सम्मानित

हिन्दी के वरिष्ठ कवि विष्णु खरे को पिछले दिनों नई दिल्ली में एस्टोनिया के राष्ट्रीय महाकाव्य के अनुवाद के लिए वहां के राष्ट्रीय अलंकरण 'दि ऑर्डर ऑफ दि टेरा मरियाना' से सम्मानित किया गया। उन्होंने एस्टोनिया के राष्ट्रीय महाकाव्य का अनुवाद 'कलेव पुत्र' नाम से किया है। विष्णु खरे को यह सम्मान एस्टोनिया के शिक्षामंत्री जाक आविक्सू द्वारा प्रदान किया गया। सम्मानस्वरूप उन्हें एक अलंकरण, कुछ पुस्तकें और एस्टोनिया आने का निमंत्रण दिया गया।

इंदु शर्मा कथा सम्मान

कथा यूके की ओर से कथाकार पंकज सुबीर अंतर्राष्ट्रीय इंदु शर्मा कथा सम्मान से सम्मानित किए गए हैं। उन्हें यह सम्मान पिछले दिनों लंदन के हाउस ऑफ कॉमंस में आयोजित एक समारोह में उनके कहानी-संग्रह 'महुआ घटवारिन और अन्य कहानियाँ' के लिए दिया गया। इसी के साथ समारोह में बर्मिंघम के डॉ० कृष्ण कन्हैया को उनके कविता-संग्रह 'किताब जिन्दगी की' के लिए पद्मानंद साहित्य सम्मान से सम्मानित किया गया।

रचनाकार सम्मानित

मुंबई में रवींद्र नाट्य मंदिर में आयोजित कार्यक्रम में महाराष्ट्र के सांस्कृतिक मंत्री श्री संजय देवतले ने महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी का औपन्यासिक जीवनी के लिए वर्ष 2011 का प्रथम 'काका कालेलकर पुरस्कार' डॉ० अशोक गुजराती को उनकी पुस्तक 'खुशबू का अहसास' के लिए प्रदान किया और लघुकथाकार श्री घनश्याम अग्रवाल को 'पद्मश्री अनंतगोपाल शेवड़े पुरस्कार' से तथा कथाकार श्री हरीश पाठक को वर्ष 2011 का 'बाबूराव पराड़कर पुरस्कार' उनकी कृति 'त्रिकोण के तीनों रंग' के लिए दिया गया। सम्मानस्वरूप उन्हें 51,000 रुपए नकद राशि, प्रशस्ति-पत्र, सम्मान-चिह्न, शॉल तथा श्रीफल प्रदान किए गए।

'काव्य वीणा सम्मान'

भारतीय भाषा परिषद् के सभागार में कोलकाता की सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था 'परिवार मिलन' द्वारा डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र को उनकी काव्य-कृति 'शिखरणि' के लिए 'काव्य-वीणा सम्मान' प्रदान किया गया। डॉ० मिश्र को शॉल, श्रीफल, प्रतीक-चिह्न एवं 51 हजार रुपए की राशि प्रदान की गई। अध्यक्षता प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ० कृष्णबिहारी मिश्र ने की।

'फड़के कला सम्मान'

विगत दिनों धार में उत्कृष्ट महाविद्यालय के प्रांगण में भोज शोध संस्थान द्वारा आयोजित पद्मश्री फड़के संगीत समारोह में समिति द्वारा घोषित प्रथम 'फड़के कला सम्मान' के अंतर्गत शास्त्रीय गायिका श्रीमती सोनिया राय को स्मृति-चिह्न, सम्मान पट्ट, शॉल, श्रीफल तथा 11,000 रुपए नगद प्रदान किए गए।

डॉ० राजेन्द्र परदेसी को 'साहित्यश्री सम्मान'

तिरुवनंतपुरम, केरल में वरिष्ठ साहित्यकार एवं चित्रकार डॉ० राजेन्द्र परदेसी को केरल राज्य के शिक्षा एवं संस्कृति मंत्री श्री के०सी० जोसफ ने केरल हिन्दी साहित्य अकादमी की ओर से 'साहित्यश्री सम्मान' एवं मानव संसाधन द्वारा प्रदत्त दस हजार रुपए की राशि देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर अकादमी के अध्यक्ष डॉ० एन० चंद्रशेखरन नायर ने अपने विचार व्यक्त किए।

श्री हरिप्रसाद दास को 'मूर्तिदेवी पुरस्कार'

केन्द्रीय मंत्री श्री एम० वीरप्पा मोइली की अध्यक्षता में सम्पन्न 'मूर्तिदेवी पुरस्कार' चयन समिति की बैठक में प्रख्यात साहित्यकार श्री हरिप्रसाद दास द्वारा लिखित पुस्तक 'वामशा' को वर्ष 2012 के लिए 26वाँ 'मूर्तिदेवी पुरस्कार' देने का निर्णय लिया गया।

श्री निदा फाजली को 'शैलेन्द्र सम्मान'

रुड़की के शैलेंद्र मेमोरियल ट्रस्ट द्वारा गीतकार शैलेन्द्र की स्मृति में स्थापित 'शैलेन्द्र सम्मान' श्री निदा फाजली को दिया गया। कथाकार डॉ० महीप सिंह ने शॉल ओढ़ाकर उनका अभिनन्दन किया। प्रो० मैनेजर पाण्डेय और श्री बुद्धिनाथ मिश्र ने उन्हें स्मृति-चिह्न भेंट किया। स्व० शैलेन्द्र की पुत्रियों श्रीमती अमला मजूमदार और श्रीमती गोपा चंद्रा ने उन्हें 21 हजार रुपए की सम्मान राशि भेंट की।

'गणेश शंकर विद्यार्थी पत्रकारिता सम्मान'

माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित समारोह में 'गणेश शंकर विद्यार्थी पत्रकारिता सम्मान' वर्ष 2010 के लिए पत्रकार और जनसत्ता के सम्पादक रहे श्री रामबहादुर राय को तथा वर्ष 2011 के लिए पत्रकार एवं दैनिक भास्कर, रायपुर के पूर्व सम्पादक श्री रमेश नैयर को दिया गया। सम्मानस्वरूप उन्हें दो लाख रुपए की राशि, प्रशस्ति-पत्र एवं शॉल भेंट कर सम्मानित किया गया।

नरेशजी को शमशेर सम्मान

कविता को आनन्द की कला मानने वाले समकालीन हिन्दी कवि नरेश सक्सेना को लखनऊ में आयोजित एक समारोह में शमशेर सम्मान से विभूषित किया गया। खंडवा की संस्था 'अनवरत' द्वारा स्थापित अलंकरण प्रसंग में वरिष्ठ पत्रकार और लेखक ओम थानवी विशेष रूप से उपस्थित थे।

वागीश्वरी सम्मान

सरकार को चाहिए कि पुरस्कार में केवल पुस्तकें भेंट की जाएँ चाहे वो पहलवान को ही क्यों न दी जाएँ, किताब पढ़ने से पहलवान कमजोर नहीं होगा। किताब कभी एक्सपायर नहीं होती है और न ही यह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती हैं।

यह बात साहित्य अकादमी पुरस्कार से विभूषित देश के वरिष्ठ कवि चन्द्रकान्त देवताले ने भोपाल में मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा मायाराम सुरजन फाउण्डेशन द्वारा आयोजित वागीश्वरी पुरस्कार समारोह में कही। इस अवसर पर कथाकार पंकज सुबीर, लेखक चित्रकार अखिलेश तथा युवा कवि वसंत सकरगाए को समारोहपूर्वक वागीश्वरी पुरस्कार प्रदान किया गया।

पाँचवाँ मीरा-स्मृति-पुरस्कार-2013

मीरा फाउण्डेशन, इलाहाबाद ने साहित्य-भण्डार, इलाहाबाद के सहयोग से प्रतिवर्ष हिन्दी की रचनात्मक मेधा को पुरस्कृत करने के उद्देश्य से 'मीरा स्मृति-पुरस्कार' प्रदान करने का निर्णय लिया

साल 2013 के साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

है। पुरस्कार के रूप में रु० 25000/- (पच्चीस हजार रुपये), प्रशस्ति पत्र और शाल प्रदान किये जाते हैं। यह पुरस्कार एक वर्ष कहानी संकलन और दूसरे वर्ष कविता संकलन पर प्रदान किया जाता है।

मीरा फाउण्डेशन ने अब यह निर्णय लिया है कि 2013 से यह पुरस्कार अप्रकाशित संकलनों की पांडुलिपियों पर प्रदान किया जायेगा। इस पुरस्कार के लिए वही कहानीकार पात्र होंगे जिनकी उम्र 31 दिसम्बर, 2014 को 60 से अधिक नहीं होगी।

पांडुलिपि भेजने का पता : साहित्य भण्डार, 50-चाहचंद, जीरो रोड, इलाहाबाद-211003

19वाँ पं० प्रतापनारायण मिश्र युवा साहित्यकार सम्मान समारोह सम्पन्न

विगत दिनों भाऊराव देवरस सेवा न्यास, लखनऊ द्वारा, पं० प्रतापनारायण मिश्र स्मृति युवा साहित्यकार सम्मान समारोह फतेहपुर, उत्तर प्रदेश में आयोजित किया गया।

न्यास द्वारा आयोजित उन्नीसवाँ युवा-साहित्यकार सम्मान समारोह-2013 में पाँच विधाओं में पारंगत युवा साहित्यकारों को सम्मानित किया गया जिनमें काव्य विधा में दौसा (राजस्थान) के श्री अंजीव अंजुम को, कथा-साहित्य में लखनऊ के श्री आशीष आनन्द आर्य 'इच्छित', बाल-साहित्य में शाहजहाँपुर के डॉ० मो० अरशद खान को, पत्रकारिता में हैदराबाद के डॉ० गोरखनाथ तिवारी को व संस्कृत में सोनीपत हरियाणा की डॉ० पराम्बा श्रीयोगमाया को दस-दस हजार रुपये की सम्मान राशि के साथ माँ सरस्वती की प्रतिमा, अंगवस्त्र व प्रशस्ति-पत्र तथा पं० प्रतापनारायण मिश्र रचित साहित्य भेंट कर सम्मानित किया गया।

क़मर मेवाड़ी को देवेन्द्र स्मृति पुरस्कार

गाँधी सेवा सदन राजसमन्द के संस्थापक साहित्यकार, पत्रकार, स्वाधीनता सेनानी एवं चिंतक देवेन्द्र कर्णावट की पुण्य तिथि पर छठा देवेन्द्र स्मृति पुरस्कार वरिष्ठ साहित्यकार एवं सम्बोधन त्रैमासिक के सम्पादक क़मर मेवाड़ी को शाल, प्रशस्ति-पत्र एवं 21000/- रु० की राशि भेंट कर सम्मानित किया गया।

साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्यों का चयन

साहित्य अकादेमी ने मलयालम के प्रसिद्ध लेखक एम०टी० नायर और प्रसिद्ध उड़िया कवि सीताकांत महापात्र को अकादेमी का महत्तर सदस्य चुना है। मॉरिशस के जाने-माने कथाकार अभिमन्यु अनत को भारतीय भाषाओं और साहित्य के प्रति उनके योगदान हेतु मानद सदस्यता के लिए चुना है। महत्तर सदस्यता अकादेमी का सर्वोच्च सम्मान है। ज्ञात हो कि साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्यों की संख्या 21 से अधिक नहीं हो सकती।

राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा लेखकों को सम्मान

राजस्थान साहित्य अकादमी ने 18 लेखकों को प्रतिवर्ष दिए जाने वाले प्रतिष्ठित साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए 8 अन्य वरिष्ठ साहित्यकारों को भी सम्मानित किया।

अकादमी ने उदयपुर में आयोजित एक समारोह में भवानी सिंह को उनके लघु कथाओं के संग्रह के लिए 'मीरा पुरस्कार' के साथ 75,000/- रुपये नकद राशि देकर सम्मानित किया। श्री हरीश करमचंदानी को उनकी कविता की किताब के लिए 'सुधींद्र पुरस्कार', उपन्यास श्रेणी में सावित्री रांका को 'रांगेय राघव पुरस्कार', अतुल चटर्जी को व्यंग्य के लिए 'के०एल० सहगल पुरस्कार' और इन्दु शर्मा को अनुवाद के लिए 'आलमशाह पुरस्कार' के साथ ही प्रत्येक को 31,000/- रुपये की नकद राशि भी दी गई।

रणवीर सिंह, डॉ० मदन केवलिया, डॉ० सुदेश बत्रा, डॉ० क्षमा चतुर्वेदी, मुरलीधर वैष्णव, भागीरथ, सुरेंद्र चतुर्वेदी और डॉ० एस०एन० व्यास को 51,000/- रुपये की नकद राशि के साथ साहित्यकार पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

खुशवंत सिंह को Lifetime Achievement पुरस्कार

विगत दिनों मुंबई लिट्फेस्ट 2013 के दौरान प्रतिष्ठित साहित्यकार श्री खुशवंत सिंह को Lifetime achievement पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

98 वर्षीय श्री खुशवंत सिंह की अनुपस्थिति में उनकी ओर से यह पुरस्कार उनके नजदीकी दोस्तों श्री त्रिलोचन साहनी व श्री बीर शानेयों ने ग्रहण किया। भारतीय साहित्य में उनके अभूतपूर्व योगदान के लिए इस पुरस्कार के अंतर्गत उन्हें एक सम्मान पत्र, चांदी का फलक तथा 5,00,000/- रुपये की नकद राशि प्रदान की गई। इससे पहले यह पुरस्कार सन् 2012 में श्री वी०एस० नायपाल को तथा सन् 2011 में श्रीमती महाश्वेता देवी को दिया गया था।

माता किशोरी देवी पुरस्कार वितरण समारोह सम्पन्न

विगत 29 दिसम्बर को सिलचर, मेहरपुर में माता किशोरी देवी स्मृति प्रतियोगिता के उपलक्ष्य में आयोजित चित्रकला, निबन्ध एवं कढ़ाई की राष्ट्रीय प्रतियोगिता के परिणाम घोषित कर इन प्रविष्टियों की एक प्रदर्शनी आयोजित की गई। प्रदर्शनी का उद्घाटन मुख्य अतिथि मालती पांडेय (सामाजिक कार्यकर्ता) एवं आ०एन० पांडेय (प्रबंधक, अरुणाबंद बागान) ने किया। प्रतियोगिता में 12 राज्यों के बच्चों ने भाग लिया। जिन्हें विभिन्न आयु वर्ग में क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया। प्रो० नित्यानन्द पाण्डेय (संरक्षक) ने स्वागत भाषण दिया, शुभदा पाण्डेय (आयोजिका) ने आभार ज्ञापित किया।

प्रविष्टियाँ आमंत्रित

स्व० अंबिका प्रसाद दिव्य की स्मृति में प्रदान किए जाने वाले अनेक साहित्यिक पुरस्कारों हेतु कृतियाँ आमंत्रित हैं। पुस्तकें जनवरी 2011 से 31 दिसम्बर, 2013 के मध्य प्रकाशित होनी चाहिए। उपन्यास, कहानी, कविता, निबंध एवं व्यंग्य विधा हेतु पुस्तकों की दो प्रतियाँ, प्रत्येक प्रविष्टि के साथ सौ रुपए प्रवेश शुल्क, लेखक के दो रंगीन चित्र एवं परिचय 30 जून 2014 तक श्रीमती राजो किंजल्क, साहित्य सदन, प्लॉट नं० 145-ए, साईंनाथ नगर, सी-सेक्टर, कोलार रोड, भोपाल-462042 (मध्यप्रदेश), पर भेज सकते हैं।

पाठकों के पत्र

भारतीय वाङ्मय का अप्रैल-मई अंक मिला। लघु कलेवर की इस पत्रिका में आप इतनी अधिक पाठ्य सामग्री सजाते हैं कि आश्चर्य होता है।

लेख और सूचनाएँ तो नखदर्पण जैसी है, और आपके प्रकाशनों की समीक्षाएँ भी अपने आप में लेख हैं, जो ज्ञानवर्धन करते हैं, साथ ही शेष अंश के पढ़ने की पिपासा भी जगाते हैं। आप पुरुषोत्तमदास जी का नाम रौशन कर रहे हैं।

—दयानन्द वर्मा, नई दिल्ली

भारतीय वाङ्मय का अंक प्राप्त। धन्यवाद।

हिन्दीतर भाषाओं के साहित्यिक समाचारों को भी आप उचित स्थान दे रहे हैं, यह बड़ी प्रसन्नता की बात है। पर इन भाषाओं के लेखकों के नाम जब रोमन लिपि के माध्यम से नागरी में लिप्यांतरित करते हैं तब अशुद्धियाँ आ सकती हैं।

उदाहरण के लिए देखें, सुगाथा कुमारी को सरस्वती सम्मान। जिस मलयालम कवयित्री को सरस्वती सम्मान मिल रहा है उनका नाम सुगत कुमारी है। रोमन लिपि में यह नाम लिखा जाता है Sugatha Kumari। नागरी में लिप्यंतरण करते समय ग को गा तथा त को था कर दिया गया। सोचिए, ऐसी अशुद्धियों से कैसे बचा जा सकता है।

—के०जी० बालकृष्ण पिल्लै

तिरुअनन्तपुरम

प्रतिष्ठित, सुपरिचित पत्रिका 'भारतीय वाङ्मय' देखने, पढ़ने का सौभाग्य 'सु-साहित्य पुस्तकालय' में हुआ। प्रत्येक अंक बेहतर से बेहतरीन है। प्रत्येक अंक रुचिकर, ज्ञानवर्धक व पठनीय है।

आपके इस सु-प्रयास के लिये सम्पादक मंडल बधाई व साधुवाद के पात्र हैं।

—सन्तोष बी० गुप्ता, अमरावती

पुस्तक परिचय

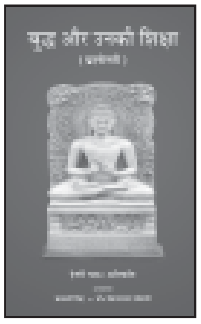

बुद्ध और उनकी शिक्षा

(प्रश्नोत्तरी)

हेनरी यस०ऑल्कॉट

अनु० : **छत्रधारी सिंह**

डॉ० प्रेमनारायण सोमानी

प्रथम संस्करण : 2014 ई०

पृष्ठ : 96

सजि. : रु० 200.00 ISBN : 978-81-89498-66-5

अजि. : रु० 100.00 ISBN : 978-81-89498-67-2

प्रकाशक : अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

समय के तीव्र प्रवाह के साथ विचारों में भी उतनी ही गति से परिवर्तन होना स्वाभाविक है। गतिशील जीवन-शैली व सामूहिक सोच ने हमें सकल विश्व को एक इकाई के रूप में पहचान करने को विवश कर दिया है। विश्व के विभिन्न धर्म जहाँ एक-दूसरे से अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए छिद्रान्वेषण में लग जाया करते हैं, वहीं अब किसी सार्वभौमिक, सार्वलौकिक सार्वजनीन व सर्वदेशीय धर्म की तलाश होने लगी। बुभुक्षाभरी जिज्ञासा ने थियोसॉफिकल सोसाइटी के संस्थापक अध्यक्ष (स्व०) हेनरी यस० ऑल्कॉट का ध्यान 'भगवान् बुद्ध' के विचारों की ओर आकर्षित किया। उन्होंने बुद्ध-धर्म व उनके विचारों में वह सब कुछ पाया, जिसकी आवश्यकता आज के विश्व को थी। धर्म केवल जानने के लिए नहीं, प्रत्युत् धारण करने के लिए होता है। यह जीवन जीने की वास्तविक कला सिखाता है। अर्थ, काम, मोक्ष का प्रदाता है। इसीलिए 1881 में उन्होंने अंग्रेजी में यह पुस्तक लिखी थी। यह पुस्तक प्रश्नोत्तरी के रूप में अपनी विशेषताओं के कारण थोड़े ही समय में इतनी लोकप्रिय हो गयी कि यह अगणित संस्करणों के साथ यूरोप तथा विश्व की अनेक भाषाओं में प्रकाशित होने लगी। कुछ देशों ने तो इसे विद्यालयों की पाठ्य-पुस्तक के रूप में भी स्वीकृत कर दिया। पर हिन्दी में अब तक इसका अनुवाद न होना वस्तुत: एक दुर्भाग्यपूर्ण पहलू था। अत: सबके कल्याण हेतु हिन्दी-भाषी लोगों के लिए इसका हिन्दी अनुवाद उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया है। धर्म की इतनी संक्षिप्त पर पूर्ण, सरल, सटीक, स्पष्ट तथा उपयोगी व्याख्या कदाचित् ही कहीं मिले।

भगवान् बुद्ध की शिक्षा अत्यन्त सरल है। यह प्रकृति के शाश्वत नियम पर आधारित सार्वकालिक, सार्वजनिक, सार्वभौमिक मानव-मात्र के उत्थान व कल्याण के लिए एक मार्ग है। इसे धर्मविशेष कहकर संकुचित करना अनुचित है। जो भी 'आर्य अष्टांगिक' मार्ग पर चलेगा, अपना उत्थान कर लेगा। यह शिक्षा नैतिकता और अध्यात्म से ओतप्रोत है। इसमें न कोई कर्मकाण्ड है, न कोई आडम्बर। सहज, सीधा मार्ग है। जो इस पर चलेगा, उसे प्रतिफल तत्काल मिलता है, यही इसकी विशेषता है। चाहे कोई बुद्धिजीवी हो या कोई अनपढ़ गँवार हो, सबके लिए यह सुगम मार्ग है। इसीलिए लोग अब इस दिशा की ओर मुड़ने लगे हैं। जीवन छोटा है, समय का नितान्त अभाव है, सामने पुस्तकों के जंगल पड़े हैं। बुद्ध के विचार कैसे जाने जायँ? हेनरी यस० ऑल्कॉट की यह पुस्तक 'गागर में सागर' की उक्ति को चरितार्थ करती है। इस छोटी-सी पुस्तक में चमत्कार ही चमत्कार हैं जिसमें बुद्ध भगवान् द्वारा बतलाये गये उच्च और आदर्श विचारों को प्रारम्भ में समझने तथा अनुभव करने के लिए मुख्य रूप से बौद्ध इतिहास, नियम व दर्शन का संक्षिप्त, पर पूर्ण मौलिक ज्ञान कराने का प्रमुख उद्देश्य ध्यान में रखा गया, जिससे उसे विस्तार से समझने में आसानी हो सके। इस पुस्तक में तथ्यों को 5 वर्गों में बाँट दिया गया है—यथा : (1) बुद्ध का जीवन, (2) उनके नियम, (3) संघ, विहार के नियम, (4) बुद्धधर्म का संक्षिप्त इतिहास, इसकी परिषद् व प्रसार (5) विज्ञान से बुद्धधर्म का समाधान। इससे, इस छोटी-सी पुस्तक का महत्व काफी बढ़ जाता है और सर्वसाधारण व बौद्ध-शिक्षालयों में उपयोग के लिए यह और भी सार्थक बन जाती है।

साहित्य-सुमन

(पं० बालकृष्ण भट्ट के रसीले लेखों का संग्रह)

भट्टजी की यादें

(पं० बालकृष्ण भट्टजी के संस्मरण)

पं० बालकृष्ण भट्ट

ब्रजमोहन व्यास

सम्पादक : **लक्ष्मीधर मालवीय**

प्रथम संस्करण : 2014 ई०

पृष्ठ : 200

सजि. : रु० 350.00 ISBN : 978-93-5146-050-3

अजि. : रु० 130.00 ISBN : 978-93-5146-051-0

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के समकालीन पं० बालकृष्ण भट्ट वर्तमान युग की हिन्दी के जन्मदाताओं में समझे जाते हैं। वह भारत माता के गत शताब्दि के उन अल्प-संख्यक सुपुत्रों में थे जो किसी न किसी रूप में मातृभूमि के सेवा को अपने जीवन का प्रधान उद्देश्य बना, नर-जन्म के साफल्य का उदाहरण संपादन कर गये हैं।

इस गुटिका में जो भट्टजी के लेख संग्रहीत हैं वे उनकी उच्च धारणा और अनाक्रम्य सत्य-प्रियता के प्रतिबिम्ब हैं; उनकी सार्वलौकिक हित-निष्ठा के साथ ही उनकी असाधारण प्रतिभा और बुद्धि-प्रखरता के साक्षी हैं। इनका अध्ययन पाठक को असामान्य मनस्विता के असीम साम्राज्य में ले जाकर अपरिमित मनोज्ञता की सैर कराता है।

इस पुस्तक माला में साहित्य और नीति सम्बन्धी सब २५ लेख के गुच्छे चुन चुन के सजाये गये हैं। इन लेखों को पढ़ कर भट्टजी की लेखनी का पूर्ण स्वाद मिल सकता है। भट्टजी के स्वसम्पादित ३२ साल के "हिन्दी प्रदीप" में स्थान स्थान पर ये लेख जगमगा चुके हैं। पर इनकी तरोताज़गी, चटकीलेपन और रसीलेपन में कहीं से भी बासीपन की गंध नहीं झलकती। भट्ट जी के रसीले पाठक जब ही इनका स्वाद चक्खेंगे कहीं से भी सुगन्ध की कमी इनमें न पावेंगे। भट्टजी उन थोड़े से प्रतिभाशाली लेखकों में से थे जिन्होंने आधुनिक "हिन्दी प्रदीप" के द्वारा बहुतों को हिन्दी लिखना सिखा दिया। भट्टजी का "हिन्दी प्रदीप" सदा शुद्ध हिन्दी की ज्योति से जगमगाता रहा। वह अन्य भाषाओं के उच्छिष्ट लेखों की सहायता से कभी प्रकाशित नहीं हुआ। जिस तरह से भट्टजी की भाषा शुद्ध हिन्दी रहती थी उसी तरह उनके लेख भी उन्हीं के विचार की उपज रहते थे, किसी की छाया अथवा अनुवाद नहीं। वे जो कुछ लिखते थे अपने दिमाग से लिखते थे। भट्टजी के लेखों में यह प्रधान गुण है। भट्टजी की हिन्दी में भट्टजी की छाप लगी हुई है। उनकी भाषा उन्हीं की अपनी भाषा है। भट्टजी की भाषा से एक अनोखा रस टपकता है, जो अन्य लेखकों की भाषा में मिलना प्रायः कठिन है। इस संग्रह में दिये गये लेखों से पाठकों को भट्टजी की भाषा का पूरा पूरा रसास्वादन मिल जायगा।

भट्टजी के निबंधों का यह संग्रह 'साहित्य सुमन' भट्टजी के देहांत के चार साल बाद सन् १९१८ में उनके सुपुत्र ने प्रकाशित कराया था। इसकी एक प्रति मुझे अपने घर में मिली थी। पुराने की चिन्हानी के रूप में मैं इसे अपने पास सुरक्षित रखे था - फिर इसे अपने साथ जापान ले आया था। यह टूटकर बिखर गए सतलड़े हार के चंद मनकों के समान मूल्यवान लगता है, साथ ही खो गए दानों के लिए मलाल भी पैदा करता है। अब लगभग सौ वर्ष बाद यह लेख संग्रह पुनः प्रकाश में आ रहा है।

पं० ब्रजमोहन व्यास द्वारा लिखे गए भट्टजी के संस्मरण सरस्वती पत्रिका में जून १९५८ से लेकर जून १९५९ के अंकों में निकले थे। व्यासजी भट्टजी के जामाता तो बाद में हुए, किशोरावस्था में भट्टजी से उन्होंने संस्कृत पढ़ी थी। अंतरंग परिचय के ये संस्मरण अपने आप में बेजोड़ हैं।

भट्टजी के ये थोड़े से निबंध तथा व्यासजी के संस्मरण - इतना ही मैं बटोर सका, हिंदी साहित्य संसार की सेवा में अर्पित करने के लिए!

—लक्ष्मीधर मालवीय

क्योतो, जापान

भारतीय संस्कृति के तीन सोपान

प्रो० राजाराम शास्त्री

सम्पादक

प्रो० सत्यप्रकाश मित्तल

प्रथम संस्करण : 2014 ई०

पृष्ठ : 116

सजि. : रु० 220.00 ISBN : 978-93-5146-041-1

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

प्रोफ़ेसर राजाराम शास्त्री का व्यक्तित्व किसी परिचय का मोहताज नहीं है। तलस्पर्शी अध्ययन, गहन चिन्तन एवं प्रामाणिक लेखन ने उन्हें महाप्राण में परिणत किया है। राष्ट्रप्रेम की चेतना एवं लोक-मंगल की भावना ने उन्हें भारतीयता से सम्पृक्त किया है एवं स्वतंत्रता-संघर्ष की ज्वाला में तपाकर उनके व्यक्तित्व को सँवारा है। समर्पित एवं संघर्षशील जीवन की संजीवनी ने उनके अनुभव एवं लेखन को ऊर्जस्वित किया है।

अध्ययन एवं अनुभव का प्रत्यक्ष फल व्यवहार है। व्यवहार ही सिद्धांत की कसौटी है। हम सिद्धांत के रूप में कुछ सीखते हैं तो उसे व्यवहार में उतारते हैं। व्यवहार यदि अनुकूल नहीं हुआ तो सिद्धांत में अपेक्षित परिवर्तन करते हैं। इससे परिवर्तित एवं परिष्कृत वस्तुस्थिति की निर्मिति होती है। शास्त्रीजी के प्रस्तुत निबंधों में इसी अध्ययन एवं कार्य-प्रणाली का प्रतिपादन किया गया है एवं उसके प्रकाश में समकालीन सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक प्रवृत्तियों का आकलन किया गया है।

अध्ययन, चिंतन एवं अनुभूति के समन्वयन की प्रखरता ने उनके निबंधों को समाजोपयोगी एवं व्यावहारिक बनाया है।

प्रस्तुत ग्रंथ में बाईस लेखों को संगृहीत किया गया है। इनके अंतर्गत लेखक ने मानव समाज की संरचना एवं विकास की संक्षिप्त किन्तु ऐतिहासिक झलक प्रस्तुत की है। लेखों के शीर्षक विचारोत्तेजक एवं गवेषणात्मक हैं। वे समकालीन समाज के विभिन्न आयामों को समझने के लिए अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। सृष्टि-सर्जन की प्रक्रिया अत्यंत जटिल है। मानवीय स्वभाव के विकास में बाह्य एवं आंतरिक दोनों प्रकार की प्रेरणाओं का योगदान है। सृष्टि में हमें नानात्व का दर्शन होता है। लेकिन नानात्व के परिधान में कुछ ऐसा भी है जो हमें आंतरिक एकात्मकता का दर्शन कराता है। डारविन ने विकासवाद के प्रतिपादित सिद्धांत में उन बहुमुखी कारणों का विश्लेषण किया है जो विकास की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। भाषा, सभ्यता, संस्कृति, जाति-व्यवस्था, वर्ण-व्यवस्था, जन-व्यवस्था, धर्मनिरपेक्षता, राष्ट्रवाद की अवधारणा, अपरिग्रह की भावना, भारतीय संस्कृति एवं परिवर्तन की चुनौतियाँ, स्वार्थ एवं परमार्थ का सामंजस्य आदि ऐसे विचार-बिंदु हैं जिन्हें अलग-अलग लेखों में उठाया गया है। विद्वान् लेखक ने देश एवं काल के बदलते परिप्रेक्ष्य में इन विषयों पर विभिन्न दार्शनिकों द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों का यथोचित विश्लेषण एवं परीक्षण किया है तथा यत्र-तत्र अपना स्वतंत्र अभिमत भी दिया है। इन लेखों का शैक्षणिक महत्त्व असंदिग्ध है।

प्राचीन भारतीय शिक्षण-पद्धति

प्रो० अनंत सदाशिव अलतेकर

प्रथम संस्करण : 2014 ई०

पृष्ठ : 240

सजि. : रु० 400.00 ISBN : 978-81-89498-68-9
अजि. : रु० 175.00 ISBN : 978-81-89498-69-6

प्रकाशक : अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

आजकल प्राचीन भारतीय संस्कृति के विषय में भारत में तीव्र जिज्ञासा उत्पन्न हुई है। उसके अनेक पहलुओं को जानने के लिए सामान्य जनता भी उत्सुक है। उनको प्राचीन शिक्षण-पद्धति का साधारण व सम्पूर्ण ज्ञान देने के लिए यह पुस्तक लिखी गयी है। सामान्य पाठक, ऐतिहासिक संशोधक व शिक्षाशास्त्र के विद्यार्थी इन तीन प्रकार के वाचकों की दृष्टि से यह पुस्तक लिखी गयी है। पुस्तक का विषय इस तरह से प्रतिपादित किया गया है कि सामान्य पाठक भी उसे सुगमता से समझ सकें। कठिन विषय व विवादभूत मत प्राय: पाद-टिप्पणियों में या परिशिष्टों में रखे गये हैं ताकि पुस्तक का मुख्य विषय सर्व पाठक सुलभतया समझें।

किन आधारों पर प्राचीन शिक्षण-पद्धति का चित्र रेखित किया गया है, यह जानने के लिए शिक्षणशास्त्री उतने उत्सुक नहीं होते हैं जितना शिक्षण-पद्धति के मूलभूत सिद्धान्तों के मूल्यांकन में। उनकी जिज्ञासा-पूर्ति के लिए शिक्षण का स्वरूप व ध्येय, उनके आधारभूत सिद्धान्त व धारणाएँ, शिक्षण-पद्धति की सफलताएँ व विशेषताएँ इत्यादि विषयों का विस्तृत विवेचन पृथक्-पृथक् अध्यायों में किया गया है। विवेचन तुलनात्मक करने के लिए प्राचीन ग्रीक, रोमन, मध्ययुगीन व अर्वाचीन शिक्षाशास्त्रियों के मतों का उल्लेख व विवेचन जगह-जगह किया गया है। आशा है कि तुलनात्मक शिक्षणशास्त्र के अभ्यासी इस ग्रन्थ में पर्याप्त अध्ययन- सामग्री पा सकेंगे। जहाँ तक हो सका शिक्षण-पद्धति का सम्पूर्ण चित्र देने का प्रयत्न यहाँ किया गया है।

यह पुस्तक काफी समय से अप्राप्य थी। अथक प्रयासों से इसे पुन: पाठकों, अध्येताओं के लिए सुलभ कराया गया है।

स्मृतियों के मील-पत्थर

(संस्मरण)

उद्भ्रान्त

प्रथम संस्करण : 2014 ई०

पृष्ठ : 180

सजि. : रु० 350.00 ISBN : 978-81-89498-70-2
अजि. : रु० 130.00 ISBN : 978-81-89498-71-9

प्रकाशक : अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

'स्मृतियों के मील-पत्थर' हिंदी के ख्यातनाम वरिष्ठ कवि उद्भ्रांत के संस्मरणों की पहली किताब है जिसमें वे उन महाभाग अग्रज कवियों-कथाकारों को स्मरण करते हैं जिनसे अपनी सृजनयात्रा के प्रारम्भिक चरण में ही प्रभावित होकर संपर्क में आये और उनके स्नेहजल से सिंचित होकर साहित्य के क्षेत्र में अपने कदम मज़बूती से रखे। सर्वश्री हरिवंशराय बच्चन, अमृतलाल नागर, अज्ञेय, यशपाल, भगवती प्रसाद वाजपेयी, शिवमंगल सिंह सुमन, हरिनारायण व्यास, प्रतापनारायण श्रीवास्तव, अमृतराय, शिवकुमार मिश्र, वीरेंद्र मिश्र और रामानंद दोषी पर लिखे गए ये संस्मरण जब 'जनसत्ता', 'पाखी', 'गगनांचल', और 'जनसंदेश टाइम्स' में छपे तो अपनी जादुई भाषाशैली के कारण देश के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त हिन्दी पाठकों के विशाल समूह ने इन्हें बेहद पसंद किया। इनमें लक्ष्य साहित्यकार के जीवन के अनछुए प्रसंग तो थे ही, लेखक के साथ समय-समय पर हुई वार्ताओं के ब्यौरों के कारण उनका अंतरंग भी उभरकर सामने आया था।

यहाँ कवि का 'मेरे अध्यापक' नामक वह प्रसिद्ध संस्मरण भी है जिसमें उसने औपचारिक शिक्षा के आरंभ से अंत तक के अपने लगभग सभी अध्यापकों को स्मरण किया था और 'अक्षरपर्व' के जून, 2013 अंक में संपूर्ण, फिर दैनिक 'जनसंदेश टाइम्स' के 15 सितंबर, 2013 के अंक से प्रारंभ कर पाँच किस्तों में धारावाहिक प्रकाशित हो जिसने सैकड़ों पाठकों की सराहना पाई—अपनी रोचकता के साथ इस तथ्य के कारण भी कि साहित्य में इस तरह का उपक्रम किसी साहित्यकार द्वारा पहली बार किया गया।

जैसा कि उद्भ्रांत जी ने अपनी संक्षिप्त भूमिका में कहा है, हमें आशा है कि वे अपनी संस्मरणमाला को आगे बढ़ायेंगे और हमें ऐसे अद्भुत संस्मरणों की अगली कड़ी शीघ्र ही देखने को मिलेगी।

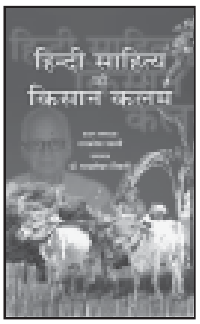

हिन्दी साहित्य की किसान कलम (विवेकी राय)

सम्पादक :
डॉ० रामप्रवेश शास्त्री
डॉ० चन्द्रशेखर तिवारी

प्रथम संस्करण : 2013 ई०

पृष्ठ : 216

सजि. : रु० 300.00 **ISBN : 978-81-7124-988-6**

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

गाँव के सुख-दु:ख के सहज साक्षी, भोक्ता एवं द्रष्टा डॉ. विवेकी राय जी देश के उन कुछ प्रमुख लेखकों में से हैं जो खूब पढ़े जाते हैं। कारण, गँवई मिट्टी में पले-बढ़े साहित्य-साधक डॉ. राय किसान पहले हैं, शिक्षक और लेखक बाद में। उम्र के नवासी (89) बसन्त देख चुके डॉ. राय आज भी गाँव से प्रत्यक्ष तौर पर जुड़े हुए हैं। उनकी किसी रचना में न तो पिष्टपेषण दिखायी देता है और न ही स्तरहीनता। उनके पास गाँव की इतनी भरपूर सामग्री है कि वह कभी अवशिष्ट भी नहीं होने पाती। परिणाम, स्तर, मौलिकता एवं प्रस्तुति के बाँकपन के आधार पर उनका लेखन अप्रतिम है और डॉ. राय अपनी सृजनधर्मिता के बल पर प्रतिमान बनने की क्षमता रखते हैं। उम्मीद है कि इस 'अप्रतिम' और 'प्रतिमान' को समझने में प्रस्तुत कृति सहायक सिद्ध होगी।

आलोचक के भेस में

(आलोचना)

उद्भ्रान्त

प्रथम संस्करण : 2014 ई०

पृष्ठ : 168

सजि. : रु० 350.00 **ISBN : 978-93-5146-045-9**
अजि. : रु० 130.00 **ISBN : 978-93-5146-046-6**

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

वरिष्ठ और विशिष्ट कवि उद्भ्रान्त हिन्दी के विस्तृत आकाश में विगत आधी सदी से निरंतर चमकते एक ऐसे नक्षत्र हैं जो साहित्य की प्राय: सभी विधाओं में प्रचुर मात्रा में महत्त्वपूर्ण कार्य करते हुए अपनी मिसाल आप बनते हैं। बीसवीं सदी के गौरव, महाप्राण पंडित सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के बाद संभवत: वे अकेले साहित्य मनीषी हैं जिन्होंने काव्य के समस्त रूपों—महाकाव्य, खण्डकाव्य, गीत, नवगीत, ग़ज़ल, मुक्तक, मुक्तछंद और समकालीन यथार्थवादी कविता के साथ गद्य की विभिन्न विधाओं—कहानी, उपन्यास, निबन्ध, संस्मरण और बाल साहित्य तक में भी सफलतापूर्वक प्रभावी कलम चलाते हुए अपनी विविधवर्णी, नव-नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा से हिन्दी के विशाल पाठक वर्ग को चकित और सम्मोहित किया है।

इसी क्रम में अब हम हिन्दी पाठकों को उनके समीक्षकीय-सह-आलोचकीय रूप से भी परिचित कराते हुए यह महत्त्वपूर्ण पुस्तक प्रस्तुत कर रहे हैं—'आलोचक के भेस में', जिसमें विगत 40-45 वर्षों की सुदीर्घ अवधि में उनके द्वारा समय-समय पर की गयी पुस्तक समीक्षाएँ और समालोचनायें शामिल हैं।

साहित्यिक विमर्श में रुचि रखने वाले सुधी पाठकों के साथ-साथ लेखक के अपने वृहद पाठकवर्ग के लिए भी उनका यह नया अवतार नि:संदेह आकर्षक और विमर्शोत्सुक सिद्ध होगा।

सभी पुस्तकालयों के लिए अनिवार्यरूपेण एक जरूरी किताब।

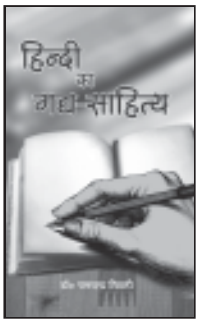

हिन्दी का गद्य साहित्य

(नवम् अद्यतन संशोधित संस्करण)

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

नवम संस्करण : 2014 ई०

पृष्ठ : 968

सजि. : रु० 1250.00**ISBN : 978-93-5146-039-8**
अजि. : रु० 750.00 **ISBN : 978-93-5146-040-4**

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

'हिन्दी का गद्य-साहित्य' का आठवाँ संस्करण जनवरी सन् 2012 ई० में प्रकाशित हुआ था। दो वर्ष बाद अब यह नवम संस्करण आपके हाथों में है। दो वर्षों में ही इसका नया संस्करण होना इस महत्त्वपूर्ण कृति की दिन-प्रतिदिन बढ़ती उपादेयता एवं लोकप्रियता का द्योतक है। इस बीच इस पुस्तक के लेखक डॉ० रामचन्द्र तिवारी का निधन (4 जनवरी 2009 ई० को) हो गया। प्रस्तुत संस्करण को यथासम्भव सभी दृष्टियों से समृद्ध बनाने का कार्य लेखक के चतुर्थ पुत्र डॉ० प्रेमव्रत तिवारी ने किया है। इस क्रम में पुस्तक के तीनों खण्डों में पर्याप्त परिष्कार और परिवर्तन करना पड़ा है, विशेषत: दूसरे खण्ड में विगत दो वर्षों से गद्य साहित्य की विविध विधाओं में प्रकाशित होने वाली पूरी सामग्री का समावेश और सारगर्भित आकलन अत्यन्त श्रमसाध्य कार्य था, डॉ० प्रेमव्रत तिवारी ने इसे पूर्ण निष्ठा से पूरा किया है। वे इसके लिए बधाई के पात्र हैं। शेष गद्यकारों के मूल्यांकन में यथास्थान नयी सामग्री जोड़ दी गयी है। प्रूफ सम्बन्धी गलतियाँ भी यथासम्भव ठीक कर दी गयी हैं। इस प्रकार 'हिन्दी का गद्य-साहित्य' अब हिन्दी गद्य की नवीनतम प्रवृत्तियों के विवेचन विश्लेषण से समृद्ध एक नितान्त उपयोगी सन्दर्भ-ग्रन्थ बन गया है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी संसार पहले की तरह इस महत्त्वपूर्ण कृति का स्वागत करेगा और निकट भविष्य में ही इसका नया संस्करण प्रकाशित करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

हिन्दी निबंध और निबंधकार

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

द्वितीय संस्करण : 2013 ई०

पृष्ठ : 180

सजि. : रु० 300.00 **ISBN : 978-81-7124-750-9**
अजि. : रु० 175.00 **ISBN : 978-81-7124-751-6**

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

हिन्दी-निबंध-लेखन का प्रारम्भ भारतेन्दु-युग (1887-1900 ई०) से स्वीकार किया जाता है। इस युग को हिन्दी-नवजागरण का द्वितीय चरण कहा गया है।

आज हिन्दी-निबंध साहित्य के पिछले सवा-सौ वर्षों के लम्बे इतिहास को देखते हुए जब हम उसकी उपलब्धियों का आकलन करते हैं तो चकित रह जाना पड़ता है। नवजागरण के आलोक में अपनी भाषा को अपनी जातीय अस्मिता के अभिलक्षण-रूप में सामने रखकर हमने अपनी यात्रा आरम्भ की थी। क्रमश: अपनी भाषा, अपने देश और लोक-हित की भावनाओं को लक्ष्य बनाकर हम आगे बढ़े। इस क्रम में हमने अपनी सामाजिक जड़ता को तोड़ा और स्वाधीन चेतना को रचना के केन्द्र में रखकर औपनिवेशिक चिन्तन के धुँधलके को साफ करते हुए अपनी संस्कृति और साहित्य के उज्ज्वल पक्ष को सामने रखा। हमारा निबंध-साहित्य हमारी इस सम्पूर्ण रचना-यात्रा का साक्षी है। भाषा, शैली, वाक्य-संरचना, उक्ति-भंगिमा, संवेदना-संस्पर्श, व्यक्तित्व-व्यंजना के वैविध्य एवं विस्तार तथा लालित्य-विधान की दृष्टि से भी हिन्दी-निबंध की समृद्धि आश्वस्ति प्रदान करनेवाली है। हमें अपनी इस उपलब्धि पर सन्तोष और गर्व है। हम अपने भविष्य के प्रति पूर्ण आश्वस्त हैं। जब तक रचना का सम्बन्ध स्वाधीन चेतना से बना रहेगा, हिन्दी-निबंध अपने उत्कर्ष, विस्तार और वैविध्य को सुरक्षित रखते हुए विकसित और समृद्ध होता रहेगा।

रावण की सत्यकथा

रामनगीना सिंह

द्वितीय संस्करण : 2014 ई०

पृष्ठ : 100

अजि. : रु० 80.00 **ISBN : 978-93-5146-030-5**

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

'रावण की सत्यकथा' नामक पुस्तक अब तक की जन-भावनाओं और विश्वासों तथा मान्यताओं को सही सन्दर्भ में रखने और देखने का प्रयत्न है। अब तक रावण को दिशाविहीन, अत्याचारी, वीभत्स और बलात्कारी के रूप में चित्रित किया जाता रहा है। सच कहिये तो रावण अत्याचार, अन्याय और पापाचार का प्रतीक बन गया है। इस धारणा को अन्यथा सिद्ध करने का लेखक का प्रयत्न श्लाघ्य है। रावण को प्राय: राक्षस के वीभत्स रूप में जानने और सुनने की मान्यता समाज में विद्यमान है, परन्तु इस पुस्तक में रावण के गुणों एवं आदर्शों का जैसा वर्णन मिलता है, वह अनूठी बात है।

रावण अन्य मनुष्यों की भाँति एक शिष्ट व्यवहारकुशल और महत्वाकांक्षी व्यक्ति था। उसके पास शारीरिक बल के साथ बुद्धि भी थी जिससे वह अपनी महत्वाकांक्षी योजनाओं को कार्यरूप में परिणत कर सकता था। संयोग की बात थी कि उसे अनुकूल विचार वाले अनुशासित साथी भी मिले, जिससे उसे विजय पर विजय मिलती गयी और वह एक चक्रवर्ती सम्राट् बन गया।

रावण को मात्र राक्षस कहकर टाल देना उसके प्रति बहुत बड़ा अन्याय है। वह पुलस्त्य महर्षि का पौत्र, विश्रवा का पुत्र था इसीलिए उसे पौलस्त्य कहते हैं। मात्र उसकी माँ ही राक्षस कुल से थी। देव, राक्षस और व्रात्य ये तीन प्रमुख जातियाँ थीं। राक्षस कहने का अर्थ यह नहीं कि राक्षस के सींग होते हैं या चेहरा कुरूप होता है। रावण अपने समय का एक बलिष्ठ, सुन्दर और सुशील नवयुवक था जिसने सुन्दरी मन्दोदरी को स्वयंवर में जीता था।

रावण शिव का अनन्य भक्त था। उसके शिवस्तोत्र आज भी शिवभक्तों के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। उसे दशमुख इसलिए नहीं कहते थे कि वह स्वरूप था और उसके दस मुँह थे। यह तो हमारी अज्ञानता और ओछी प्रकृति का सूचक है।

रावण एक असाधारण, प्रतिभासम्पन्न और कुशल नीतिज्ञ शासक था। यह बात दूसरी है कि वृद्धावस्था में उसे राम-रावण युद्ध में मात खानी पड़ी। रावण को सही सन्दर्भ में रखकर मूल्यांकन करने का लेखक का प्रयत्न स्तुत्य है।

संत रज्जब

डॉ० नन्दकिशोर पाण्डेय

तृतीय संस्करण : 2014 ई०

पृष्ठ : 212

सजि. : रु० 300.00 **ISBN : 978-93-5146-028-2**

अजि. : रु० 150.00 **ISBN : 978-93-5146-029-9**

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

रज्जब भक्ति आन्दोलन के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। दुर्भाग्य से भक्ति आन्दोलन के सन्दर्भ में हम जिन कवियों की चर्चा करते हैं उनमें रज्जब छूट जाते हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास में सर्वाधिक मुस्लिम कवि भक्तिकाल में हुए। रज्जब, रहीम और रसखान के बाद के हैं। जायसी जैसे सूफी कवि के भी बाद के। ये न रामभक्त कवि हैं न कृष्णभक्त। ये राम-रहीम और केशव-करीम की एकता के गायक हैं। निर्गुण संत हैं। दादूदयाल के प्रमुख शिष्यों में से एक।

कबीर के बोध को जन-जन तक पहुँचाने में दादूपंथी संतों की बड़ी भूमिका है। संख्या की दृष्टि से दादू के जीवन में ही जितनी बड़ी संख्या में शिष्य-प्रशिष्य दादू के बने, सम्भवत: उतने शिष्य किसी अन्य संत के नहीं। दादूपंथी संतों में एक बहुत बड़ी संख्या पढ़े-लिखे संतों की है। जगजीवनदास जैसे शास्त्रार्थी, सुन्दरदास जैसे प्रकाण्ड शास्त्र पण्डित और साधु निश्चलदास जैसे दार्शनिक दादूपंथी ही थे। संत साहित्य के संरक्षण और संवर्धन की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य दादूपंथियों ने किया। इन संतों ने अपने गुरु की वाणियों को संरक्षित तो किया ही, पूर्ववर्ती तमाम संतों की वाणियों का संरक्षण भी किया। ऐसे संतों में रज्जब का नाम महत्त्वपूर्ण है। रज्जब ने संग्रह, सम्पादन की नयी तकनीक विकसित की। सम्पूर्ण संत साहित्य को रागों और अंगों में विभाजित किया। विभिन्न अंगों में सम्बन्धित विषय की साखियाँ चुन-चुनकर रखी गयीं। यह बहुत बड़ा काम था। रज्जब ने यह काम तब किया जब अपने ही लिखे के संरक्षण की बात बहुत मुश्किल थी। रज्जब के संकलन में एक, दो, दस नहीं; 137 कवि हैं। एक ओर इस संग्रह में कबीर, रैदास जैसे पूर्वी बोली के संत हैं तो दूसरी ओर दादू, स्वयं रज्जब, वषना, गरीबदास, षेमदास, पीपा जैसे राजस्थानी बोलियों के संत हैं। नानक, अंगद, अमरदास पंजाबी भाषा-भाषी हैं तो ज्ञानदेव और नामदेव जैसे मराठी मूल के कवि भी इस संग्रह में हैं। अवधी और ब्रजभाषा में लिखने वाले संतों की बहुत बड़ी संख्या इस संग्रह में है। संस्कृत के महान आचार्यों यथा शंकराचार्य, भर्तृहरि, व्यास और रामानन्द को भी इस संग्रह में स्थान मिला है। इस संग्रह के कवि विभिन्न धर्म एवं सम्प्रदायों के हैं।

ग्रंथों के ग्रंथन की एक सर्वथा नूतन पद्धति 'अंग' को अंगीकृत कर रज्जब ने संकलन-सम्पादन के क्षेत्र में मौलिक कार्य किया है। यह पद्धति अध्याय, सर्ग, उच्छ्वास उल्लास, अंक, तरंग, परिच्छेद, उद्योत, विमर्श से भिन्न तो है ही; समय, बोध, गोष्ठी, पल्लव और काण्ड से भी भिन्न है। सर्वथा पृथक् और नूतन। अंगों के साथ रागों का निबंधन इस ग्रंथन प्रक्रिया को और अधिक सूक्ष्म बनाता है।

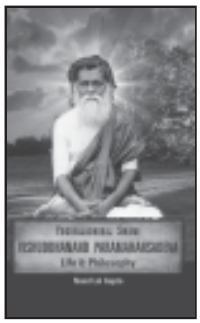

Yogirajadhiraj Swami Vishuddhanand Paramhansdev : Life and Philosophy

Nand Lal Gupta

Second Edition : 2014

Pages : 404

HB : Rs. 600.00 **ISBN : 978-93-5146-026-8**

Publisher : VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Paul Brunton, a British Journalist, has, in his book A Search in Secret India, stated about Baba as under —

"One of the most impressive amongst Yogis of this twentieth century is Yogiraj Shri Vishuddhanand Paramahansa (1853-1937). The Yogiraj's seemingly unscientific and illogical miracles are, in fact, genuine yogic siddhis. It was, in fact, at first very difficult for my mind, trained in logic and the physical science and believing implicitly only in the rational order of the universe, to accept the reality of such apparently irrational phenomena. Yet inwardly I felt, from the elevating splendour of his presence, that the yogiraj was by no means an imposter and that I had witnessed genuine miracles. Along with miraculous powers, went deep love, compassion and the God-knowledge that opens the door to a new elevated vision of life. He had the wonderful powers of the Holy Spirit, the Power of purity which liberates the soul,

gives man control over the whole of nature and shows God into him."

The book describes a few of his numberless miracles relating to subjects like—travel through space; bringing back the dead to life; converting one form of matter into another; producing scents, sweets and fruits; seeing things far distant; multiplying small amount of food etc. into large quantities; appearing simultaneously in several distant places at the same instant; healing the sick and deformed; telepathy; clair-voyance; precognition; power to read minds; to see through walls and go across them without hindrance; to foretell future events and even to mentally cause or change the motion of physical objects. These miracles go to prove his super-human powers by which he infused 'Confidence in Divinity' for the upliftment of society and alleviated its sufferings.

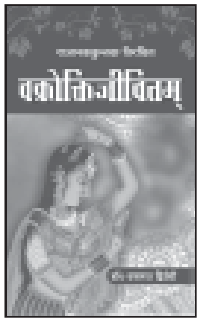

राजानककुन्तक विरचित

वक्रोक्तिजीवितम्

डॉ० दशरथ द्विवेदी

षष्ठ संस्करण : 2014 ई०

पृष्ठ : 256

अजि. : रु० 150.00 ISBN : 978-93-5146-015-2

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

एक रचना करता है तो दूसरा उसका आनन्द लेने में समर्थ होता है, किन्तु उभयगुणविशिष्ट कतिपय ऐसे भी कृती पाये जाते हैं जो सर्जना की उज्ज्वल प्रतिभा से मण्डित होने के साथ उसका आनन्द प्राप्त करने में भी उतने ही पटु होते हैं। रचना के सदसद् का विवेचक, काव्यतत्त्वज्ञ, काव्यपरीक्षक, काव्यालोचक इन तीनों से परे कोई एक ही होता है। और प्राचीन भारतीय काव्यशास्त्र के इतिहास में ऐसे ही अद्वितीय काव्यतत्त्वज्ञ हैं आचार्य कुन्तक, जिनकी एकमात्र उपलब्ध किन्तु खण्डित कृति 'वक्रोक्तिजीवित' से संस्कृत काव्यशास्त्र की अमरबेल में एक और अपूर्व अभिनव वक्रोक्तिशाखा की लुनाई की विविध भङ्गी छाया का प्रादुर्भाव हो गया है।

प्रकृत ग्रन्थ 'वक्रोक्तिजीवितम्' आचार्य कुन्तक की अमर कृति है। ध्वन्यालोककार आनन्दवर्द्धन आदि की भाँति आचार्य कुन्तक ने भी इसे कारिका और वृत्तिरूप में लिखा है। कारिका तथा वृत्ति पूरे को मिलाकर कुन्तक के ग्रन्थ का नाम है वक्रोक्तिजीवित।

ग्रन्थ के प्रथम उन्मेष में कुल 58 कारिकाएँ हैं। द्वितीय कारिका तथा वृत्तिभाग से ग्रन्थकार ने अपने ग्रन्थ के नाम, अभिधेय तथा प्रयोजन को बताया है। तदनुसार इस ग्रन्थ के पूर्व भी अनेक काव्य के अलङ्कार-ग्रन्थ लिखे जा चुके हैं, किन्तु इस प्रकार के वैचित्र्य सम्पादन का प्रयास कहीं और नहीं किया गया है। अतएव यह रचना सोद्देश्य तथा सार्थक भी है। रही ग्रन्थ के नाम की बात। प्राचीन काव्यशास्त्री अलङ्कार को प्रधान मानते रहे हैं। उनके ग्रन्थों के नाम भी अलङ्कारपरक ही हैं। अतः प्राचीनों की दृष्टि को ध्यान में रखकर की गयी पूर्व विवेचना के आधार पर कुन्तक के इस ग्रन्थ का नाम है, काव्यालङ्कार भले ही वक्रोक्ति की काव्यप्राणता होने के कारण ग्रन्थ को वक्रोक्तिजीवित कहा गया हो। अलङ्कार शब्द से बोध्य इस ग्रन्थ का अभिधेय हैं उपमादि अलङ्कार। वक्रता अलङ्काररूप ही है। अतएव सामान्यतया ग्रन्थ का प्रतिपाद्य उपमादि को मानने में कोई कठिनाई नहीं है।

वक्रोक्तिजीवित नामक ग्रन्थ के निर्माण का लोकोत्तर-चमत्कारकारी वैचित्र्यसम्पादनरूप प्रयोजन बताने के अतिरिक्त कुन्तक ने काव्य के अन्य प्रयोजनों का भी निर्देश किया है। ग्रन्थ के अनुसार धर्म, अर्थ, काम, मोक्षरूप पुरुषार्थचतुष्टय का उपदेश ही सर्गबन्ध निर्मित काव्य का प्रयोजन है।

इस प्रकार कुन्तक की दृष्टि से काव्य का प्रमुख प्रयोजन सच्चरित्रों के निबन्धनपूर्वक पुरुषार्थ-चतुष्टय का कोमल उपदेश, नूतनौचित्य समन्वित लोकव्यवहार की शिक्षा तथा अलौकिक काव्यामृतरस का सहृदय-हृदय में चमत्कार पैदा करना है।

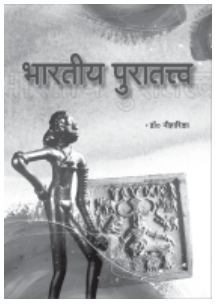

भारतीय पुरातत्त्व

नीहारिका

अजय श्रीवास्तव

प्रथम संस्करण : 2013 ई०

डबल क्राउन अठपेजी

पृष्ठ : 428

सजि.: रु० 1000.00 ISBN : 978-81-7124-819-3

अजि. : रु० 500.00 ISBN : 978-81-7124-968-8

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

भारत का अतीत अत्यन्त गौरवशाली रहा है। यह अतीत उसे विश्व परिदृश्य पर सर्वोच्च स्थान पर आसीन करता है। इस अतीत के अध्ययन के लिए पुरातत्त्व एक बेहद महत्त्वपूर्ण व अनिवार्य उपादान है। आदि मानव की विकसित मानव के रूप में विकास-यात्रा की कथा पुरातत्त्व द्वारा ही उद्‌घाटित हो सकती है। इस सुदीर्घ काल-मान में उसके आवास, भोजन, रीति-रिवाज, आमोद-प्रमोद, कृषि, पशुपालन, उद्योग-धन्धे, कला, उपकरण व औजार, अन्तिम संस्कार आदि जीवन के विविध आयामों पर प्रकाश डालने का कार्य भी पुरातत्त्व द्वारा ही किया जाता है। इस प्रकार मानव के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक आदि विविध पक्षों के साथ ही तत्कालीन पर्यावरण, प्रकृति की स्थिति और उनका मानव-जीवन में योगदान व उपादेयता की जानकारी भी पुरातत्त्व द्वारा होती है।

पुरातत्त्व द्वारा मानव-अतीत के उद्‌घाटन की यात्रा में सर्वेक्षण, उत्खनन, संरक्षण, परिरक्षण, प्रदर्शन, इतिहास की व्याख्या व प्रस्तुति आदि विविध आयाम होते हैं जिनका प्रस्तुत पुस्तक 'भारतीय पुरातत्त्व' में विस्तृत वर्णन किया गया है। पुरातत्त्व क्या है, यह बताते हुए उसके विविध क्षेत्र, मानविकी और प्राकृतिक विज्ञान से उसके सम्बन्ध पर भी प्रकाश डाला गया है। विश्व में पुरातत्त्व का इतिहास व विकास सम्बन्धी विवरण अत्यन्त रोचक होने के साथ ही ज्ञानवर्द्धक भी है।

भारत में पुरातत्त्व का इतिहास व विकास यात्रा, पुरातात्त्विक छायांकन, विभिन्न प्रकार के पुरावशेषों के उत्खनन की भिन्न-भिन्न विधियाँ, स्तर विन्यास की पहचान व महत्त्व, पुरावशेषों तथा पुरावस्तुओं को संरक्षित व परिरक्षित करने के वैज्ञानिक तरीके और इनकी तिथि निर्धारित करने के लिए प्रयुक्त विभिन्न विधियों का अत्यन्त संयोजित व परिष्कृत वर्णन किया गया है। पारिस्थितिकी व प्रातिनूतन काल से आदि मानव का उद्‌भव व विकास, विश्व में पुरापाषाण काल से होते हुए भारत में पाषाण काल की यात्रा अत्यन्त रोचक व तर्क पूर्ण है। भारत में खाद्य उत्पादन और प्राक् तथा पुरा इतिहास के विषय में नवीन विचारों और मतों के साथ ही हड़प्पा, ताम्र-पाषाण, ताम्र-निधि, लौह, वृहत्पाषाण स्मारक संस्कृतियों का वर्णन भी निष्पक्ष रूप से तार्किक और नवीनतम तथ्यों के साथ प्रस्तुत किया गया है। विभिन्न प्रकार के मृदभाण्डों का उल्लेख इस पुस्तक को अत्यन्त समृद्ध बनाता है। प्रमुख उत्खनित स्थलों में काफी पहले से प्राप्त व उद्‌घाटित स्थलों के साथ ही हाल में उत्खनित खैराडीह, लहुरादेवा, नरहन, अकथा, रामनगर, अगियाबीर आदि का वर्णन पुस्तक को नवीनतम जानकारियों से पूरित करता है। हिन्दी भाषा में पुरातत्त्व सम्बन्धी पुस्तकों के अभाव को यह पुस्तक सशक्त रूप में पूरा करती है। पुस्तक में वे सभी रेखाचित्र, छायाचित्र, मानचित्र दिये गये हैं जो इसके वर्ण्य-विषय को स्पष्ट करते हैं, पुष्ट करते हैं और प्रमाणित करते हैं।

संगोष्ठी/लोकार्पण

बारिश के बीच साहित्य महोत्सव का समापन

जयपुर। 17 से 21 जनवरी 2014 तक आयोजित पाँच दिवसीय सातवें जयपुर साहित्य महोत्सव का समापन रिमझिम बारिश के बीच सम्पन्न हो गया। सर्द मौसम में साहित्य के महाकुम्भ में साहित्य प्रेमियों का सबुह से ही जमावड़ा लगा रहा। आगन्तुकों को विक्रम चन्द्रा और एस०आर० फारूखी जैसे लेखकों को और भी करीब से जानने का अवसर मिला। अगले वर्ष का महोत्सव 21 से 25 जनवरी तक चलेगा।

महोत्सव के नवरस सत्र में भारतीय साहित्य के नवरस कविता सिनेमा आर्ट और साहित्य पर यतीन्द्र मिश्रा, टी०एस० लूथरा, अर्जुन देव चारण, सवाई सिंह शेखावत, काजल ओझा वैद्य और नीरव पटेल के बीच संवाद हुआ। तो वहीं जयपुर घराना सत्र में अशोक वाजपेयी, प्रेरणा श्रीमाली और डॉ० मधु भट्ट तैलंग ने संवाद किए। वर्ष 2006 से आयोजित हो रहे इस पाँच दिवसीय महोत्सव में आने वालों की संख्या में लगातार वृद्धि देखने को मिल रही है। यही वजह है कि अब तक करीब दो लाख आगन्तुक कार्यक्रम का हिस्सा बन चुके हैं। यहाँ लगाए गए बुक स्टोर्स से लगभग दस हजार से अधिक किताबों की बिक्री हुई है। पिछले कुछ आयोजनों में विवाद होने के कारण यह महोत्सव देश दुनिया में चर्चित हो चुका है।

भाषाएँ बनें राष्ट्रीय एकता की परिचायक

राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने विगत 25 दिसम्बर, 2013 को निखिल भारत बंग साहित्य सम्मेलन के 86वें अधिवेशन का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि प्रयाग में जिस तरह त्रिवेणी संगम है उसी तरह विभिन्न भारतीय भाषाएँ मिलकर राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की परिचायक बनें।

प्रयाग संगीत समिति के कार्यक्रम के दौरान उन्होंने कहा कि मनुष्य की चेतना में जो द्वंद, हर्ष, विषाद, हताशा, आकर्षण एवं प्रतिकर्षण होता है उसे साहित्य में व्यक्त किया जाता है। पाठक उसी में खुद को ढूँढ़ता है। तब साहित्य व्यक्ति का न रहकर सार्वजनिक हो जाता है। राष्ट्र ही व्यक्ति के विकास के लिए जिम्मेदार होता है। मनुष्य हमेशा अमृत ढूँढता है। वह साहित्य से ही प्राप्त होता है। राष्ट्रपति ने इस दौरान देश की सांस्कृतिक विरासत को याद किया। उन्होंने कहा कि अनेकता में एकता हमारे देश की विशेषता है। बंगला साहित्यकारों ने कहा है कि भाषा, मत, वेशभूषा अलग होते हुए भी देश में एकता झलकती है। राज्यपाल बी०एल० जोशी ने बंग साहित्य सम्मेलन के संस्थापकों को याद किया व बंगाल के विद्वानों द्वारा किए गए कार्यों की सराहना की।

पं० विद्यानिवास मिश्र की स्मृति में तीन दिवसीय संगोष्ठी

वाराणसी। नारी चेतना और विमर्श के बीच अस्मिता की लड़ाई ने ही स्त्री का अस्तित्व बचाए रखा है। उसे अस्तित्ववान बनाने व पहचान दिलाने का व्यापक स्तर पर प्रयास किया जा रहा है। ये बातें पं० विद्यानिवास मिश्र की स्मृति में विगत 12 जनवरी को वाराणसी में साहित्य अकादमी, विद्याश्री न्यास और बलदेव पी०जी० कालेज के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित तीन दिवसीय 'नारी चेतना और हिन्दी साहित्य' विषयक संगोष्ठी में विद्वानों ने कहीं। मुख्य अतिथि ज्ञानपीठ सम्मान प्राप्त उड़िया लेखिका डॉ० प्रतिभा राय ने कहा कि सर्जक हमेशा अर्द्धनारीश्वर होता है। उसके लिए लिंग, भाषा व क्षेत्र की सीमाएँ टूट जाती हैं। लेखक, नारी चरित्र के चित्रण में खुद को नारी और पुरुष की व्याख्या में पुरुष बन जाता है। सर्जक, निर्भीक होता है और ईश्वर से भी प्रश्न पूछने की ताकत रखता है।

विशिष्ट अतिथि दिल्ली विश्वविद्यालय की प्राध्यापक प्रो० कुमुद शर्मा ने कहा कि स्त्री विकास के नाम पर टेक्नोकल्चर हावी है। उनके पास सोशल मीडिया नाम का एक अराजक साधन है। इसके माध्यम से वह खुद को बिना किसी रोक-टोक के अभिव्यक्त करती है। टेक्नोकल्चर वाली स्त्रियाँ खुद को स्वाधीन घोषित कर चुकी हैं जबकि उन्हें पता ही नहीं कि उनके नियंत्रण की डोर बाजार के हाथ में है। प्रख्यात कथाकार प्रो० काशीनाथ सिंह ने कहा कि पं० विद्यानिवास मिश्र का नारी विमर्श अद्भुत है। वह कहते थे कि स्त्री सिर्फ देह नहीं, वह वस्तु नहीं है, वह शक्ति का प्रस्फुरण है। संगोष्ठी में प्रख्यात उपन्यासकार डॉ० उषा किरण खान को 'सिरजन हार' उपन्यास के लिए पं० विद्यानिवास मिश्र स्मृति सम्मान दिया गया। अध्यक्षता प्रो० कमलेश दत्त त्रिपाठी और संचालन डॉ० अरुणेश नीरन व डॉ० प्रकाश उदय ने किया। 'नारी चेतना व हिन्दी कविता' विषयक दूसरे सत्र में प्रो० वशिष्ठ अनूप, प्रो० चंद्रकला त्रिपाठी, प्रो० बलिराज पांडेय आदि ने विचार व्यक्त किए। तीसरे सत्र में 'नारी चेतना एवं कथा साहित्य' पर चर्चा की गई। इसमें डॉ० रामसुधार सिंह, डॉ० नीरजा माधव, चंद्रकांता, आदि ने व्याख्यान दिया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन 'लोक गीत, साहित्य व मीडिया में नारी विमर्श' पर मनन किया गया। सार यह रहा कि तमाम लांछनों के बाद भी लोक संस्कृति विराट विचारों वाली है। कोई तबका हो लड़के या लड़की के जन्म पर सोहर गान में उसे राम-सीता और राधा-कृष्ण की ही पदवी दी जाती है। बधाई गीतों को स्वर स्त्री ही देती है। साहित्यकार डॉ० मृदुला सिन्हा ने कहा कि लोकगीत वस्तुत: वेदों का देशज अनुवाद है। इनसे सिर्फ संस्कार और परम्पराओं का ही बोध होता है। इन्हें जीवित रखने का श्रेय केवल स्त्रियों को ही है। जन्म से लेकर विवाह और विरह के लोकगीतों का गायन भी महिला ही करती है। कथाकार चन्द्रकांता का मानना है कि नारी की चेतना का नमूना कश्मीर से बड़ा नहीं हो सकता। वहाँ स्त्रियाँ ही काम करती हैं।

संगोष्ठी के समापन दिवस पर साहित्य सेवियों ने पं० विद्यानिवास मिश्र के व्यक्तित्व-कृतित्व को याद किया और पंडित जी की रचनाओं पर चिंतन मनन भी किया। कार्यक्रम के समापन में लोक कलाकार हेमलता पांडेय को 'राधिका देवी लोक कला सम्मान', कवि आनंद परमानंद को 'श्रीकृष्ण तिवारी गीतकार सम्मान' व रवींद्र श्रीवास्तव जुगानी को 'लोक कवि सम्मान' दिया गया। विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। आखिरी दिन के विभिन्न सत्रों में डॉ० मृदुला सिन्हा, प्रो० महेश्वर मिश्र व प्रो० सुशीला सिंह ने अध्यक्षता की।

विद्याश्री न्यास के सचिव डॉ० दयानिधि मिश्र, बलदेव पी०जी० कालेज के प्रधानाचार्य डॉ० उदयन मिश्र, डॉ० प्रकाश उदय, डॉ० सत्यदेव त्रिपाठी, अरुणेश नीरन, साहित्य अकादमी, उमापति दीक्षित, डॉ० मंजुला चतुर्वेदी आदि ने तीन दिवसीय संगोष्ठी में सहयोग दिया।

समय, समाज और हिन्दी कविता

कवि को सदैव प्रतिपक्ष में रहना होगा तभी कविता भी प्रतिपक्ष की कविता होगी। कविता को अगर सुना नहीं गया तो समझिए कवि द्वारा कहा ही नहीं गया। समय चट्टानों को बदल देता है, समय कविता को बदल रहा है, स्वयं मुझे बदल रहा है। फैंटेसी और यथार्थ जो भी हो पर कविता को प्रतिपक्ष में खड़ा होना चाहिए क्योंकि समय और समाज से मुठभेड़ कविता की अनिवार्य जरूरत है। मेरा मानना है कि भाषा से निर्मित कलाएँ/विधाएँ मनुष्य बनाने के जरूरी औजार हैं। ये बातें महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय केन्द्र इलाहाबाद द्वारा 'समय, समाज और हिन्दी कविता' पर आयोजित गोष्ठी के मुख्य अतिथि वरिष्ठ कवि श्री नरेश सक्सेना ने कही।

कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ कथाकार एवं विश्वविद्यालय के कुलपति श्री विभूति नारायण राय ने की। उन्होंने कहा कि आजादी के संघर्ष के दौर में 'कविता' साहित्य के केन्द्र में थी। आजादी के बाद मध्यम वर्ग के बढ़ते आकार के कारण 'कथा' साहित्य के केन्द्र में आया। अपने बीज वक्तव्य में वरिष्ठ आलोचक श्री रविभूषण ने कहा कि कवि कर्म क्या है? कविता का क्या काम है?

इसे पुन: परिभाषित करने की जरूरत है। वरिष्ठ आलोचक श्री चौथीराम यादव ने कहा कि, वही कविता कालजयी होती है, जिसकी चिंता के केन्द्र में मनुष्य होता है। हिन्दी कविता की शुरुआत मनुष्य केन्द्रित कविता से होती है।

कार्यक्रम का संयोजन, संचालन और धन्यवाद ज्ञापन क्षेत्रीय केन्द्र के प्रभारी प्रो० संतोष भदौरिया ने किया।

लमही की राह में सजी प्रेमचंद की बगिया

वाराणसी। नगर से लमही की राह में पांडेयपुर चौराहे पर एक बार फिर मुंशी प्रेमचंद की बगिया सज गई। दीन-दुनिया की व्यथा को धार देने वाले कथाकार का संगमरमरी आकार। किनारे पथरीले कैनवास पर सजा उनकी 13 रचनाओं का संसार। जिलाधिकारी ने विगत दिनों प्रतिमा और साज सज्जा का अनावरण किया।

मुंशी जी की बगिया के पथरीले कैनवास पर दीवारों पर नमक का दारोगा, शतरंज के खिलाड़ी, गोदान, दो बैलों की कथा, मंत्र, रानी सारंधा, सवासेर गेहूँ, पंच परमेश्वर, सेवा सदन, ठाकुर का कुआं, बूढ़ी काकी, पूस की रात को उकेरा गया है।

42वीं आंतरिक हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठी

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून के राजभाषा अनुभाग द्वारा आयोजित '42वीं आंतरिक हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठी' का उद्घाटन करते हुए वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ० एस०एम० नानोटी ने कहा कि वर्ष 2002 से प्रारम्भ की गई वैज्ञानिक संगोष्ठियों की अबाध श्रृंखला निश्चित रूप से संस्थान के लिए गर्व का विषय है। किसी कार्य को प्रारम्भ करना जितना सरल है, उसे बनाए रखना उतना ही कठिन है। संस्थान के राजभाषा अनुभाग के प्रभारी डॉ० दिनेश चन्द्र चमोला ने कहा कि हमारा अनुसंधान जितना अधिक हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक पहुँचेगा, उसी रूप में समाज में वैज्ञानिक चेतना के प्रसार में तथा मौलिक विज्ञान लेखन में भी वृद्धि होगी। भाषा व शब्दावली का अनुप्रयोग, व्यवहार व प्रयोग से ही विकास की सीढ़ियां चढ़ता है। उन्होंने वैज्ञानिकों से अनुवाद की अपेक्षा मौलिक विज्ञान लेखन कर अपने वैज्ञानिक लेखन को परिष्कृत करने की अपील की। मौलिक अभिव्यक्ति अनुवाद की अपेक्षा कई गुणा अधिक श्रोताओं, पाठकों के दिलों में अपना स्थान बनाने की क्षमता रखती है। मानक शब्दावली का प्रयोग कर ही विज्ञान लेखन अपने उद्देश्य में सफल हो सकता है।

प्राचीनकाल में जनभाषा थी प्राकृत

वाराणसी स्थित पार्श्वनाथ विद्यापीठ में विगत दिनों 'प्राकृत भाषा एवं साहित्य' विषयक 15 दिनी कार्यशाला का उद्घाटन हुआ। मुख्य अतिथि पालि एवं बौद्ध अध्ययन विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पूर्व अध्यक्ष प्रो० बिमलेन्द्र कुमार थे।

प्रो० कुमार ने कहा कि प्राकृत भाषा एक शास्त्रीय भाषा है और यह ऋग्वेद काल से भी प्राचीन है। प्राकृत जैन आगमों की भाषा है। प्राचीन काल में यह जनभाषा रही है। संस्कृति के ज्ञान, संवर्धन व संरक्षण हेतु प्राकृत का ज्ञान जरूरी है। दुर्भाग्यवश आज तक भारत सरकार ने इसे शास्त्रीय भाषा के रूप में मान्यता नहीं दी और न विद्वत् वर्ग इस दिशा में प्रयास कर रहा है। अध्यक्षता करते हुए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रो० गोपबन्धु मिश्र ने कहा कि वेदों में प्राकृत भाषा के शब्दों का विद्यमान होना इसकी महत्ता को दर्शाता है। प्रत्येक भाषा में प्राकृत शब्द विद्यमान हैं।

अण्डमान में संगोष्ठी

हिन्दी साहित्य कला परिषद के हिन्दी भवन में 'डॉ० रामविलास शर्मा और हिन्दी जाति की अवधारणा' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कोलकाता विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर अमरनाथ मुख्य अतिथि थे। उन्होंने अपने सम्बोधन में डॉ० रामविलास शर्मा के चिंतन के आलोक में हिन्दी जाति की अवधारणा को अपने निजी अनुभवों और विभिन्न सामयिक घटनाओं के आधार पर अत्यन्त सरल भाषा तथा रोचक शैली में प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि यह जरूरी है कि हिन्दी की बोलियों को हिन्दी से जोड़कर ही रखा जाये। हिन्दी की जातीय चेतना के अभाव में हिन्दी बोलने वालों को अनेक तरह की समस्याओं से जूझना पड़ता है जिसकी चिंता डॉ० रामविलास शर्मा को थी और इसीलिए उन्होंने अपनी पुस्तकों में जगह-जगह हिन्दी की जातीय चेतना को सबल बनाने का आह्वान किया है।

काशी हिन्दू वि०वि० में राष्ट्रीय संगोष्ठी

हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के तत्त्वावधान में 'हिन्दी आलोचना और महावीर प्रसाद द्विवेदी' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हुआ। इस संगोष्ठी का उद्घाटन हिन्दी के वरिष्ठ आलोचक नित्यानंद तिवारी ने किया। उन्होंने कहा कि महावीर प्रसाद द्विवेदी ने नयी चिंतन धारा को उभारने का काम किया है। संगोष्ठी की अध्यक्षता कला संकाय प्रमुख महेन्द्रनाथ राय ने की।

अतिथियों का स्वागत हिन्दी विभागाध्यक्ष बलिराज पांडेय ने किया। संगोष्ठी का संचालन नीरज खरे ने किया। और औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन संगोष्ठी के आयोजन सचिव श्रीप्रकाश शुक्ल ने किया।

संगोष्ठी का पहला सत्र सम्पादन, भाषाई चिंतन और महावीर प्रसाद द्विवेदी पर केन्द्रित रहा। सत्र की अध्यक्षता अरुणेश नीरन ने की। अपना वक्तव्य देते हुए इलाहाबाद विश्वविद्यालय के मुश्ताक अली ने कहा कि महावीर प्रसाद द्विवेदी सार्वदेशिक भाषा के हिमायती थे। सत्र के वक्ता अरुण कुमार ने कहा कि महावीर प्रसाद द्विवेदी लिपि का मानकीकरण भारतीय सांस्कृतिक एकता के लिए कर रहे थे। युवा आलोचक प्रभाकर सिंह ने द्विवेदीजी को औपनिवेशिक चिंतन से मुक्त माना। सत्र का संचालन चंपा सिंह ने किया।

संगोष्ठी का दूसरा सत्र 'जातीयता, जागरण और महावीर प्रसाद द्विवेदी' विषय पर केन्द्रित रहा। सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ आलोचक अवधेश प्रधान ने की। वक्ता जितेन्द्रनाथ मिश्र ने कहा कि द्विवेदीजी कट्टरवाद के विरोधी थे। उन्होंने साहित्य को ब्राह्मणवाद से जोड़ने के पक्ष का विरोध किया। सत्र का संचालन श्रद्धा सिंह ने किया।

संगोष्ठी का तीसरा सत्र साहित्य, युगबोध और महावीर प्रसाद द्विवेदी पर केन्द्रित रहा। इस सत्र की अध्यक्षता बिहार के वरिष्ठ आलोचक प्रमोद कुमार सिंह ने की। कृष्णमोहन जी ने द्विवेदीजी को हिन्दी-उर्दू मिश्रित भाषा का समर्थक बताया। राजकुमार ने द्विवेदीजी के रीतिवाद के विरोध तथा उनकी भाषा नीति को आधुनिकता का परिचायक बताया। रामसुधार सिंह ने द्विवेदी जी के स्वतंत्रता आन्दोलन के दौर में उपजी उनकी आन्दोलनधर्मी चेतना पर प्रकाश डाला। गज़लकार वशिष्ठ अनूप द्विवेदी ने महावीर प्रसाद द्विवेदी की कविताओं को यथार्थवादी कविता बताया। सत्र का संचालन वन्दना चौबे ने किया।

संगोष्ठी का अन्तिम सत्र महावीर प्रसाद द्विवेदी के महत्त्व पर केन्द्रित रहा। इसकी अध्यक्षता वरिष्ठ आलोचक नित्यानंद तिवारी ने की। रामाज्ञा शशिधर ने कहा कि उनकी ज्ञान और भाषा की राजनीति व्यवहारिक थी। सत्यपाल शर्मा ने कहा कि द्विवेजी जी असल में ऐतिहासिक जरूरतों को अपने लेखन और अध्ययन से पूरा करते रहे। संचालन सुमन जैन ने किया।

रूप वाणी से निखरी रश्मिरथी

वाराणसी। शौर्य और पराक्रम पर भारी जाति और कुल गोत्र का नाम जिससे भरी सभा में कर्ण को झेलना पड़ा अपमान। गुरु की धिक्कार और समाज के ताने फिर भी वह सब कर दिखाया जिसे पीढ़ियाँ नजीर मानें। रामधारी सिंह दिनकर की काव्य कृति रश्मि रथी में सहेजे गए तमाम ऐसे ही दंग करते प्रसंग विगत दिनों मंच पर जीवन्त हुए। रूपवाणी रंगमंडल के युवा कलाकारों ने इसमें अभिनय से रंग भरे।

कुल 57 मिनट के नाट्य ने दर्शकों को कर्ण के जीवन के हर पहलू से जोड़ा। डॉ० शकुन्तला शुक्ला के नाट्यालेख में धीरेन्द्र मोहन की परिकल्पना को व्योमेश शुक्ल ने निर्देशन से आकार दिया। कवि व आलोचक विष्णु खरे ने

नाट्य संध्या का उद्घाटन किया। संयोजन विवेकानंद अभिनव शिक्षण संस्थान ने किया।

सितार पर आईं दो पुस्तकें

विगत दिनों वाराणसी में सितार पर दो पुस्तकों का पराड़कर स्मृति भवन में विमोचन हुआ। डॉ० वीरेन्द्रनाथ मिश्र रचित 'काशी के सितार वादक' और 'सितार-प्रबंध' नामक पुस्तकों को संगीत जगत के लिए उपयोगी बताया गया। इस अवसर पर सितार पर रागों की अवतारणा से वातावरण को लय-ताल के रंग में रंगने की कोशिश की गई।

साहित्यकार डॉ० विश्वनाथ - 75वीं जयन्ती

वाराणसी। हिन्दी के ख्यातिलब्ध साहित्यकार डॉ० विश्वनाथ प्रसादजी जीवन के अन्तिम क्षणों तक नवगीतों को सजाते-संवारते रहे। वह बेजोड़ समीक्षक थे। रिश्तों को वह दिल से निभाते थे।

डॉ० विश्वनाथ की 75वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में विगत 25 दिसम्बर, 2013 को उनके आवास डिठोरी महाल पर आयोजित कार्यक्रम में यह बातें साहित्यकारों व प्रबुद्धजनों ने कहीं। दैनिक जागरण के वरिष्ठ पत्रकार व गीतकार हिमांशु उपाध्याय को वर्ष 2013 के 'नवगीत शिखर सम्मान' से सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि, संयोजक विमला देवी ने श्री उपाध्याय को सम्मान स्वरूप प्रशस्तिपत्र, शाल व पाँच हजार रुपये का चेक प्रदान किया। अध्यक्षता साहित्यकार डॉ० जीतेन्द्रनाथ मिश्र ने की।

धूमधाम से मनी धूमिल जयंती

वाराणसी। जनकवि सुदामा पांडेय धूमिल की 77वीं जयंती पर विगत दिनों जगह-जगह आयोजन हुए। उनके पैतृक गांव खेवली से शहर की अड़ियों तक गोष्ठी और पौधरोपण का कार्यक्रम होता रहा, धूमिल याद आते रहे। वक्ताओं की जुबान पर उनकी कालजयी रचना 'संसद से सड़क तक' व 'संसद और रोटी' आदि की प्रासंगिकता का वाचन हुआ।

खेवली में साहित्यिक प्रदर्शनी लगाई गई। इसका उद्घाटन भोजपुरी गीतकार पं० हरिराम द्विवेदी ने किया। उन्होंने कहा कि धूमिल ने अपना सम्पूर्ण जीवन संघर्ष को समर्पित किया और मजदूरों की जिन्दगी में जान फूंकने की वकालत की। डॉ० रामसुधार सिंह ने कहा कि भारतीय परम्परा के क्रांतिदर्शी कवि धूमिल लोकतांत्रिक समाजवाद के समर्थक थे। इस अवसर पर वक्ताओं ने विचार व्यक्त किए और कवि धूमिल के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला।

कालिकट में संगोष्ठी

कालिकट गवर्नमेंट आर्ट्स एण्ड साइन्स कॉलेज—कालिकट में 'प्रेमचंद साहित्य में मानवाधिकार' विषय पर संगोष्ठी आयोजित हुई।

हिन्दी के मशहूर कवि तथा दिल्ली आकाशवाणी के उपनिदेशक राजेन्द्र उपाध्याय ने संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए कहा, दलित-उत्पीड़ित व्यक्ति तथा समाज की व्यथाकथा की मार्मिक प्रस्तुति प्रेमचंद साहित्य की बुनियादी विशेषता है। न्यायवंचित पशु-पक्षियों की ओर भी इस संवेदनशील साहित्यकार का ध्यान टिक गया था। अनमेल विवाह, रिश्वत, अत्याचार और अपमान के शिकार होकर जीवन बिताने वाले लोगों की जीवन परिस्थितियों को एक सशक्त वकील के रूप में प्रेमचंद ने पाठकों की अदालत में पेश किया था। अपने उद्घाटन भाषण में राजेन्द्र उपाध्याय ने यह वक्तव्य दिया।

डॉ० आरशु ने प्रेमचंद स्मृति व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद साहित्य में देशकाल तथा भाषाओं की दीवारों को तोड़ने की शक्ति है।

अण्डमान में कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद पर संगोष्ठी

कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की जयंती के अवसर पर हिन्दी साहित्य कला परिषद्, पोर्ट ब्लेयर के हिन्दी भवन में विगत दिनों 'पठनीयता का संकट और प्रेमचंद' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान केन्द्र पोर्ट ब्लेयर के प्रबंधक श्री रामचन्द्र सिंह मुख्य अतिथि थे। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि पठनीयता में मीडिया को बाधक मानना उचित नहीं है। मीडिया अपने ढंग से लोगों तक पहुँच रहा है। साहित्य भी पहुँच रहा है। जहाँ तक प्रेमचंद की बात है तो उनका साहित्य हृदयस्पर्शी होने के कारण हर युग में पढ़ा जाता रहेगा।

संगोष्ठी का विषय प्रवर्तन करते हुए परिषद् के साहित्य सचिव डॉ० व्यास मणि त्रिपाठी ने कहा कि प्रेमचंद का साहित्य आज भी सर्वाधिक पढ़ा जाता है लेकिन क्या कारण है कि वर्तमान समय में लिखे जाने वाले साहित्य के लिए पाठकों का अभाव होता जा रहा है। मुख्य वक्ता के रूप में डॉ० अंजनी कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि 'क्लासिक' के लिए पाठकों का अभाव किसी युग में नहीं रहा है। प्रेमचंद का साहित्य इसी श्रेणी का है।

महादेवी वर्मा सृजन पीठ में प्रेमचंद-विमर्श

उपन्यास हमारे समय की सबसे समर्थ एवं लोकप्रिय विधा है। बिना उपन्यास के गद्य महत्त्वपूर्ण हो ही नहीं सकता। प्रत्येक जागरूक रचनाकार तीव्रता से अनुभव करता है कि आधुनिक युग की जटिलताओं को अपनी समग्रता में केवल उपन्यास ही अभिव्यक्त कर सकता है। उक्त विचार सुप्रसिद्ध आलोचक एवं दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० गोपेश्वर सिंह ने महादेवी वर्मा सृजन पीठ और महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में रामगढ़ (नैनीताल) में युग प्रवर्तक उपन्यासकार प्रेमचंद के जन्मदिन के अवसर पर आयोजित 'हिन्दी उपन्यास : जनरुचि और पठनीयता का सन्दर्भ' विषयक संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि जनरुचि बदलने के साथ उपन्यास की लोकप्रियता कम हुई है। हिन्दी लोकप्रिय लेखकों की परम्परा धीरे-धीरे खत्म हो रही है।

देहरादून में 16वें राजभाषा हिन्दी विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन

भारत पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून के राजभाषा अनुभाग द्वारा विगत दिनों 16वें राजभाषा हिन्दी विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। साहित्यकार डॉ० योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण' इसके मुख्य अतिथि थे।

'हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और कार्यालयीन अनुवाद' विषय पर बोलते हुए डॉ० 'अरुण' ने सर्वप्रथम हिन्दी की सेवा के दौरान हुए अपने अनुभवों, विशेषत: विदेश में हुई घटनाओं की याद की और कहा कि हिन्दी की शक्ति इस बात में है कि उसके सभी वर्ण पूर्ण हैं। हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर दृष्टिपात करते हुए उन्होंने इसकी ऐतिहासिकता का उल्लेख करते हुए अंग्रेजों द्वारा कलकत्ता में, भारत में व्यापार करने के लिए हिन्दी भाषा सीखने की अपनी आवश्यकता के अन्तर्गत स्थापित 'फोर्ट विलियम्स कॉलेज' में हिन्दी के चार शिक्षकों अर्थात् इंशाअल्ला खां, सदासुखलाल, सदल मिश्र आदि की भर्ती के कारण हुई हिन्दी की अकस्मात् सेवा को स्मरण किया। उन्होंने इस सम्बन्ध में राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द' तथा राजा लक्ष्मण प्रसाद सिंह की हिन्दी सेवाओं को भी याद किया।

राष्ट्रीय चेतना के काव्यों पर आयोजित हुई विद्वत् संगोष्ठी

चेन्नई की प्रतिष्ठित संस्था साहित्यानुशीलन समिति ने अपने हीरक जयंती कार्यक्रमों की शृंखला में राष्ट्रीय चेतना के काव्यों पर विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया जिसमें नगर के विद्वान अनुशीलकों ने शोध-प्रपत्र प्रस्तुत किये। वयोवृद्ध हिन्दी लेखक, अनुवादक एवं आचार्य डॉ० पी०के० बालसुब्रह्मण्यम ने संगोष्ठी की अध्यक्षता की तथा संस्कृत, हिन्दी, तमिल के विद्वान श्री त०शि०क० कण्णन् मुख्य अतिथि के रूप में समुपस्थित हुए। बिहार एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री शोभाकान्त दास एवं समिति संरक्षक श्री प्रकाशमल भण्डारी ने अतिथियों और अनुशीलकों को शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया। समिति के अध्यक्ष डॉ० इन्दराज बैद ने विद्वत समाज का स्वागत करते हुए कहा कि मध्यकालीन भक्ति-साहित्य की तरह आधुनिक युग के राष्ट्रीय साहित्य की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। संगोष्ठी का संचालन डॉ० पी०आर० वासुदेवन, सचिव ने किया।

प्रपत्र वाचन के क्रम में डॉ० चुन्नीलाल शर्मा, श्रीमती कौशल्या वरदराजन, श्रीमती अलमेलु कृष्णन, डॉ० अशोक कुमार द्विवेदी, डॉ० राजलक्ष्मी कृष्णन ने शोधपूर्ण आलेख पढ़े।

पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी की द्वितीय पुण्यतिथि पर यज्ञ का आयोजन

अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृत जगत् के ख्यातिलब्ध विद्वान् पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी की द्वितीय पुण्यतिथि श्री सत्येन्द्र जी आर्य के पौरोहित्य में सम्पन्न हुई। यज्ञोपरान्त इस अवसर पर सम्बोधित करते हुए श्री सत्येन्द्र आर्य ने डॉ० कपिलदेव द्विवेदी के योगदान को स्मरण करते हुए कहा कि संस्कृत भाषा के सरलीकरण और वेदों का ज्ञान जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए उनका अविस्मरणीय योगदान है। वे संस्कृत-व्याकरण, भाषा-विज्ञान, दर्शन और वेदों के अप्रतिम विद्वान् थे। उनका जीवन ऋषि तुल्य था। उन्होंने स्वामी दयानन्द के वेद प्रचार के स्वप्न को साकार करने के लिए न केवल दो वेद कंठस्थ किए अपितु 40 भागों में वेदामृतम् ग्रन्थमाला की रचना कर वेदों को जनसामान्य तक पहुँचाया। डॉ० भारतेन्दु द्विवेदी ने आगत अतिथियों एवं नगरवासियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

हिन्दी के पुरोधा आचार्य द्विवेदी और राजर्षि टंडन का पुण्य स्मरण

मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की प्रतिष्ठापूर्ण बीसवीं पावस व्याख्यानमाला भोपाल के हिन्दी भवन में हिन्दी के दो पुरोधाओं आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी और राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन की पुण्य स्मृति में आयोजित हुई। इस वर्ष आचार्य द्विवेदी की सार्धशती और राजर्षि टंडन की 50वीं पुण्य तिथि है। व्याख्यानमाला के अन्तर्गत चार सत्रों में विमर्श हुआ। हिन्दी के दोनों पुरोधाओं के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अलावा 'परंपरा और आधुनिकता', 'हिन्दी साहित्य में विश्व-बोध' तथा 'हिन्दी साहित्य पर स्वामी विवेकानन्द का प्रभाव' विषय पर आमंत्रित विद्वानों के विद्वतापूर्ण व्याख्यान हुए तथा श्रोताओं ने 'हस्तक्षेप' के अन्तर्गत अपनी जिज्ञासाएँ और प्रतिक्रियाएँ दीं।

अस्मिता द्वारा पुस्तकों का विमोचन

अहमदाबाद के महिला बहुभाषी साहित्यिक मंच, अस्मिता द्वारा गुजरात की प्रथम हिन्दी कवयित्री स्वर्गीय मधुमालती चौकसी की तीन पुस्तकों 'प्रस्तुत हूँ युद्ध करने को मैं', 'मेरी पीड़ा प्यार हो गई' व 'पीड़ित पायल की रुनझुन' का विमोचन किया गया। आजीवन रोगिणी सिर्फ मूँग की दाल का पानी व ब्लैक कॉफी पीने वाली मधु जी ने नारी शक्ति का एक प्रतिमान गढ़ा है। 1 अक्टूबर सन् 1929 को जन्म लेने वाली मधु जी का देहावसान 10 मार्च 2011 को हुआ था।

स्मृति शेष

हिन्दी प्रकाशन जगत के पुरोधा नहीं रहे

कवि, शिक्षाशास्त्री और प्रख्यात प्रकाशक श्री विश्वनाथ जी के निधन पर साहित्यिक एवं प्रकाशन जगत में शोक की लहर व्याप्त है। लोक साहित्य संस्कृति समिति, दिल्ली के कार्यालय पर कवि एवं लेखकों की बैठक में उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए एक युग पुरुष और महान प्रकाशक की संज्ञा दी। श्री विश्वनाथ जी महाशय राजपाल जी के ज्येष्ठ पुत्र और 'हिन्द पॉकेट बुक्स' के संस्थापक श्री दीनानाथ जी के ज्येष्ठ भ्राता थे।

साहित्य के पर्याय राजेन्द्र यादव का निधन

प्रख्यात कथाकार और 'हंस' पत्रिका के सम्पादक राजेन्द्र यादव का 28 अक्टूबर, 2013 को नई दिल्ली में निधन हो गया। वे 84 वर्ष के थे। राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश और कमलेश्वर के साथ नई कहानी आन्दोलन की त्रयी के अन्तिम स्तम्भ थे। 'प्रेत बोलते हैं' (1951 ई०) उनका पहला उपन्यास था। 'सारा आकाश' (1960 ई०) से उन्हें प्रसिद्धि मिली। उनके अनेक हिन्दी संग्रह भी प्रकाशित हैं। तुर्गनेव, चेखव, कामू आदि की रचनाओं का हिन्दी अनुवाद भी उन्होंने किया।

अप्रतिम व्यंग्यकार के०पी० सक्सेना नहीं रहे

प्रसिद्ध व्यंग्यकार और लेखक के०पी० सक्सेना का 31 अक्टूबर, 2013 को लखनऊ में निधन हो गया। वे 79 वर्ष के थे। के०पी० सक्सेना ने प्रचुर मात्रा में व्यंग्य साहित्य लिखा। धर्मयुग और साप्ताहिक हिन्दुस्तान जैसी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं के अलावा उस समय की देशभर की सभी महत्त्वपूर्ण हिन्दी पत्रिकाओं में वे लगातार लिखते रहे। उन्होंने लगान, जोधा अकबर समेत अनेक फिल्मों की पटकथा भी लिखी। सन् 2000 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया था।

चित्रकार पुलक विश्वास नहीं रहे

प्रख्यात चित्रकार पुलक विश्वास का विगत 28 अगस्त, 2013 को नई दिल्ली में निधन हो गया। वे 72 वर्ष के थे। कोलकाता, लंदन एवं एम्सटर्डम में शिक्षा प्राप्त विश्वास को यूनेस्को द्वारा ग्राफिक डिजाइन एवं इलस्ट्रेशन में विशिष्ट अध्ययन हेतु फेलोशिप भी प्रदान की गयी थी। देश और विदेश में उनकी अनेक एकल एवं समूह प्रदर्शनियाँ लगाई गई थीं।

आलोचक शिवकुमार मिश्र का निधन

हिन्दी के जानेमाने आलोचक और चिंतक डॉ० शिवकुमार मिश्र का अहमदाबाद के एक अस्पताल में निधन हो गया। वे 82 वर्ष के थे।

उन्होंने दो वृहद शोध परियोजनाओं पर सफलतापूर्वक कार्य किया। उनके 30 वर्षों के शोध निर्देशन में लगभग 25 छात्रों ने पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की। डॉ० मिश्र को उनकी पुस्तक मार्क्सवादी को साहित्य चिन्तन के लिए 1975 में सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार प्रदान किया गया था।

इतिहासकार शैलनाथ चतुर्वेदी का निधन

प्रसिद्ध इहिासकार शैलनाथ चतुर्वेदी का विगत दिनों लखनऊ में निधन हो गया। पुरातत्त्व विज्ञान तथा न्यूमेसमेटिक्स के क्षेत्र में वे विशेषज्ञ थे। कुशीनगर के फाजिलनगर में पायानगरी की खोज का श्रेय उन्हीं को जाता है।

कथाकार महेशचंद्र सोती नहीं रहे

दिल्ली निवासी प्रतिष्ठित कहानीकार श्री महेशचन्द्र सोती का गत 6 सितम्बर, 2013 को 84 वर्ष की आयु में निधन हो गया। 'भूखा अंकुर' (कहानी संग्रह) और 'उजले पंख' और 'नीली वर्षा' उनके दो चर्चित उपन्यास थे।

सुशील कालरा नहीं रहे

प्रख्यात कार्टूनिस्ट और व्यंग्यकार सुशील कालरा का 7 सितम्बर, 2013 को अमेरिका में निधन हो गया। सुशील कालरा लंबे समय तक 'हिन्दुस्तान टाइम्स' से जुड़े रहे तथा मीडिया हाउस से प्रकाशित लगभग सभी पत्र-पत्रिकाओं में उनके बनाए व्यंग्य चित्र (कार्टून) प्रकाशित होते रहे। अन्य लेखन के अतिरिक्त उनका उपन्यास 'निक्का निमाणा' व्यंग्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय स्थान रखता है।

परमानंद श्रीवास्तव नहीं रहे

हिन्दी के लेखक और आलोचक परमानंद श्रीवास्तव का पिछले दिनों उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में निधन हो गया। वे 78 वर्ष के थे। उनकी आलोचना पुस्तकों में 'नई कविता का परिप्रेक्ष्य', 'हिन्दी कहानी की रचना प्रक्रिया', 'कवि कर्म और काव्यभाषा', 'समकालीन कविता का व्याकरण' आदि प्रमुख थीं।

तेलुगु साहित्यकार रावुरी भारद्वाज नहीं रहे

हाल ही में ज्ञानपीठ से सम्मानित प्रख्यात तेलुगु लेखक 86 वर्षीय रावुरी भारद्वाज का पिछले दिनों हैदराबाद के एक अस्पताल में निधन हो गया। तेलुगु साहित्य में बहुमूल्य योगदान देने वाले भारद्वाज को वर्ष 2012 के ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उनके तेलुगु में 24 लघुकथा संग्रह, नौ उपन्यास और चार नाटक प्रकाशित हैं।

रंगकर्मी विजय सोनी का निधन

जाने-माने चित्रकार और रंगकर्मी 76 वर्षीय विजय सोनी उर्फ विको सोनी का विगत दिनों नई दिल्ली में निधन हो गया। उनके निधन पर रंगमंच से जुड़े लोगों सहित चित्रकारों और समाजसेवियों ने गहरा शोक व्यक्त किया है।

लोक-कथाकार श्री विजयदान देथा नहीं रहे

10 नवम्बर को प्रसिद्ध राजस्थानी लोक कथाकार श्री विजयदान देथा का निधन हो गया। साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता देथा 'बिज्जी' नाम से लोकप्रिय रहे। उन्हें आठ सौ से अधिक कहानियाँ लिखने का श्रेय प्राप्त है। राजस्थानी में 14 खंडों में प्रकाशित कथा-संग्रह 'बाताँ री फुलवाड़ी' उनकी प्रमुख कृति है। उन्होंने 1953 से 1955 ई० तक हिन्दी मासिक 'प्रेरणा' का सम्पादन किया। बाद में हिन्दी त्रैमासिक 'रूपम', राजस्थानी शोध पत्रिका 'परम्परा', 'लोकगीत', 'गोरा हट जा', 'जैठवे रा सोहठा' आदि का सम्पादन किया।

व्यंग्यकार श्री दीनानाथ मिश्र नहीं रहे

13 नवम्बर को भाजपा के पूर्व राज्यसभा सांसद एवं सुप्रसिद्ध व्यंग्य-लेखक 76 वर्षीय श्री दीनानाथ मिश्र का निधन हो गया। उन्होंने अपना कॅरियर पत्रकार के रूप में प्रारम्भ किया और 1971 से 1974 ई० तक 'पाञ्चजन्य' के सम्पादक रहे। बाद में वे 'नवभारत टाइम्स' के सम्पादक भी रहे। आपातकाल में उन्होंने 'गुप्त क्रांति' पुस्तक लिखी। 'हर-हर व्यंग्ये' तथा 'घर की मुरगी' व्यंग्य-संकलन विशेष चर्चित रहे।

साहित्यकार डॉ० हरिकृष्ण देवसरे नहीं रहे

14 नवम्बर को 'पराग' के पूर्व सम्पादक एवं सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ० हरिकृष्ण देवसरे का निधन हो गया। अपने लेखन में प्रयोगधर्मिता के लिए प्रसिद्ध देवसरे ने बाल साहित्य पर ही पी-एच०डी० की थी। वे 22 साल तक आकाशवाणी से जुड़े रहे। उन्होंने बाल साहित्य के अलावा धारावाहिक, टेलीफिल्म, विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर आधारित अनेक कार्यक्रमों की स्क्रिप्ट लिखीं। बच्चों के लिए उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय और चर्चित कृतियों का अनुवाद किया।

श्री ओमप्रकाश वाल्मीकि नहीं रहे

17 नवम्बर को प्रख्यात दलित चिंतक व लेखक श्री ओमप्रकाश वाल्मीकि का निधन हो गया। उनकी आत्मकथा 'जूठन' बहुत चर्चित रही। उनके कविता-संग्रह 'सदियों का संताप', 'बस बहुत हो चुका', 'अब और नहीं' तथा दो कथा संग्रह 'सलाम' व 'घुसपैठिए' प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी 'सफाई के देवता' नामक पुस्तक वाल्मीकि समुदाय का इतिहास है। इसके अतिरिक्त 'दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र' भी उनकी चर्चित पुस्तक है।

डॉ० शिव बहादुर भदौरिया नहीं रहे

लखनऊ में सुप्रसिद्ध गीतकार और बैसवाड़ा के साहित्यपुरोधा डॉ० शिव बहादुर भदौरिया का निधन हो गया। उनका प्रथम संकलन 'शिंजनी' का प्रकाशन 1953 ई० में हुआ था। श्री भदौरिया को हाल ही में बैसवाड़ा उत्थान समिति ने सम्मानित किया था और इसी समारोह में उनकी अन्तिम पुस्तक 'राघव रंग' का लोकार्पण भी हुआ था।

श्री रघुवंश नहीं रहे

23 अगस्त को सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ० रघुवंश का निधन हो गया। वे 92 वर्ष के थे। बचपन से ही हाथों की विकलांगता के बावजूद उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम०ए०, डी०फिल० किया और वहीं अध्यापन करने लगे। उन्होंने हिन्दी साहित्य को श्रेष्ठ उपन्यासों, आलोचनात्मक पुस्तकों आदि से समृद्ध किया। कई साहित्यिक पत्रिकाओं का सम्पादन कार्य भी सँभाला। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान से 'साहित्य भूषण', के०के० बिड़ला फाउंडेशन से 'शंकर पुरस्कार', उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान से 'साहित्य भारती' तथा भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा 'मूर्तिदेवी पुरस्कार' प्रदान किए गए।

जी०पी० देशपांडे नहीं रहे

भारतीय रंगमंच के सुविख्यात नाटककार एवं राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय समिति के भूतपूर्व उपाध्यक्ष गोविंद पुरुषोत्तम देशपांडे का निधन विगत दिनों पुणे में हो गया।

नहीं रहे कवि रवींद्र कौशिक

वाराणसी। कवि डॉ० रवींद्र कौशिक उपाध्याय का विगत 29 दिसम्बर 2013 को हृदय गति रुकने से निधन हो गया। डॉ० कौशिक की ज्यादातर रचनाएँ खेत खलिहान और किसान पर आधारित हैं।

दलित कवि नामदेव का निधन

मुंबई। दलित कवि और लेखक, विचारक और दलित पैंथर्स पार्टी के संस्थापक 64 वर्षीय नामदेव लक्ष्मण ढसाल का मुंबई के एक अस्पताल में 15 जनवरी को निधन हो गया। वे अपने पीछे पत्नी मलिका शेख और एक बेटे को छोड़ गए हैं।

समीक्षक डॉ० शम्भुशरण शुक्ल दिवंगत

सुपरिचित लेखक, पत्रकार और शिक्षाविद डॉ० शम्भुशरण शुक्ल 'अभीत' दिवंगत हो गए। वे छियत्तर वर्ष के थे। डॉ० शुक्ल कला, साहित्य और लोक संस्कृति के विविध पक्षों पर विगत पाँच दशकों से निरन्तर लिख रहे थे।

मशहूर शेफ तरला दलाल का निधन

मुंबई। मशहूर शेफ 77 वर्षीय तरला दलाल का विगत दिनों निधन हो गया। भारत की पहली सेलिब्रिटी शेफ के रूप में पहचानी जाने वाली तरला को 2007 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया था। अपने जीवनकाल में तरला दलाल ने 17,000 से ज्यादा व्यंजनों की रेसिपी तैयार की और 100 से भी ज्यादा किताबें लिखीं। शाकाहारी व्यंजनों के शौकीनों के बीच वह काफी लोकप्रिय थीं। इन व्यजनों पर लिखी गईं उनकी किताबों की 30 लाख से भी ज्यादा प्रतियाँ बिक चुकी हैं।

उड़ीसा के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० उमेश पत्री का निधन

वरिष्ठ साहित्यकार तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के लेखक डॉ० उमेश पत्री नहीं रहे। उनके निधन से राज्य के साहित्य जगत में शोक की लहर है।

ध्रुपद गायक जिया फरीदुद्दीन डागर नहीं रहे

लोकप्रिय ध्रुपद गायक उस्ताद जिया फरीदुद्दीन डागर का विगत दिनों निधन हो गया। वह 80 वर्ष के थे और कुछ दिनों से बीमार थे। पनवेल के पास अपने गुरुकुल में उन्होंने अन्तिम साँसें ली।

जिन्दगी ....कभी ये हंसाए, कभी ये रुलाए

अपने तमाम मंत्रमुग्ध करने वाले गीतों में से एक—ऐ मेरे प्यारे वतन, ऐ मेरे बिछड़े चमन... को आवाज देने वाले महान गायक मन्ना डे विगत दिनों अपने प्यारे वतन और चमन के साथ दुनिया से भी बिछड़ गए। 94 साल के मन्ना डे ने अंतिम सांस बेंगलूर के नारायण हृदयालय अस्पताल में ली। उनका मूल नाम प्रबोध चंद्र था।

मन्ना डे सुर-संगीत के उस स्वर्णिम दौर के आखिरी स्तम्भ थे जब उनके साथ-साथ मुकेश, मुहम्मद रफी और किशोर कुमार भी संगीत प्रेमियों के दिलों पर राज करते थे।

पाकिस्तान की लोकगायिका रेशमा नहीं रहीं

लाहौर। पाकिस्तान की मशहूर लोक गायिका तथा अपनी मधुर आवाज से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करने वाली रेशमा का विगत दिनों निधन हो गया।

रेशमा का जन्म राजस्थान के बीकानेर में एक बंजारा परिवार में 1947 में हुआ था। भारत पाकिस्तान विभाजन के बाद उनका परिवार पकिस्तान के कराची शहर में जा बसा।

रेशमा 12 वर्ष की उम्र से गायन कर रही थीं। रेशमा उन चुनिंदा सितारों में से थीं जिन्हें भारत और पाकिस्तान दोनों मुल्कों में एक जैसी लोकप्रियता मिली। अपनी विशिष्ट गायन शैली के कारण उन्होंने भारत में भी खूब नाम कमाया। भारत में उनकी आवाज गूंजी सुभाष घई की फिल्म हीरो के गाने 'चार दिनां दा प्यार हाय रब्बा, बड़ी लम्बी जुदाई' के जरिए।

'भारतीय वाङ्मय' परिवार अपनी अश्रुपूरित भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

विश्वविद्यालय प्रकाशन द्वारा प्रकाशित प्रमुख आध्यात्मिक साहित्य

मनीषी, संत, महात्मा

बुद्ध और उनकी शिक्षा (प्रश्नोत्तरी)	*हेनरी यस० ऑल्कॉट अनुवादक : छत्रधारी सिंह, डॉ० प्रेमनारायण सोमानी*	200
करुणामूर्ति बुद्ध	*डॉ० गुणवन्त शाह*	25
महामानव महावीर	*डॉ० गुणवन्त शाह*	30
तथागत (आत्मकथात्मक उपन्यास)	*डॉ० बाबूराम त्रिपाठी*	100
रावण की सत्यकथा	*रामनगीना सिंह*	80
कथा त्रिदेव की	*रामनगीना सिंह*	50
श्रीकृष्ण : कर्म-दर्शन (अद्‌भुत लीला प्रसंग)	*शारदाप्रसाद सिंह*	40
कृष्णायन	*रामबदन राय*	300
तुकाराम गाथा (*संतश्रेष्ठ तुकाराम के चुने हुए अभंगों का हिन्दी भावानुवाद*)		400
काशी के विद्यारत्न संन्यासी	*पं० बलदेव उपाध्याय*	60
काशी की पाण्डित्य परम्परा	*पं० बलदेव उपाध्याय*	600
श्री श्री सिद्धिमाता	*राजबाला देवी*	90
योगिराज तैलंग स्वामी	*विश्वनाथ मुखर्जी*	45
ब्रह्मर्षि देवराहा-दर्शन	*डॉ० अर्जुन तिवारी*	60
प्रकाश-पथ का यात्री (*एक सिद्ध योगी की आत्मकथा*)	*योगेश्वर*	200
अघोर पंथ और संत कीनाराम	*डॉ० सुशीला मिश्र*	150
शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान	*सद्‌गुरुप्रसाद श्रीवास्तव*	200
नीब करौरी के बाबा	*डॉ० बदरीनाथ कपूर व परीक्षित कुमार चोपड़ा*	25
बाबा नीब करौरी के अलौकिक प्रसंग	*बच्चन सिंह*	300
सोमबारी महाराज (*उत्तराखण्ड की अनन्य विभूति*)	*हरिश्चन्द्र मिश्र*	100
सन्त रज्जब	*डॉ० नन्दकिशोर पाण्डेय*	300
सन्त रैदास	*श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला*	70
रैदास परिचई	*डॉ० शुकदेव सिंह*	25
समर्थ रामदास	*ना०वि० सप्रे*	50
मनीषी की लोकयात्रा (म०म०पं० गोपीनाथ कविराज का जीवन-दर्शन)	*डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह*	600
योगिराजाधिराज श्री श्री विशुद्धानन्द परमहंस	*अक्षयकुमारदत्त गुप्त कविरत्न*	400
सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव : जीवन और दर्शन	*नन्दलाल गुप्त*	180
Yogirajadhiraj Swami Vishuddhanand Paramhansdeva : Life & Philosophy	*Nand Lal Gupta*	600
भारत के महान योगी (14 भाग : 7 जिल्द)	*विश्वनाथ मुखर्जी* (प्रत्येक)	100
भारत की महान साधिकाएँ	*विश्वनाथ मुखर्जी*	50
महाराष्ट्र के संत-महात्मा	*ना०वि० सप्रे*	200
महाराष्ट्र के कर्मयोगी	*ना०वि० सप्रे*	80
आधुनिक भारत के युग प्रवर्तक संत	*लक्ष्मी सक्सेना*	250
उत्तराखण्ड की सन्त परम्परा	*डॉ० गिरिराज शाह*	80
पूर्वांचल के संत महात्मा	*परागकुमार मोदी*	60

अध्यात्म, योग, तंत्र, दर्शन

भारतीय रहस्यवाद	*डॉ० राधेश्याम दूबे*	200
परलोक तत्त्व	*भार्गव शिवरामकिंकर योगत्रयानन्द*	400
मानव-तत्त्व तथा वर्ण विवेक	*भार्गव शिवरामकिंकर योगत्रयानन्द*	200
सृष्टि-तत्त्व तथा राजा एवं प्रजा	*भार्गव शिवरामकिंकर योगत्रयानन्द*	60

म.म.पं. गोपीनाथ कविराज की अध्यात्मकपरक कृतियाँ

अनंत की ओर	500	**श्रीकृष्ण प्रसंग**	175
रहस्यमय सिद्धभूमि तथा सूर्य विज्ञान	250	**शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी**	100
तत्त्वजिज्ञासा	200	**दीक्षा**	90
तत्त्वानुभूति	200	**सनातन-साधना की गुप्तधारा**	120
साधन-पथ	200	**साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग** (भाग 1, 2)	90
भारतीय धर्म साधना	100	**साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग**(भाग 3)	50
क्रम-साधना	70	**साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग** (भाग 4)	30
अखण्ड महायोग	50	**प्रज्ञान तथा क्रमपथ**	90
श्री साधना	50	**योग-तन्त्र साधना**	70
		परातंत्र साधना पथ	40
		ज्ञानगंज	70
		योगिराजाधिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा	150

हिन्दू षड्‌दर्शन	*स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती*	150
जपसूत्रम् (प्रथम व द्वितीय खण्ड)	*स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* प्रति	150
वेद व विज्ञान	*स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती*	200
वेदान्त और आइन्सटीन	*अनिल भटनागर*	100
विज्ञान और वेदान्त	*मान्धाता सिंह*	100
स्तुति नति प्रणति	*नथमल केडिया*	80
अतीन्द्रिय लोक	*गोविंद प्रसाद श्रीवास्तव*	60
योग वासिष्ठ की सात कहानियाँ	*भरत झुनझुनवाला*	60
सौन्दर्यलहरी : तंत्र-दृष्टि और सौन्दर्य-सृष्टि	*प्रभुदयाल मिश्र*	150
कुण्डलिनी शक्तियोग तथा समाधि एवं मोक्ष	*डॉ० दिनेशकुमार अग्रवाल*	80
स्वर से समाधि	*स्वामी कृष्णानन्दजी 'महाराज'*	150
यंत्र-मंत्र रहस्य	*स्वामी कृष्णानन्दजी 'महाराज'*	180
गोरखनाथ : नाथ सम्प्रदाय के परिप्रेक्ष्य में	*डॉ० नागेन्द्रनाथ उपाध्याय*	250
बौद्ध कापालिक साधना और साहित्य	*डॉ० नागेन्द्रनाथ उपाध्याय*	300
गङ्गा : पावन गङ्गा	*डॉ० शुकदेव सिंह*	25
वाग्दोह	*प्रो० कल्याणमल लोढ़ा*	200
बृहत श्लोक संग्रह (सर्वधर्म सार)	*प्रो० कल्याणमल लोढ़ा*	200
सोमतत्त्व	सं० : *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा*	100
गुप्त भारत की खोज	*पाल ब्रंटन*	150
श्रीमद् एकनाथी भागवत	अनुवादक : *ना०वि० सप्रे*	750
हिन्दी ज्ञानेश्वरी	अनुवादक : *ना०वि० सप्रे*	180
कृष्ण का जीवन संगीत (गीता)	*डॉ० गुणवंत शाह*	300
कथा राम कै गूढ़	*डॉ० रामचन्द्र तिवारी*	125
अनंत की ओर	*अशोककुमार*	90
योग और आरोग्य (साधना और सिद्धि)	*डॉ० कपिलदेव द्विवेदी*	300
गोपीगीत (दार्शनिक विवेचन)	*करपात्रीजी महाराज*	300
भ्रमरगीत	*करपात्रीजी महाराज*	90
वक्रेश्वर की भैरवी	*अरुणकुमार शर्मा*	200
तिब्बत की वह रहस्यमयी घाटी	*अरुणकुमार शर्मा*	200
मृतात्माओं से सम्पर्क	*अरुणकुमार शर्मा*	200
वह रहस्यमय कापालिक मठ	*अरुणकुमार शर्मा*	225

विश्वविद्यालय प्रकाशन द्वारा प्रकाशित प्रमुख हिन्दी एवं संस्कृत साहित्य

हिन्दी भाषा एवं साहित्य

निर्गुण रचनावली (छः खण्डों में)	*द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण'*	3000
साहित्य-सुमन (पं० बालकृष्ण भट्ट के रसीले लेखों का संग्रह)		
व भट्टजी की यादें (पं० बालकृष्ण भट्टजी के संस्मरण)		
	पं० बालकृष्ण भट्ट, ब्रजमोहन व्यास, सम्पादक : लक्ष्मीधर मालवीय	350
आलोचक के भेस में (आलोचना)	*उद्भ्रान्त*	350
स्मृतियों के मील-पत्थर (संस्मरण)	*उद्भ्रान्त*	350
अब तो बात फैल गई	*कान्तिकुमार जैन*	250
आलोचना और रचना की उलझनें	*मुद्राराक्षस*	250
हिन्दी का गद्य-साहित्य (नवम् संशोधित संस्करण)	*डॉ० रामचन्द्र तिवारी*	1250
हिन्दी साहित्य का इतिहास	*आचार्य रामचन्द्र शुक्ल,*	450
हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास : प्रथम खण्ड	*डॉ० कुसुम राय*	500
हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास : द्वितीय खण्ड	*डॉ० कुसुम राय*	400
हिन्दी साहित्य का अभिनव इतिहास	*डॉ० वशिष्ठ अनूप*	400
हिन्दी उपन्यास	*डॉ० रामचन्द्र तिवारी*	160
हिन्दी निबंध और निबंधकार	*डॉ० रामचन्द्र तिवारी*	300
आलोचक का दायित्व	*डॉ० रामचन्द्र तिवारी*	250
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	*डॉ० रामचन्द्र तिवारी*	200
भोजपुरी साहित्य के इतिहास (भोजपुरी भाषा में)	*डॉ० अर्जुन तिवारी*	1000
भोजपुरी और हिन्दी	*डॉ० शुकदेव सिंह*	275
भोजपुरी लोकसाहित्य	*डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय*	400
हिन्दी भाषा, व्याकरण और रचना	*डॉ० अर्जुन तिवारी*	160
प्रामाणिक व्याकरण एवं रचना	*डॉ० विजयपाल सिंह*	70
भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र	*पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी*	300
हिन्दी भाषा, साहित्य और नागरी लिपि	*डॉ० कन्हैया सिंह*	60
हिन्दी भाषा और लिपि का ऐतिहासिक विकास	*प्रो० सत्यनारायण त्रिपाठी*	120
कार्यालयीय हिन्दी	*डॉ० विजयपाल सिंह*	60
प्रयोजनमूलक हिन्दी : सिद्धान्त और व्यवहार (परिवर्धित संस्करण)		
(सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग)	*रघुनन्दनप्रसाद शर्मा*	180
काव्यशास्त्र	*डॉ० भगीरथ मिश्र*	400
पाश्चात्य काव्यशास्त्र : इतिहास, सिद्धान्त और वाद	*डॉ० भगीरथ मिश्र*	350
भारतीय काव्यशास्त्र की आचार्य-परम्परा	*डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी*	180
भारतीय व पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिन्दी-आलोचना	*डॉ० रामचन्द्र तिवारी*	250
हंस आत्मकथा अंक	*सम्पादक : प्रेमचंद*	200
मेरा कच्चा चिट्ठा/इलाहाबाद *ब्रजमोहन व्यास,* सं०:	*डॉ० लक्ष्मीधर मालवीय*	300
लाई हयात आए...	*डॉ० लक्ष्मीधर मालवीय*	280
अमर शहीद गणेशशंकर विद्यार्थी	सं० : *पुरुषोत्तमदास मोदी*	400
बनारस के यशस्वी पत्रकार	*बच्चन सिंह एवं डॉ० वशिष्ठ नारायण सिंह*	200
अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद'	सं० : *पुरुषोत्तमदास मोदी*	150
कवि बनारसीदास की आत्मकथा	*ज्ञानचन्द जैन*	80
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : एक व्यक्तित्व चित्र	*ज्ञानचंद जैन*	190
कबीर-वाङ्मय (पाठभेद, टीका तथा समीक्षा सहित)		
प्रथम खण्ड : **रमैनी**	*डॉ० जयदेव सिंह तथा डॉ० वासुदेव सिंह*	150
द्वितीय खण्ड : **सबद**	*डॉ० जयदेव सिंह तथा डॉ० वासुदेव सिंह*	400
तृतीय खण्ड : **साखी**	*डॉ० जयदेव सिंह तथा डॉ० वासुदेव सिंह*	300
कबीर काव्य कोश	*डॉ० वासुदेव सिंह*	450
एक सुबह और मिल जाती (उपन्यास)	*डॉ० बाबूराम त्रिपाठी*	150
एक थी रुचि	*बच्चन सिंह*	150
मिथिलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ	*मिथिलेश्वर*	250
सामलगमला (कहानी-समग्र)	*डॉ० विवेकी राय*	750
खिली हुई धूप में (काव्य-समग्र)	*डॉ० विवेकी राय*	300
एक दलित लड़की की कथा	*बच्चन सिंह*	180
बाबू गुलाबराय के विविध निबन्ध	*विनोद शंकर गुप्त*	150
कोकिल बोल रहा	*युगेश्वर*	80
वाणी का क्षीरसागर	*कुबेरनाथ राय*	120
किरात नदी में चन्द्र-मधु	*कुबेरनाथ राय*	80
पत्र मणिपुतुल के नाम	*कुबेरनाथ राय*	80
जगत तपोवन सो कियो	*डॉ० विवेकी राय*	100
साहित्यकारों के हास्य-व्यंग्य	*डॉ० भवानीलाल भारतीय*	125
घोड़ा पै हौदा, हाथी पर जीन (नाट्यरूपान्तरित कहानियाँ)	*डॉ० भानुशंकर मेहता*	120
अन्नपूर्णानन्द रचनावली	*अन्नपूर्णानन्द*	150
मलिक मुहम्मद जायसी कृत पदुमावती	सम्पा० : *डॉ० कन्हैया सिंह*	500

संस्कृत भाषा, व्याकरण एवं साहित्य

मुद्राराक्षसम्	सं० : *डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी*	150
उत्तररामचरितम्	सं० : *डॉ० रामअवध पाण्डेय, डॉ० रविनाथ मिश्र*	140
अभिज्ञानशाकुन्तलम्	व्याख्याकार : *डॉ० शिवशंकर गुप्त*	90
मेघदूतम् (कालिदास)	सं० : *डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी*	50
कादम्बरी : कथामुखम् (बाणभट्ट विरचितम्)	*डॉ० विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी*	45
कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त)	सं० : *डॉ० देवर्षि सनाढ्य, श्री विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी*	40
दशरूपकम्	*डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी*	150
संस्कृत-शिक्षा (भाग-1 से 5)	*पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी*	प्रत्येक 40
प्रौढ-रचनानुवाद कौमुदी	*पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी*	300
संस्कृत-व्याकरण एवं लघुसिद्धान्तकौमुदी	*पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी*	400
अर्थ विज्ञान और व्याकरण दर्शन	*पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी*	400
पिंगल कृत छन्दः सूत्रम् (वैदिक गणितीय अनुप्रयोगों सहित)	*पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी, डॉ० श्यामलाल सिंह*	500
रसों की संख्या	*प्रो० वी० राघवन्,* अनुवाद : *अभिराज डॉ० राजेन्द्र मिश्र*	200
संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास	*डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी*	500
संस्कृत का अर्वाचीन समीक्षात्मक काव्यशास्त्र	*प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र*	400
अभिनव रस सिद्धान्त	*डॉ० दशरथ द्विवेदी*	60
वक्रोक्तिजीवितम्	सं० : *डॉ० दशरथ द्विवेदी*	150
रसाभिव्यक्ति	*डॉ० दशरथ द्विवेदी*	150
दशरूपकम्	सं० : *डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी*	150
ध्वन्यालोकः (दीपशिखा टीका सहित)	*आचार्य चण्डिकाप्रसाद शुक्ल*	200
संस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन	*डॉ० भोलाशंकर व्यास*	300
वैदिक साहित्य एवं संस्कृति	*पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी*	250
वेदचयनम्	*विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी*	70
ऋङ्मणिमाला/ ऋग्वेदभाष्यभूमिका	*डॉ० हरिदत्त शास्त्री*	80/50
वेद व विज्ञान	*स्वामी प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती*	200
वेदान्त और आइन्सटीन	*अनिल भटनागर*	100
विज्ञान और वेदान्त	*मान्धाता सिंह*	100
पालि-प्राकृत-अपभ्रंश-संग्रह	*डॉ० रामअवध पाण्डेय, डॉ० रविनाथ मिश्र*	100

सम्पूर्ण विस्तृत सूची-पत्र के लिए लिखें।

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

वैदिक युग एवं रामायणकाल की ऐतिहासिकता : सम्पादक : सरोजबाला, अशोक भटनागर, कुलभूषण मिश्र; प्रकाशक : वेदों पर वैज्ञानिक शोध-संस्थान (आई-सर्व) C-II/107, सत्यमार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली-110021; मूल्य : 150/- रु० मात्र।

वेदों पर वैज्ञानिक शोध-संस्थान (आई-सर्व) की दिल्ली-शाखा द्वारा आयोजित राष्ट्रीय-संगोष्ठी का संक्षिप्त विवरण इस पुस्तिका में प्रकाशित है। संगोष्ठी के विषय '2000 वर्ष ई०पू० से पहले की प्राचीन घटनाओं का वैज्ञानिक तिथि-निर्धारण' पर प्लैनेटोरियम साफ्टवेअर के उपयोग द्वारा प्राचीन संस्कृत पांडुलिपियों के सन्दर्भों का खगोलीय समय-निर्धारण करते हुए पुरातत्व, भू-विज्ञान, मानव विज्ञान, पुरावनस्पति विज्ञान, समुद्र-विज्ञान के समन्वयन द्वारा परिस्थितिकीय अध्ययन एवं तत्सम्बन्धी उपग्रह-चित्रों से परस्पर सम्बन्ध प्रस्तुत किया गया है। भारतीय इतिहास की प्राचीनता को नकारने वालों के लिये पुस्तिका में दिये गये विवरण एक चुनौती हैं।

श्रीराम के युग का तिथि-निर्धारण : सम्पादक : पुष्कर भटनागर, मूल्य : 400/- रु० मात्र।

इस क्रम में पूर्वोक्त शोध-संस्थान द्वारा प्रकाशित यह दूसरी पुस्तक है। शोधकर्ता स्व० पुष्कर भटनागर की अंग्रेजी पुस्तक 'डेटिंग द एरा ऑफ लार्ड राम' का हिन्दी अनुवाद डॉ० कृष्णानन्द सिनहा द्वारा किया गया है। श्री राम के जीवनकाल से सम्बद्ध घटनाओं की तिथियों का संधान करने में शोधकर्ता ने काफी श्रम किया है और वैज्ञानिक आधार पर जन-जन की आस्था के केन्द्र श्रीराम की ऐतिहासिकता सिद्ध की है। अपने इस महत् प्रयास के लिये साफ्टवेअर का प्रयोग करते हुए इतिहास, पुराण, पुरातत्व, साहित्य आदि सभी उपलब्ध सन्दर्भ-स्रोत का उपयोग किया है। प्रस्तुत शोध की स्थापनाएँ विचारणीय हैं।

उदयास्त : (काव्य-संग्रह) अशोक तिवारी, प्रकाशक : राहुल प्रकाशन, सी-74 साईंधाम टेनामेंट वस्त्राल रोड, अहमदाबाद-382418, संस्करण प्रथम, मूल्य : 160/- रु० मात्र।

जीवन के संधिकाल पर खड़े कवि की अनुभूतियों का अंकन हैं इस संग्रह की कविताएँ। संधि-बिन्दु पर उदय और अस्त का समांतर बिम्ब-समायोजन गहन-अनुभव के बिना सम्भव नहीं। भौतिक जीवन की उपलब्धियों, रिक्तियों के बीच 'स्व' से 'सर्वात्म' को अभिव्यक्त करती हैं 'उदयास्त' की कविताएँ—

''तुम भले ही रात भर आँखे चुराओ लाख अपनी/मैं स्वयं जलकर तुम्हारी चौकसी करता रहूँगा।''

सुधियों की सुगन्ध : (काव्य-संग्रह) प्रो० मालती दूबे, प्रकाशक : ज्ञान प्रकाशन, 128/90 स ब्लॉक, किदवई नगर, कानपुर-208011, संस्करण प्रथम, मूल्य : 150/- रु० मात्र।

महात्मा गाँधी द्वारा स्थापित गुजरात विद्यापीठ की आचार्या प्रो० मालती दूबे का कवि-मन गाँधी-संस्कारों से ओत-प्रोत है। उनकी काव्याभिव्यक्ति सहज, सरल, सुसंस्कारित है। कवियित्री ने जीवन के विविध आयामों की अनुभव-गत स्मृतियों की सुगन्ध बिखेरने का प्रयत्न किया है। इसमें पीड़ा भी है, विद्रोह भी है, मानसिक उद्वेलन भी है और है एक सहज शान्ति।

''जीवन के शब्दकोश में/चैन है, सुख है/शब्द व लय है/हार और जीत है/अनुभवों के धरातल पर सिमटा हुआ मौन है।''

तुम्हारी खुशी के लिए : (कहानी-संग्रह) रमेश मनोहरा, प्रकाशक : कंचन प्रकाशन, 1/20, नई दिल्ली-110030, संस्करण प्रथम, मूल्य : 160/- रु० मात्र।

इस संग्रह की अधिकांश कहानियाँ नारी-विमर्श के बीच नारी-लेखिकाओं से अलग एक पुरुष कथाकार द्वारा समाज के प्रत्येक वर्ग में नारी के उत्पीड़न, उसकी वेदना और संघर्ष का संवेदनपूर्ण चित्रण है। भाषा, शिल्प और कथ्य में सहजता, सरलता के साथ गहन-चिंतन भी है जो कथा को एक नये अर्थ में संपृक्त करता है।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 14-15 **अंक : 6-12, 1-2**

जून-दिसम्बर 2013—जनवरी-फरवरी 2014

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 60.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2012-14

RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. Stock/RNP/vsi E/001/2012-2014

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

पो०बॉक्स 1149, विशालाक्षी भवन (भूगर्भ तल),
चौक (चौक पुलिस स्टेशन से संलग्न)
वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

P.O. Box : 1149, Vishalakshi Building (Basement),
Chowk (Adjacent to Chowk Police Station),
VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082 • Mobile : (0) 9198701115

E-mail : **sales@vvpbooks.com ▪ vvpbooks@gmail.com**

Website : **www.vvpbooks.com**